# लोक विधा

अजय़ शेखर



सस्कृति निदेशालय, उत्तर प्रदेश

# सर्वेक्षण एवं अध्ययन–विवरण

भोजपुरी भाषी क्षेत्र के अन्तर्गत–

लोक सगीत

लोक वाद्य

लोक नाटय

लोक नृत्य

तथा

मेले एव त्यौहार

**अजय शेखर**

राबर्ट्सगज सोनभद्र (उ प्र)

# भोजपुरी भाषी क्षेत्र के जनपद

1 बस्ती
2 सिद्धार्थनगर
3 गोरखपुर
4 महाराजगज
5 दवरिया
6 पडरौना
7 बलिया
8 गाजीपुर
9 आजमगढ
10 मऊ
11 वाराणसी
12 भदोही
13 जौनपुर (केवल जौनपुर तहसील का पूर्वी भाग एव कराकत तहसील)
14 मीरजापुर (केवल चुनार तहसील)
15 सोनभद्र (केवल राबर्टगज तहसील का पूर्वी एव दक्षिणी भाग तथा दुद्धी तहसील)

भाषा की दृष्टि से उत्तर प्रदेश मे बस्ती सिद्धार्थनगर गोरखपुर महाराजगज देवरिया पडरोना बलिया गाजीपुर आजमगढ मऊ वाराणसी एव भदोही जनपदो तथा जोनपुर जनपद मे जोनपुर तहसील का पूर्वी भाग एव केराकत तहसील तथा मीरजापुर जनपद की चुनार तहसील एव सोनभद्र जनपद की रावर्टसगज तहसील का पूर्वी एव दक्षिणी भाग तथा दुद्धी तहसील का क्षेत्र भोजपुरी भाषी क्षेत्र हे।

उपरोक्त क्षेत्रो की सीमा मे भोजपुरी बोली जाती हे। अत उपरोक्त जनपदो एव तहसीलो की उल्लिखित सीमा को आधार मानकर सम्मिलित रू प से सगीत वादया नाटयो नृत्यो तथा मेले एव त्योहारो का उल्लेख किया गया है। चूकि मेले अलग–अलग स्थानो पर लगते हे। अत कुछ प्रचलित एव प्रमुख मेलो का उल्लेख जनपदीय आधार पर अलग–अलग किया गया है। जिन–जिन नाटयो एव नृत्यो का प्रचलन विशेष जनपदो मे हे उसका उल्लेख हे। जहा तक लोक सगीत का प्रश्न है पूरे भोजपुरी भाषी क्षेत्रो मे समानता है। अत गीतो का उदाहरण अलग–अलग जनपदीय आधार पर न देकर सम्मिलित रू प से भोजपुरी भाषी क्षेत्रो मे से दिया गया है।

उक्त सन्दर्भ मे जो विशेषताए जिन स्थानो पर मिली हैं उनका उल्लेख है।

(अजय शेखर)
रावर्टसगज सोनभद्र
उत्तर प्रदेश।

# विषय–सूची

# लोक सगीत

सम्पूर्ण सृष्टि मे लय (Rythm) का बाध स्पष्ट रूप स झलकता ह। नदिया झरना के निनादा पक्षियो की चहचहाहटे शिशुओ की किलकारियो तथा हवाआ की सनसनाहटो की ध्वनिया मे लयात्मकता परिलक्षित होती ह प्रकृति की इस सहज प्रक्रिया के अन्तगत गूजती इन ध्वनिया की लयात्मकता ही सगीत का आधार ह।

श्री अर्नेस्ट हट (H Ernest Hunt) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक स्पिरिट आफ मयूजिक म लिखा ह कि –

सगीत केवल सामान्य ध्वनि नही हे अपितु यह सूक्ष्म अन्तवृत्तिया क उत्थान का सबल साधन ह।

भारतीय मनीषिया न सगीत का अनादि माना ह तथा नादवद की सज्ञा दी ह। सामवद म यज्ञीय कर्मो मे होता अध्वयु आदि द्वारा ऋचाआ क समवेत स्वरा म गान करने की पुष्टि हाती ह। इस प्रकार सगीत समवत स्वरो का गान अथवा सह या सामूहिक गान सिद्ध होता ह।

सगीत रत्नाकर मे आचाय शाडगदेव न गीत वाद्य तथा नृत त्रय सगीत मुच्यत कहा ह। अथात सगीत गीत वाद्य आर नृत्य तीनो का समुच्चय ह। सगीत अभिव्यक्ति का जन्मजात साधन हे इसलिए सगीत को (Universal Language) सावभामिक भाषा कहा गया हे।

**सामगान को निम्नलिखित चार भागो मे विभक्त किया गया ह**

१ वयगान
२ आख्य गान
३ ऊहगान
४ उह्य गान

वेयगान ही ग्राम गान ह ओर यही ग्राम गान लाक सगीत क आधार स्तम्भ हे। लोक सगीत का आधार लय ह। स्वरा की तन्मयता ही लय का सृजन करती हे। सुख–दुख आशा–निराशा उत्साह ओर उल्लास तथा उमग के क्षणा म स्वत स्फुटित गूज लोक सगीत का रूप धारण करती ह। भावनाआ की सहज आर सरल अभिव्यक्ति लोक सगीत की पृष्ठभूमि हे। लोक सगीतकार किसी शास्त्रीय विधि–विधान की सीमा मे नही बधता। सहजता ही उनके गायन का मुख्य आधार होती ह। लाक सगीत लोक रजन भी हे ओर लोक सस्कृति का सरक्षक भी। लाक सगीत की परिधि व्यापक हे। वह अपनी परिधि म लोक की समस्त सवेदनाआ को समेटे रहता हे। डा हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा हे कि ग्राम गीत इस सभ्यता के वद (श्रुति) हे।

सगीत की उत्पत्ति जन्म के साथ होती ह। अत सगीत का जीवन से अलग नही किया जा सकता ओर यही कारण हे कि लोक सगीत के झकृत स्वरो का स्पदन लोक–हृदय तन्त्री के तारो का स्पदन बन जाता है।

लोक जीवन म सगीत पूणरूपण व्याप्त हे तथा जीवन की हर महत्वपूण घडी मे सहचर की तरह सगीत की उपस्थिति रहती हे। हमारे समस्त मागलिक कार्यो पर्वो तथा आशा- निराशा सुख और दु ख के क्षणो मे सगीत हमारी प्रेरणा का आधार बनता ह तथा वातावरण का सुरभित करता ह।

जीवन को महत्वपूर्ण घटनाओ समयानुकूल परिस्थितिया को दृष्टि मे रखते हुए लोकगीतो का विभाजन कइ विद्वाना द्वारा किया गया हे। प राम नरेश त्रिपाठी न लोक गीतो का निम्न प्रकार से विभाजन किया है।

१ सस्कारा के गीत
२ चक्की–चरखे के गीत
३ धम गीत
४ ऋतु सम्बन्धी गीत
५ कृषि सम्बन्धी गीत
६ भिखमगो के गीत
, मेले के गीत
८ जातिया के गीत
६ वीर गाथा के गीत
१० गीत कथा के गीत
११ अनुभव के वचन

**डा कृष्ण देव उपाध्याय ने लोक गीतो का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया है**

सस्कार गीत ऋतु सम्बन्धी गीत व्रतो तथा दवी–देवताओ स सम्बधित गीत विभिन्न प्रकार की जातियो के गीत श्रम गीत तथा विविध गीत।

लोक गीतो के उपरोक्त विभाजन का उल्लेख यहॉ पर करने का उद्दश्य लाक मे लोक गीतो की सत्ता को प्रमाणित करना ही ह। इस विभाजन से स्पष्ट होता हे कि लोक जीवन की सभी महत्वपूर्ण स्थितियो प्रवृतियो तथा अनुभूतियो क लोक गीत साक्ष्य हे। जो न जाने कब से लोक की सास्कतिक आध्यात्मिक तथा ऐतिहासिक विरासत को सजोए गूज रहे हे तथा जीवन की जटिलताओ की सहज एव सरल अभिव्यक्ति कर रहे है। लोकगीत मोखिक परम्पराओ एव स्मृति के सहारे ही अब तक लोक मे सुरक्षित ह। लोकगीत लोक भाषा मे लोक द्वारा लोक की सहज एव सरल अभिव्यक्ति हे। लोकगीतो मे लोक सस्कृति परिलक्षित होती ह।

सगीत अर्थात सम्यक गीतम इति सगीतम के आधार पर जो भली प्रकार से गाया जाय वह सगीत हे। आचार्य शार्डगदेव की परिभाषा गीत वाद्य तथा नृत त्रय सगीत मुच्यते पर हम दृष्टि डाले तो लोक गायक सगीत की कसोटी पर खरा उतरता ह। साथ ही लोक धुना मे लयबद्धता होती है तथा स्वर समयानुकूल होते है। लोक गायक की तन्मयता एव लयात्मकता तथा सहजता ही मधुरता का सचार करती है। जिसके कारण लोक सगीत लोक पटल पर अकित होता चला जाता ह।

व्यक्तित्व के निमाण म सस्कारो की महत्वपूर्ण भूमिका होती हे। हमारे धम शास्त्रो मे सोलह सस्कारो का

उल्लख किया ग ह। जिनमे जन्म मुण्डन उपनयन विव ह न आ महत्वपूर्ण सस्कार हे।

यही क र ह कि जन्म के समय प्रसन्नता का यक्त करने क लिए जा ीत की लोक विधा हे उस साहर कहत हे।

बहू के ट म दर्द हुआ हे पुत्र रत्न की प्राप्ति होन वाली हे बहू अपनि सास ससुर का बुलान के लिए कहती ह –

**सासू ससुरू के देतिउ बलाइ**
**सोरहिया एक सकल्पउ**

भोजपुरी अचल म प्रबल धार्मिक आस्था क कारण कुशलता के लिए मनाती सकल्प आदि महिलाय करती हे ससुर कहता ह -

**छन एक बेदना नेवरतू**
**बाबुल भुइया लोटत**
**हमही कुल लुटइवय हा**

अर्थात एक क्षण की वदना को दूर होन दो पुत्र का जन्म लन दा म सब (प्रसन्नता म) लुटाऊँगा।

शिशु के जन्म लेने पर प्रसन्नता की लहर व्याप्त हो जाती ह आर घर म महिलाये एकत्र होकर बेठ जाती हे ओर प्रारम्भ हा जाता हे सोहर।

**बाजत आवे दस बाजन दुअरे केतिक नाचय हो।**
**अब नाचत आवेलय ननदिया त बीरन के अगने**
**बाबा मोरे दिहले भइसिया नारगिया दूना दूध चूये हो।**

कवन के स्थान पर गाते समय सम्बन्धित व्यक्ति का नाम लकर गाया जाता हे।

**मोरे भइया देलेन चढल घोडवा चढ चले साजन हो।**
**पूछय लागन अटइन बटइन सहरिया के लोग**
**कहॉ हो पउलू तूॅं इतना**
**बावा हो कवन राम के नाती भइले भइया के वश जागल हो।**
**मोरे भउजी के गोदियॉ ललनवा उहॉ रे हम पउली इतना।**
**बाजत आवे दस बाजन दुअरे केतिक नाचय हो।**

जन्म से ही लाक जीवन मे सगीत की सत्ता का आभास हान लगता ह। हमारे जितने भी सस्कार ह सगीत के बिना अपूर्ण ह। जनेऊ विवाह आदि सभी सस्कारो मे सगीत की ध्वनि गूजती रहती हे। सगीत का स्वर न केवल आनन्द की वषा करता ह अपितु सस्कृति अध्यात्म तथा सासारिक जीवन के यथार्थ की ओर भी इगित करता ह। इस सम्वन्ध म एक सोहर का उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ। मेरे अनुराध पर सोहर सुनाते हुए गायक

श्री गजेन्द्र नाथ शुक्ल ने मुझे सुनाया था। सोहर की मार्मिकता अन्तरमन का छू लेती है। सोहर मे हिरनी उदास है। हिरन हिरनी से उदासी का कारण पूँछता हे। हिरनी कारण बताती ह कि आज राजा के घर छठी हे। तुम्हे मार डालेगे इसलिए उदास हूँ। हिरन मार दिया जाता ह। हिरनी राजा के घर जाती हे। रानी कोशिल्या मचिया (आसन) पर बेठी हे आर हिरनी कहती हे कि हिरन का मास तो कराही मे बन रहा हे। उसकी चमडी मुझे दे दे। रानी कौशिल्या चमडी देने से इन्कार करती हुई कहती ह कि हिरिनी तुम अपने घर जाओ तुम्हे चमडी नही दूँगी। इससे खँझडी बनवाऊँगी ओर मेरे राम खेलेगे।

**छापक पेड छिहुलिया**
**त पतवन गहबर हो**
**ललना तेही तरे ठाढि**
**हरिनिया त मन अति अनमनि हो**
**धरतय चरन हरिनवा**
**त हरिनी से पूछइ लागल हो**
**हरिनी किया तोर चरहा झुरान**
**कि पानी बिन मुरझव हो**
**नाही मोर चरहा झुरान न पानी बिन मुरझव हो**
**हरिना आजु राजा जी क छठी तुम्हहि मार डरियो हो**
**मचिययि बैठलि कौशिल्या रानी**
**हरिनी अरज करय हो**
**रानी मसुआ त सीझइ करहिया**
**खलडिया हमइ देतिउ हो**
**जाहु हरिनी घर अपने खलडिया नाही देबय हो**
**हरिनी खलडी क खजडी मढइबे**
**त राम मोर खेलिहय हो।।**

**पवित्र यज्ञ मन्त्रो की ध्वनियो एव मगल गीतो की आशीष वर्षा करता आता है मुण्डन सस्कार**

**सोने क खरउआ राजा दशरथ केकयी महल गइनऽ**
**रानी राम के होलय मुडनियॉ चलऽ यज्ञ देखइ मगल**
**तुँहु गावऽ**

**जाहुँ राजा घर आपन हम नाही जाबय अपने भरत क करबय मुडनियॉ**
**घरही जज्ञ देखब मगल हम गाइब**
**सोने क खरउवा राजा रामचन्द्र कैकई महल गइनऽ**
**माता हमरय होलय मुडनिया चलहु जज्ञ देखऽ**
**मगल तुँहु गावऽ**

बक्सा से कढनी पिताम्बर राम गोहने लागय
मगल वहि गावय जगिया करावय ।

मुण्डन के बाद आता है उपनयन सस्कार ओर गीत मुखरित हो उठते ह

गगा आरे  पारे बीचे बरूआ पुकारला हो
भेजि देहूँ  बाबा हो नवइदल
बरूआ चलि आवहु  हो
भीजेला लोटी अ धोती भीज कान्हे क जनेउवा हो
एतना बरन मोर भीजे कइसे आवहुँ पवरिदह हो।

लाक जीवन का सभी काय व्यापार  सगीत म डूबा रहता ह। विवाह सस्कार का अवसर आता ह। घर ऑगन गीत की गूज से भर उठता ह–

राम त चललेन व्याहन रूनझुन बाजत
अब रेखिया खबरिया जनावत  कहॉ हो दल उतरी।
ऊँच नगर पूर पाटन आले बासे झावन
आवे आवे सूर बराती उहीं दल उतरी।
जहुँ म जानित ये दुलहे व्याहन अइबा
दुलहे सोने के अगूठी बनवायित तोहे पहिनायित।
जहुँ मे जानित ये सासू परिछन के अइबा
सासू  मोतियन के खोइछा भरायित।

दरवाजे पर बारात पहुँचती हे। ढोलक की थाप पर  हान वाल रिश्ते क बीच  मधुरता  छा जाती ह ओर हँसी मजाक प्रारम्भ हो जाता हे–

शादी बरात समधी ब्याहन आये
हॉ जी  लोगवा करत बडाई
हॉ जी  पतुरी  पुरातन कहॉ से पाई
जामा फटहा  घोडा कटहा
गजब बरात ले आयी
गेस फुटहा  बरतिया  सरवा सुतहा
हॉ जी  सीता राम से बनी।

समधी बारात लेकर ब्याह करने आ गये  सभी ओर प्रसन्नता व्याप्त हे। यह नाचने वाली बुढिया कहॉ से पाए। वर का जामा (विवाह के समय पहना जाने वाला विशेष वस्त्र) फटा हे  घोडा काटने को मुह फलाता हे। यह गजब की बारात आयी हे। गैस हे तो फूटी हुई आर बाराती जो  आये है (मजाक मे सम्बोधन होने वाला शब्द  सरवा  जिसका  अर्थ साला होता है तथा लोक मे प्रचलित गाली भी हे  सरवा  साने वाले है।

(उपरोक्त गीत लोक नर्तक एव गायक श्री बाबुनन्दन जी (गाजीपुर) ने मुझे सुनाया था ) गीतो का स्वर वातावरण मे तेरता रहता हे–

**मालिन सूतल मलिया जगावय उठ मालिन भइल भिनुसार**
**परदा उघारी जब देखै मालिन धेरिया दुअरे सुन्दर बर ठाढ**
**कवन जरूरत तोहे लागल वर सुन्दर अइलऽ बडै भिनुसार**
**आजा हो कौन राम लगन रचवलेन अइली बडे भिनुसार।**
**मउरा क जरूरत हमे लागल मालिन धेरिया अइली बडी भिनुसार।**
**अस कहि मउरा उरेहा मालिन धेरिया चारि चिरइया दूनो मोर।**
**विहसति आवै चारि चिरइया पिहॅकत आवै दुनो मोर**
**सब कोई निरेखेला अरती बरतिया सासू निरेखै दमाद।**
**एतनी सूरतिया क दुलहे कवनराम काहे विधि रहल कुऑर**
**किया दूलहे हो मलिया क जनमल किया तोहे गढले सोनार।**
**नाहीं सासू मलिया क जनमल नाहीं हमे गढले सोनार**
**जनम करम हमे माई बाबा दिहले सूरति लिखन भगवान।**
**रउरी बिटिअवा सासू मलिया क जनमल रउरी लगे लगवार**
**अइसने तपेसिया के धिया न बिअहबे देला बरोबरी जबाब**

कौन राम क स्थान पर गीत गाते समय सम्बन्धित व्यक्ति का नाम लिया जाता हे कितनी गाहक अभिव्यक्ति हे यह गीत की मधुरता मन को मुग्ध कर देती हे।

जीवन का चाहे जो उत्सव हो या पर्व गीत मुखरित हाते हे आर हमारे जितने भी सस्कार हे उनक लिए अलग–अलग गीतो का अपार भण्डार ह जो लाक सगीत मे झकृत होता रहता ह।

जन्म मुण्डन उपनयन विवाह आदि सभी सस्कारो के अवसरो पर अलग–अलग गीत गाए जाते हे। विवाह के अवसर पर तिलक के समय नहाने के समय द्वारचार क समय कन्यादान क समय कोहबर जात समय खिचडी खाते समय समधी के भात के समय मिलनी क समय परछन क समय हर रस्मो के लिए अलग–अलग प्रकार के गीतो को गाया जाता हे उदाहरण के लिए चूमत समय

**साठी क चउरा रेहालरि दूबि हो**
**चुमइ चलनी ओनही राम क धेरिया**
**मथवा चूमि चूमि दिहलेनि असीस हो**
**जियहो कवन दूलहे लाख बरीस हो**

**कन्या दान के असवर पर गाये जाने वाले गीत की मार्मिकता झलक उठती हे**

**कापइ थारी हो कापइ लोटा**
**कापइ कुसेन कर दान**

मडुये मे कापन ऽ बेटी क बाबा
देनऽ कुवारी क दान

इसी प्रकार भावर के समय

पहिली भवरिया के धूमत बाबा बिटिया तोहार हई हो
दुसरी भवरिया के घूमत चच्चा बिटिया तोहार हई हो
\ \ \
सतही भवरिया के घूमत बाबा बिटिया तोहार हई हो

परछन करते समय

पहिले मै परिछउँ माथे के मउरवा
दूजे परिछब तिलक लिलार

विदाई के अवसर पर तो ऑखे छलछला उठती ह

चुटकी भर सेनुरवा मॅहग भइले बाबा
चुनरी भइल अनमोल
चुटकी भर सेनुरवा के कारन बाबा
छुटेला नगरिया तोहार
\ \ \
बान्हल बान ऽ सोने क लेडुआ अवटल बानऽ दुधवा होके
पिउ न मोरे बेटी जाबू बडी दूर हो।

प्रत्येक मागलिक कार्यो के लिए अलग–अलग गीतो की परम्परा हे। लोक जीवन मे कोइ पर्व व्रत ऐसा नही हे जिस पर गीत गाने की परम्परा न हो। चाहे नहान हा वाह देव दर्शन चाहे मले हो चाहे देवी पूजन सभी अवसरो के लिए गीत हे।

इसी प्रकार रोपनी के समय जाता पिसते समय पालकी ढोते समय सभी अवसरो के लिए अलग–अलग प्रकार के गीत हे जो गाये जाते ह। भिन्न–भिन्न जातियो क अलग–अलग गीत प्रचलित है। ये सभी गीत लोक सगीत के अभिन्न अग ह। लोक जीवन का कोई भी क्षेत्र सगीत स अछूता नही ह। लोक जीवन की सम्पूण प्रवृत्तियो एव अनुभूतियो की अभिव्यक्ति इन लाक गीतो म है। जा लोक सगीत की धरोहर ह।

कभी–कभी अन्तर मन की कसक फूट पडती ह ओर वदना का स्वर गूँज उठता हे। एक युवती अपने ससुराल मे जॉता पर ऑटा पीस रही ह ओर उसकी व्यथा गीत म छलछला उठती ह–

हे राम पिउ मोरे गइले बिदेसवा
सकल दुखवा देयि गइले हो राम
हे राम सासु ननदिया बिरही बोलैली
केकर कमाई तू खइबू हो राम

हमारे व्रत तीज त्योहार सभी सगीतमय हे। लोक जीवन की आस्था आराधना सब की अभिव्यक्ति सगीत के स्वरो मे होती हे–

दग्री को अढउल का फूल चढाया" जाता ह। निम्न पक्तिया देवी के प्रति लोक आस्था की अभिव्यक्ति करती ह –

**कवन फूल फूले ला लहलहाई**
**कवन फूल रथ साजे हो**
**ऐ मइया कवन फुलवा रहे लहलहाई**
**से राऊर बाट खोजे हो**
**बेला फूल फूले लहलहाई**
**चमेली फूल रथ साजे हो**
**ए मइया अढउल फूल लहलहाई**
**से राउर बाट खोजे हो।**

इसी प्रकार पग–पग पर भाजपुरी भाषी क्षेत्र मे सगीत के स्वर फूटते रहते ह। लोक सगीत की गूज फाग (फगुआ) चेता ऋतु–गीत (बारह मासा) कजली लोरिकी बिरहा की विधाआ मे लोक–मानस मे भरी हे।

**प्रचलित लोक सगीत की गीत विधा का उल्लेख**

## फगुआ/होली

होली – हिन्दुओ का प्रमुख पव ह। बसन्त के आगमन से ही फगुआ का रग लोक मानस पर छा जाता हे और फगुआ गीत–प्रारम्भ हो जाता ह। लोक मानस अपने आराध्य राम–कृष्ण को अपने से अलग नही कर पाता तभी तो लोक गायक के कण्ठ स फूट पडता हे–

**होली खेलयॅ रघुबीरा अवध मे**
**होली खेलयॅ रघुबीरा**
**केकरे हाथे कनक पिचकारी**
**केकरे हाथे मजीरा**
**होली खेलयॅ रघुबीरा अवध मे**
**होली खेलयॅ रघुबीरा**
**राम के हाथे कनक पिचकारी**
**लक्षिमन के हाथे मजीरा**
**होली खेलयॅ रघुबीरा अवध मे**
**होली खेलयॅ रघुबीरा**

२ मत रोकहु बाट हमारी
छैल बनवारी
होत अबेर दूर मोहि जाना
जमुना आने वाली
जमुना आने वाली सॅवरिया
अरि देइ के केवडिया
सोयि गयि गोरिया
नहि भावत चाल तिहारी
छैल बनवारी।

३ आई गइलै फगुनवा फेर मितवा
होधूम मचल बा गलियन मे।
आइल बसन्त ऋतु फुलवा फुलाइल
भनन भनन कइ भॅवरा लुभाइल
होड लगल बा कलियन मे
हो धूम मचल बा गलियन मे।
बहे पुरवइया कवन रस घोले
पीपर पात नियर मन डोले
कूके कोयलिया बगियन मे
हो धूम मचल बा गलियन मे।
लिख लिख पाती पठावऽसनेसवा
तोहरे बिना सहे जियरा कलेसवा
निदिया ना आवै पलकियन मे
हो धूम मचल बा गलियन मे।

होली के मोसम मे सारा वातावरण रसमय हो जाता हे तभी तो यह कहावत लोक जीवन मे प्रचलित है कि–

फागुन मे बाबा देवर लागै

छोटे–बडे सभी रस–विभोर हो झूम उठते हे ओर लोक कण्ठ से फागुन के गीत निकल वातावरण मे मादकता बिखेरने लगते हे। गायक फाल्गुन के गीतो मे मन की सारी बाते उडेल देते हें कुछ भी छुपा नही पाते। कबीर गाते समय तो गालियॅा भी गीता के परिधान पहन कर आ जाती ह। एक भी गाव गली तो नही बचती जहॉ फागुन की मस्ती की घटा न छाई हो। फागुन मे लोकजीवन रसमय हो उठता हे। ढोल–मजीरो की थापो पर गीत फागुन के वातावरण मे मादकता का सचरण कर सुरभि भर देते हे।

## आल्हा

भोजपुरी भाषी क्षेत्र के अन्तगत आल्हा–गायन पहल बहुत ही प्रचलित था। यद्यपि समय के साथ–साथ इस क्षेत्र मे आल्हा–गायन मे कमी आई ह फिर भी आल्हा–गान का स्वर कभी–कभी मुखरित हो उठता ह।

अनेक विद्वानो की राय मे परमाल रासो ही आल्ह खण्ड हे। आचार्य प्रवर पण्डित रामचन्द्र शुक्ल ने अपनी पुस्तक हिन्दी साहित्य का इतिहास मे परमाल रासो की चर्चा की हे किन्तु परमाल रासो उपलब्ध नही हे।

विद्वानो का मत हे कि कलिजर के चन्देल राजा परिभर्द देव सन ११७३ जिन्हे परमाल भी कहा जाता हे के दरबारी कवि जगनिक ने आल्ह खण्ड की रचना की हे।

आल्ह खण्ड की रचनाएँ लोक कण्ठ मे जाकर आल्हा के रूप मे प्रचलित हुई। आल्हा गायको के गायन मे भिन्नता मिलती ह।

आल्हा–गायको द्वारा गाये जाने वाली आल्हा की रचनाओ के अनुसार देवला ओर तिलका कलिजर के राजा परमाल की पत्नी मल्हना की सगी बहने थी। देवला ओर तिलका का विवाह दो सगे भाइयो जासर ओर सोढर से हुआ था तथा मल्हना स ब्रह्मा देवला से आल्हा ओर ऊदल तथा तिलका से मलखान एव सुलखान का जन्म हुआ था।

लोक गाथा आल्ह खण्ड मे बावन किलो के युद्धो का वर्णन है। आल्ह खण्ड का नायक आल्हा ह। आल्ह खण्ड मे आल्हा ओर ऊदल की शोय गाथा हे। आल्ह खण्ड का वणन जिन छन्दो मे किया गया हे उन छन्दो का नाम भी आल्हा पडा। यह आल्हा की लोकप्रियता का सबस बडा प्रमाण हे। आल्हा गायन मे इतनी अधिक भिन्नता हे कि प्रत्येक गायक अलग–अलग ढग से आल्हा का वर्णन करता हे। पर आल्हा और ऊदल के रणकौशल का वर्णन सभी करत है। आल्हा–लोक–गायन मे आल्हा आदर्श नायक परम देवी भक्त तथा परमवीर और अमर है।

आल्हा वीररस से ओतप्रोत गाथा हे। आल्हा गायक जब तन्यमयता के साथ आल्हा गायन करते ह तो श्रोताओ के रग–रग मे ओज का सचार होने लगता हे – आल्हा की कुछ पक्तिया प्रस्तुत है –

**बारह बरिस लौ कुकूर जीयै**
**और तेरह लौ जिए सियार**
**बरिस अटटारह क्षत्रिय जीये**
**आगे जीवन को धिक्कार**
X X X
**नवमन तेगा नव मण्डल के**
**साढे असी मने के सान**
**जा दिन चमके जरा सिन्धु मे**
**क्षत्रिय छोड भगे हथियार**
X X X

डाकि बछेडा पर चढि वठा
आ डोरी को दिया उठाय
फर फर फर फर बिगुला उडिगा
जसि पिजरे से बाज उडि जाय
निचवा छोडि दियेस भुइ धरती
उपरा छोडि दियेस आकास
नील बदरिया के अगना मे
बेनुल बुडय और उतिराय

श्री जगदीश चन्द मिश्र ने आल्ह खण्ड के शस्त्रास्त्र शीषक अपने लख म आल्ह खण्ड के हथियारो क वणन मे आल्हा गायन की निम्न पक्तियो का उल्लेख किया ह।

खट खट खट खट तेगा बोले
बोलय छपक छपक तलवार
सनन सनन सन गोला छूटे
भनन भनन भन झूटे बान
गोली चल गय बन्दूकन के
छुरा चला विलायत क्यार
तोपिया चल गय अष्ट धातु के
जे नव नव मन गोला खाय

## चैता

डा कृष्ण देव उपाध्याय ने लिखा हे कि लोक गीतो मे जितने भी प्रकार हे उनमे मधुरता कोमलता ओर सरलता मे चेता अपना सानी नही रखता। यूँ तो यह चेत मास का गीत हे पर फागुन से ही प्रारम्भ हो जाता हे। लोक जीवन मे इसका इतना अधिक प्रभाव हे कि चैत या फागुन महीने मे जहा भी गायन होता रहता हे श्रोता गायक मण्डली स चैता सुनाने की माग कर बेठते हे।

प्राय चैता गीत का विषय पति पत्नी प्रेम होता है।

एही ठैया झुलनी हेराय गइले रामा
कहवा मै ढूढू।
कोठवा मे ढूढली अटरिया मे ढूढली
पूछ आई पिया की सेजरिया हो रामा
कहवा मै ढूढू।

\ \ \

ढूढे गोरी आपन सजनवा हो रामा
बिरही बहुरिया
कोई कोई निरखेला मन मे सुहागिन
कोई मधुमाती गूजरिया हो रामा।

## बारहमासा

बारहमासा ऋतु सम्बन्धी गीत ह ओर अपनी मधुरता सरसता एव कोमलता के कारण लोक जीवन मे लोकप्रिय है तथा विशिष्ट स्थान रखता हे। गाजीपुर (गाजीपुर–गोरखपुर रोड पर) से करीब 25 किलोमीटर दूर मरदह गॉव मे प्रसिद्ध लोक नर्तक एव गायक श्री बाबुनन्दन जी ने मुझे निम्नलिखित ऋतु गीत गाकर सुनाया।

मोरी अचरा क छहियॉ जुडाय लऽ बलमा
चारी महीना रहइ गरमी के दिनवा
धरती अकास जरे बहेला पवनवा
तनी अखियॉ से अखिँया मिलाय लऽ बलमा।
मोरी अचरा के छहिया जुडाय लऽ बलमा।

चारी महीना रहइ रिमझिम बदरिया
सावन महीना मस्त गावली कजरिया

गोदी मे बिठाय के झूलऽ नऽ पलना
मोरी ॲचरा क छॅहियॉ जुडाय लऽ बलमा।

ठण्डा ठिठोरे जियरा हिलोरे।
चन्दा चन्दनियॉ के जैसे निहोरे।

अ तनिक गरवा मे गरवा मिलाय लऽ बलमा।
मोरी ॲचरा के छॅहियॉ जुडाय लऽ बलमा।

आई बसन्त ऋतु मन के लोभाई
पिउ पिउ पपिहरा तब रटन लगाई

धानी रग चुनरी मोरी रगाय दऽ बलमा।
मोरी ॲचरा के छॅहियॉ जुडाय लऽ बलमा।

मारे पिचकारी मोरी चुनरी रगाई
गए परदेस पिया हमइ बिसराई

**लाल गुलाल उडाय लऽ बलमा**
**मोरी अँचरा के छँहियाँ जुडाय लऽ बलमा।**

**बाबुनन्दन राम चित्त गोहरावयँ**
**अइसे बलमुआ से नेहिया लगावयँ**
**ज्ञान क ज्योति जलाय दऽ बलमा।**

ऋतु वर्णन मे ऋतुओ का मूर्तिमान स्वरूप गायक अपनी भाव भगिमाओ एव मुद्राओ से श्रोताओ क समक्ष प्रस्तुत कर देता हे। हिन्दी के प्रख्यात कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने पदमावत मे नागमती का वियाग वर्णन बारहमासा मे किया हे। उपरोक्त गीत मे ऋतु वणन ह। इसी प्रकार बारहमासा मे बारह महीनो का वर्णन होता है।

## कजली

पूरे भोजपुरी भाषी क्षेत्र के अन्तर्गत भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया को कजली का पर्व मनाया जाता हे। नागपचमी के दिन लडकियॉ मिट्टी मे जो बोती ह तथा समय–समय पर सीचती ह जिसके कारण उनमे अकुर निकल आता हे ओर बालियॉ निकल आती हे। कजली के दिन उन बालियो को लडकियॉ भाइ तथा बुजुर्गो के कान पर रखती हे तथा अपना नेग लेती हे। इस नेग को जरइ खोसाई कहा जाता है।

डा गियर्सन के अनुसार कजली की उत्पत्ति मध्य भारत मे हुई थी। किन्तु एक पोराणिक कथा हे कि एक बार भगवान शिव ने व्यग्य मे मॉ को काली कह दिया था जिसके कारण वह बहुत दुखी हुई ओर तपस्या के लिए निकल पडी। तपस्या करते समय एक सिह भी मॉ को टकटकी लगाये नीचे से खडा देखरहा था कि वे गिरे ओर वह लपक ले। देवी तपस्या करती रही ओर सिह भी खडा रहा। १०० वर्ष बाद ब्रह्माजी प्रकट हुए और उन्होने देवी से कहा कि वर मागिए। इस पर भगवती ने कहा कि यह सिह भी यही खडा तपस्या कर रहा हे पहले उसे वर दे। ब्रह्माजी ने सिह को वर देने के पश्चात भगवती स पुन वर मागने को कहा इस पर देवी ने वर मागा कि मुझे आप कनक वर्णा कर दे। ब्रह्माजी वर देकर चले गए ओर भगवती ने अपना श्याम कोष छोडा ओर कनक वर्णा हुई। उनके श्याम कोष से देवी कौशिकी उत्पन्न हुई। तभी इन्द्र वहॉ पहुचे ओर उन्होने कहा कि मै भी कोष से उत्पन्न होकर कोशिक हूँ। आपके कोष से उत्पन्न होकर यह कोशिकी हे अत यह मेरी बहन हुई। इन्हे मुझे दे दे। देवी देवी कोशिकी को इन्द्र को देते हुए भगवान शिव के पास चली गई ओर इन्द्र दवी कौशिकी को सिह सहित विन्ध्याचल लेकर आए और कहा कि यहॉ आप देवताओ की सेवा पूजा स्वीकार करे तथा उनकी असुरा से रक्षा करे। आप विन्ध्यवासिनी के नाम से प्रसिद्ध होगी। इस कथा के आधार पर यह कहना गलत न होगा के देवी कौशिकी का नाम लोकभाषा मे कज्जली या कजली पड गया हो ओर उनकी आराधना के लिए जो गीत परम्परा लोक मे विकसित हुई हो वही कजली हो–

**जै जै विन्ध्याचल महारानी**
**तोहरी महिमा अपरम्पार**
**असुर विदारनी हो जगतारिनी**

**सतन की रखवार**
**चण्ड मुण्ड विध्वस कियो मॉ**
**अष्टभुजा तन धार**
**तेरो ध्यान धरत निसि वासर**
**ओर न जाचत द्वार**
**दया दृष्टि करि नेक निहारो**
**मोती कहत पुकार**
**मोती**

डा गियर्सन ने कजली का शाक गीत माना हे जबकि कजली को किसी भी प्रकार से शोक गीत नही कहा जा सकता ओर मध्य भारत मे इसका प्रचलन ी नही ह जबकि मिर्जापुर उससे सटे वाराणसी ओर आस–पास के जनपदो मे कजली का पर्व जहुत ही महत्वपूण ह तथा उत्साह के साथ मनाया जाता हे। लोक जीवन मे देखा जाय तो कजली का सम्बन्ध झूले से हे। झूले पर झूलत समय कजली गाने की परम्परा हे तथा कजली मे श्रृगार रस की प्रधानता मिलती हे। डा कृष्णदेव उपाध्याय न कजली गीतो के सम्बन्ध मे लिखा हे कि ये गीत श्रृगार रस से ओत–प्रोत होत हे। इनमे श्रृगार रस क उभय पक्ष की झॉकी हमे देखने का मिलती हे परन्तु सयाग ही श्रृंगार की प्रधानता है जो स्वाभाविक हे।

कजली पर्व आते ही विवाहित लडकियॉ ससुराल से कजरी खेलने नेहर आ जाती हे। चारो ओर झूल डाल दिये जाते हे। कजली लोक जीवन मे पूरे उमग उत्साह से गायी जाती है। सावन महीना आते ही कजली प्रारम्भ हो जाती है –

**कइसे खेले जइबू सावन मे कजरिया**
**बदरिया घिरि घिरि आई ननदी**
**तू त चललू अकेली तोहरे सग ना सहेली**
**गुण्डा घेर लेइहे तोहरी डगरिया**
**बदरिया घिरि घिरि आई ननदी।**

भोजपुरी भाषी क्षेत्रो –वाराणसी मिजापुर जानपुर सोनभद्र आदि मे तो कही भी जाइय सावन माह मे कजली की बहार रहती हे। कजली गायनके अखाडे बहुतही प्रचलित हे। श्री शीतला प्रसाद पाण्डेय पत्तु के अखाडे के गायक हे। कजली गायको के अखाडो मे इस अखाडे का बहुत सम्मानजनक स्थान ह। विख्यात लोक गायक वुल्लु भी इसी अखाडे से सम्बन्धित थे। शीतला प्रसाद जी की अपनी मण्डली है। बातचीत मे श्री शीतला प्रसाद ने बताया कि वे अपने गायन से समाज मे ऐसी चेतना जागृत करना चाहते हे कि तमाम सामाजिक बुराइया दहेज आदि बन्द हो। उन्होने बताया कि कजली अखाडो की आपसी प्रतियोगिताए होती रहती है लेकिन कभी इससे दुराव नही पेदा होने पाता। श्री शीतला प्रसाद गायन के समय अपने एक हाथ स झाझ बजाकर गाते है तथा एक हाथ खाली रहता है जिससे वे श्राताओ को इगित करते हे।

कजली गायन का मुख्य वाद्य ढोलक है। कुछ [illegible] से झाझ बजाकर गाते ह कुछ चग का प्रयाग करते हे। अब कजली गायन मे हारमोनियम का भी प्रयोग [illegible] रहा ह मेर अनुरोध पर श्री शीतला प्रसाद जी न कजली सुनाइ कुछ पक्तिया प्रस्तुत ह –

**हरे रामा आए न ब्रज मे बिहारी**
**कि जोहै राधा प्यारी रे हरी।**
**झूला पड गया कदमवा की डारी**
**सब झुलयर्ली मिल नरनारी राम**
**अरे राम जोगनी बनाए मुरारी**
**कि जोहै राधा प्यारी रे हरी।**
**पापी पपिहा क सुनकर के बोली**
**लागे जइसे करेजवा मे गोली राम**
**अरे रामा कब लेइहै सुधिया बिहारी**
**कि जोह राधा प्यारी रे हरी।**
**पत्तु अक्षयवर की सुन्दर सयरिया**
**काशी कब कान्धा टेरिहॅय बॅसुरिया राम**
**अरे राम कविता सुखनन्दन की न्यारी**
**कि जोहै राधा प्यारी रे हरी।**

श्री रामचन्द्र तिवारी बदली कटरा मीरजापुर के निवासी ह तथा वरिष्ठ पत्रकार एव सगीतज्ञ ह। श्री तिवारी जी से जब मेने कजली के सम्बन्ध मे बात प्रारम्भ की ओर कजली की उत्पत्ति के बारे मे उनके विचार जानना चाहा तो श्री तिवारी जी ने कहा कि कजली की जन्मभूमि मीरजापुर ही हे तथा इसी भूमि पर प्रतिवर्ष परावन की बन्दी के रूप मे कजली का जन्म दिवस मनाया जाता हे जो ढाई दिन की अवधि का होता हे।

श्री तिवारी जी ने बताया कि कजली का जन्म–दिवस मनाने के लिए विभिन्न अखाडे वाले विन्ध्यधाम मे जाकर वहॉ के बगीचो या धर्मशाला मे ठहरकर खजरी पूजन करते ह। खजरी पूजन के बाद सुमिरिनी गाते हे। सुमिरिनी मे सरस्वती वन्दना होती है। इसके पश्चात ये टोली बनाकर मा विन्ध्यवासिनी के दरबार मे जाते है औरउनको धार चढाते है। धार चढाने एव पूजन अर्चन के बाद कजली मे ही उनकी स्तुति गाते हे। इस प्रकार कजली–उत्सव का प्रारम्भ हो जाता हे ओर फिर पूरे सावन भादो ओर क्वार के महीने तक विभिन्न पर्वो पर कजली गायन होता हे।

## बिरहा

यद्यपि बिरहा अहीर जाति का गीत हे। लेकिन अपनी लोक प्रियता के कारण हर जाति मे इसका प्रचलन है। सभी लोग बिरहा बडे चाव और मनोयोग से सुनते ह। बिरहा गायक अपनी मण्डली रखत हे तथा बिरहा गायन के समय वादक ढोलक झाझ करताल झाझ आदि वाद्य यत्रा का प्रयोग करते हे। हारमोनियम का भी

बिरहा गायन मे अब प्रयोग चल पडा है। बिरहा का प्रारम्भ मगलाचरण से होता हे इसके बाद रामायण महाभारत एव पौराणिक कथाओ तथा अन्य सामाजिक एव ऐतिहासिक घटनाओ से सम्बधित तथ्यो पर बिरहा गायन चलता हे। बिरहा गायिकी मे भी कजली की तरह प्रतियोगिताए होती हे। सवाल–जवाब होता हे। बिरहा गायन मे गायक उठान तज ओर टेरी को अलग–अलग तरह से गाता हे–उठान तर्ज टेरी की कुछ पक्तियॉ –

**उठान** **दशरथ घर राम जब आए**
**तीनो लोक खुशी मे छाए**
**खुशी महरानी हुई जब लिए राम अवतार**

**तर्ज** **कौशिल्या के राम**
**सुमित्रा के लक्ष्मण**
**मोरे ललना कैकयी के भरत भुआल**
**महलिया उठइ सोहर हो।।**

**टेरी** **अवध की सीमा बाकी बन गई**
**बसुधा विमल हुई पा हरि चरणो की झाकी**
**अवध की सीमा बाकी बन गई।**

**पुरा बिरहा निम्न प्रकार है। यह बिरहा लोक गायक श्री शीतला प्रसाद ने मुझे सुनाया था।**

**दशरथ घर राम जब आए**
**तीनो लोक खुशी मे छाए**
**खुशी महारानी हुई जब लिए राम अवतार।**
**केकरा के राम**
**केकरा के लक्ष्मण**
**मोरे ललना केकरा के भरत भुवाल**
**महलिया उठइ सोहर हो।**

**जब बजने लगी बधइया**
**सुनिए अवध नगर मे**
**तब लगी दिवाली जलने**
**अवधपुर घर घर मे**
**अनहद बाजा बजता था**
**हो रग बिरगे गाने**
**चढि चढि विमान पर देवता**
**तब लगे फूल बरसाने**
**तब बरसे सुधा सुधाकर**
**सुख व्योम सरिस रस पाकर**

रूक गए गगन नभ अम्बर
दिल मे खुशी मना कर
कौशिल्या के राम
सुमित्रा के लक्ष्मन
मोरे ललना केकयी के भरत भुवाल
महलिया उठइ सोहर हो।
अवध की सीमा बाकी बन गई
वसुधा विमल हुई पा हरि चरणो की झॉकी
अवध की सीमा बॉकी बन गई।
भोले डिम डिमउले डमरू
अरे मस्त हो बजउले डमरू
भुतवा परेतवा नाच
लिलवा देखउले डमरू
दशरथ सग राम आए
देखि के लुभयल डमरू
जोगी से दियावऽ हमके
भारी जिद कइलै डमरू
सुनके बचनिया भोले
धरती पर गिरउले डमरू
भोले डिम डिमउलै डमरू
जे कहूँ डमरूआ छुइहे नारी बन जइहे रामा
मनिहे न कहनवा भारी फजिहत उठइह रामा
अरे नारद अगस्त आए
मस्ती मे उठइले डमरू
डम डम डमरू भजत हर हर हर
रहत बजत पर पहर पहर भर
जलज नयन कर चरण हरण अघ
शरण सकल चर अचर खचर तर
धरत नगन फन अगन हतन तन
लसत नखत गन अतर तरल कर
चहत छनक जै लहत कहत यह
डमरू बजत हर हर हर
सातो जन से हस के कहनऽ भोला दानी हो
अरे आवऽ तनी बुढ़ोती मे
कटय द सोना चॉदी हो।

दतवा से डमरू उठाये तोने छनवा
क्रोधित होकर फेके राम आधे असमनवा
आठ हुआ डमरू कोई समझे चातुर ज्ञानी हो
आवऽ तनी बुढाती मे कटय द सोना चॉदी हो।

उपरोक्त बिरहा के गायक श्री शीतला प्रसाद पत्तु क अखाडे के गायक ह। श्री पत्तु का अखाडा लोक गायको के अखाडो मे सम्मान जनक स्थान रखता ह।

## झूमर

झूमर नाम उमग के साथ झूम कर गाने स पडा ह। लाक सगीत की विभिन्न विधाआ मे भी झूमर गान होता ह जेसे बिरहा का झूमर कजली का झूमर आदि। महिलाए जो गीत उमग क साथ झूमते हुए गाती ह उसे झूमर कहा जाता हे। एक झूमर गीत जा बलिया म प्रचलित ह प्रस्तुत ह -

पटना सहरिया से सोना मगवले
देख यार नथिया गढाव हरि अपने
देख यार नथिया गढाव हरि अपने।
नथिया पहिरि हम सुतली ओसरवॉ
देख यार चोरी करेले हरि अपने
देख यार चोरी करेले हरि अपने।
चोर चोर कहि हम हरि के पकडली
देख यार पइयॉ परले हरि अपने
देख यार पइया परेले हरि अपने।
काशी सहरिया से साटन मगवले
देख यार चोली सिआवे हरि अपने
देख यार चोली सिआवे हरि अपने।
चोलिया पहिरि हम सुतली ओसरवॉ
देख यार चोलिया खोले ले हरि अपने
देख यार चोलिया खोले ले हरि अपने।
चोर चोर कहि हम हरि के पकडली
देख यार पइयॉ परले हरि अपने
देख यार पइयॉ परले हरि अपने।

प्रख्यात लोकगीत गायिका श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव से उनके आवास (वासलीगज मीरजापुर) पर मिला। लोक सगीत पर चर्चा चली। श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव लाकगीता को लोक का लोकभाषा मे उदगार मानती हे।

वार्ता के बीच उन्होने एक ऐसे तथ्य की ओर इगित किया जिस पर ध्यान देना अति आवश्यक ह। श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव न बताया कि कुछ लोकगीतो के केसेट तयार करने वाल प्रतिष्ठान लोकगायको से अश्लील गीतो को गाने के लिए कहते हे।

लोक धुनो एव लोकगीतो की सहजता एव मधुरता के कारण प्रचलन बढता जा रहा हे ओर धन की लिप्सा के कारण केसेट बेचने एव तेयार करने वाल कुछ व्यवसायी तथा कुछ लोक गायक लोक गीता की पक्तिया बदलकर तथा तोड मरोडकर गा रहे हे। यह प्रवृत्ति बहुत ही घातक ह।

लोक गीत लाक की धरोहर ह। इनम लाक की सस्कृति एव लोक मानस की अनुभूतिया की अभिव्यक्ति हे। लोकगीतो का विकृत रूप प्रस्तुत करने से लोक सस्कृति का आघात पहुचता ह। लाक धुनो एव लोकगीतो का सृजन लोक करता ह व्यक्ति विशष नही।

अत लोकगीतो को निजी लाभ के लिए विकृत करन की प्रवृत्ति पर अकुश लगाना आज की सास्कृतिक अनिवार्यता हे जिसपर ध्यान दना अति आवश्यक ह।

## लोरिकी

भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे लोरिकी गायन बहुत ही प्रसिद्ध एव प्रचलित हे। यह अहीर जाति मे उत्पन्न लोरिक की गाथा है। चाह अहीर जाति के लाग कही भी हा इस अपनी अतीत गाथा क प्रति अनुराग रखते हे। लोरिकी अहीर जाति की गाथा होने के बावजूद अन्य जातियो के बीच भी प्रचलित ह। इसकी अलोकिक रहस्यपूर्ण एव रोमाचक कथाओ का गायन प्रभावित किए विना नही रहता। यही कारण ह कि लोरिकी का गायन लोक मे सम्मानित हे।

लोरिकी म लारिक की चमत्कारिक शक्तियो का उल्लेख हे। लोरिक की अपार शक्ति उसके सघर्ष की कथा ही लोरिकी का विषय हे। वना म अकले भी गाय बैल भसो को चराते चरवाहे लोरिकी तन्यमता से गाते रहते हे। लेकिन लारिकी मे उल्लिखित चचाए लोक जीवन म घुलमिल कर इस प्रकार बेठ गई है कि लोरिकी गायन एक जाति विशष का न होकर लोक–गायन बन गया ह।

**लोरिकी मे गउरा (बलिया) के शक्तिशाली अहीर कठयित के पराक्रमी एव तेजस्वी पुत्र लोरिक तथा अगोरी (सोनभद्र) के सम्पन्न अहीर महरा की गुणवती पुत्री मजरी की कथा का उल्लेख है**

अगोरी का राजा मालागत दुष्ट प्रकृति का व्यक्ति हे तथा उसकी नजर मजरी पर लगी है। वह मजरी को अपना बनाकर रखना चाहता है किन्तु मजरी इसक लिए तयार नही होती।

मजरी का विवाह गउरा मे लारिक से निश्चित होता हे। मजरी बहुत ही धार्मिक प्रकृति की लडकी है। अगोरी का राजा मोलागत नही चाहता कि उसका विवाह लारिक के साथ हो।

लोरिक की बारात गउरा से अगोरी के लिए चलती हे। मालागत तमाम बाधाए उत्पन्न कराता है किन्तु तमाम सघर्षो से जूझती लोरिक की बारात पहुँचती हे। लोरिक का विवाह मजरी से होता हे। विवाह के बाद विदाई होती है लेकिन मोलागत तमाम अवरोध उत्पन्न करता है। किसी प्रकार सघर्षो से जूझता लोरिक मजरी को लेकर गउरा पहुँचता हे।

लोरिकी लोरिक की असाधारण शक्तियो के वर्णन से भरी पडी हे। लारिक पैर से मार कर किवाड तोड देता है। इनरावत हाथी को मार डालता हे। धक्का देकर पड उखाड फेकता हे। युद्ध मे अदभुत काशल दिखलाता हे। तल्वार की धार से काटकर एक बहुत बडी पत्थर की चट्टान तीन भागा मे कर देता ह।

आज भी मारकुण्डी पहाड (जनपद सोनभद्र) पर एक बडी चट्टान दो भागो मे कटी खडी हे तथा एक भाग नीचे गिरा हुआ है। इस चट्टान को लोरिक का पत्थर कहा जाता हे।

लोरिक सवरू की शादी करने बारात लेकर जाता है। बारात एक दानव के पेट मे चली जाती हे। देवी की कृपा से बारात बाहर आती हे। ऐसी तमाम असाधारण एव चमत्कारिक घटनाआ से लोरिकी भरी पडी हे। जादू, टोना टोटका आदि की चमत्कारी घटनाए कातुहल उत्पन्न करती है।

विरह–मिलन कौतूहल आश्चर्य एव लोरिक की असाधारण शक्ति तथा देवी चमत्कार की घटनाओ का वर्णन लोरिकी मे हे जिसके कारण लोरिकी लोक मानस पर अपना प्रभाव डालने मे पूण समर्थ ह।

लोरिकी भोजपुरी भाषी अचल की प्रचलित लोक गाथा ह। भाजपुरी भाषी अचल मे अनेक लोरिकी गायक है। शब्दो और दृष्टातो मे अन्तर पड जाता ह लेकिन मूल बात एक ही जेसी हे।

लोरिकी सुनने के लिए ग्राम लखनपुरवा (सान्भद्र) म गया। लखनपुरवा मे लोरिकी के गायक श्री राम औतार यादव रहते हे। रात्रि करीब ८ बजे स श्री राम ओतार यादव का लोरिकी गायन प्रारम्भ हुआ। तन्मयता के साथ मै सुनता रहा ओर लोरिकी गायन मे श्री राम ओतार की तन्मयता तो दखते ही बनती थी।

मुझे राबर्टसगज लोटना था मन उठने को नही कर रहा था किन्तु साथ आए मेरे मित्र को जल्दी थी। रात्रि के लगभग १० ३० बज रहे थे। रास्ता सुनसान कच्चा था सडक दूर थी। उठना ही पडा।

श्री राम औतार ने बताया कि लोरिकी गायन से उन्हे सुख एव शान्ति मिलती हे। लोरिकी गायन उनका व्यवसाय नही बल्कि जीवन–अग हे। लोरिकी गायन उन्हे दुखा कष्टो से छुटकारा देता हे। उन्होने कहा जब मन नाही लागत तब इहय गावइ लागी ला । श्री राम ओतार यादव पूरी–पूरी रात लोरिकी गा सकते हे। वे कहते है कि इ त अथाह बा रतियो भर मे न ओरायी । लोक सगीत लोक जीवन मे समाया हुआ हे ओर लोक जीवन के प्रत्येक कार्य व्यापार मे लोक सगीत की गूज मिलती हे।

**लोरिकी गायन के दूसरे लोक गायक श्री दूधनाथ यादव घुरमा (सोनभद्र) के रहने वाले है। श्री यादव लोरिकी गायन के लिए देश के दूसरे राज्यो मे भी जा चुके है। श्री दूधनाथ यादव की गाई हुई लोरिकी की कुछ पक्तिया प्रस्तुत है**

**जउने दिन लोरिक बरात साज के**
**गउरा सग चल देले हउऽ**
**तउने बखत पैडा धइले हउऽऽ**
**अगोरी के जातऽऽऽऽ**

**जउने बखत जान हव तान**
**रात रेगे दिन दाडे**
**कत्तव बहिनी बोलत मुकाम**
**रात दिन के दाडले**
**कादव पहुच गइली रे बिरना**
**पहुँच गइले नहीं सोनभद्र के किनारऽऽ**
**जउने बखत पहुच गइल बायऽ**
**नहीं सोनभद्र पर**
**त बाजा दिहले बाडन विरवा**
**नदिया पर बाजा हो बजवायऽऽऽऽ**
**अरे त धीरे धीरे सबत गोसइया**
**जा किलवा मे गइल सुनाय**
**जाने बखत पडलबा सबद**
**राजा मोलागत के काने**
**अरे मन मे करत हउअ मनावन**
**दिल कइले हउअ रजऊ**
**किलवा मे विचारऽऽऽऽ**

भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे व्यापकता की दृष्टि से उपरोक्त विधाआ का उल्लेख किया गया हे। उल्लेखनीय है कि भोजपुरी अचल मे हर जगह समान विधाए है तथा अभिव्यक्ति मे समानता हे। लोक गीतो मे आश्चय–जनक रूप से समानता पायी जाती हे। लोक सगीत एक सूत्र मे सम्पूण समाज को बोधे हुए हे तथा सास्कृतिक सामाजिक एव भावनात्मक एकता का आधार स्तम्भ बना हुआ हे। लोक सगीत के आधार गीता मे एकरूपता परिलक्षित होती हे। अ तर शब्दो तथा बाली के स्वरो भर का मिलता है।

**जैसे**

राम के हाथे कनक पिचकारी किसी जनपद मे हे तो किसी जनपद मे राम के हाथ कनक पिचकारी यही हाथे और हाथ का अन्तर है। कही गाया जाता हे कि सीता के हाथ अबीरा तो कही सीता के हाथ के स्थान पर लक्ष्मण के हाथे अबीरा गाया जाता है। गीतो मे स्थानीय बोलियो के सम्बोधन चिन्हो मे परिवर्तन दिखता हे जैसे कही रउरा हे तो कही रउवा तो कही रउरे ह तो कही तोहरे कही तोरा ओर तोरे का सम्बोधन हे।

भाव पक्ष कला पक्ष या मूल भावना मे कही कोई परिवतन नही दिखता। पूर गीतो मे सम्बोधन के अतिरिक्त स्थानीय बोलियो के शब्द मिलते हे। अन्यथा पूरे भोजपुरी भाषी क्षत्र के अन्तर्गत लोक गीतो की श्रेणिया समान है। सगीत का यह पक्ष समाजिक सास्कृतिक एव भावनात्मक दृष्टियो से एक दूसरे से अलग नही होने देता। यही कारण है कि बस्ती गोरखपुर देवरिया बलिया गाजीपुर मीरजापुर सोनभद्र कही भी जाइए स्थानीय घटनाक्रमो के कारणो को छोडकर हर जगह एक सी सामाजिक सास्कृतिक परम्पराए मिलेगी। केवल स्थानीय

परिस्थितियो के कारण कही कही कुछ न कुछ परिवर्तन हे। लेकिन मूल स्वरूप ज्यो का त्यो बना हुआ हे। उदाहरण के लिए दो सस्कार गीतो (सोहर) का प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो भोजपुरी भाषी क्षेत्र के अन्तर्गत दो अलग–अलग छोरो पर बसे जनपदो के हे। पहला साहर गारखपुर जनपद म गाया जाता है तथा दूसरा सोनभद्र मे –

**१ सूतल रहली अटरिया सपन एक देखली**
**सासु सपना के करहु विचार सपन सुठि सुन्नर।**
**बभना के देखली पतरा लिहले पनवा ढेपारल**
**दियना त देखली तखत तरे अमवा घवदिया हो।**
**चुप रहु ए बहु अरि चुप रहु दुश्मन न सुने**
**बहुअर पाच बलक तुहरे होइहे अजोधिया के नायक हो**
**बमना त हउए नरायन पनवा सोहाग तारे**
**दियना त हई तोरे लछिमी अमवा सन्तति तोरे**

**गोरखपुर**

**२ सुतल रहलीं अटरिया सपनवॉ एक देखली हो**
**सासु सपने क करऽ विचार सपनवा बडा सुन्दर हो**
**आवत देखली गइया त पइठत बभना देखूॅ हो**
**सासु ॲगने मे हरी हरी दुबिया त अमवॉ टिकोरा लागल हो**

**चुप रह ये बहुआ चुप रह असहन जिनि करऽ हो**
**बहुआ सुनि जइहे गोतिनी हमार**
**मेहनवा हमके मरिहयि हो**
**गइया त हई मोरि लछिमी त बभना नरायन हो**
**मोरि बहुआ दुबिया जनम अहिवात**
**त अमवा सन्तत हव हो**

**सोनभद्र**

भोजपुरी भाषी क्षेत्र के उपरोक्त दोनो लोक गीतो मे कही कोई विशेष परिवर्तन नही हे। दोनो गीतो की एक ही पृष्ठभूमि हे तथा शब्दो मे भी गहुत सामा य अन्तर ह जा बोली के कारण हे। यही स्थिति अन्य लोक गीतो की भी है।

लोकानुभूति की सरल एव सहज अभिव्यक्ति लोक गीतो मे होती हे। लोक धुने ही लोक गीतो का आधार बनती है। लोक सगीत मे हृदय की मचलती भावनाओ की अभिव्यक्ति होती हे बोद्धिक चमत्कार नही। लोक सगीत किसी बन्धन को स्वीकार नही करता तथा अपनी सहज एव सरल अभिव्यक्ति के कारण लोक–मानस मे छाया रहता है। विवाह जनेऊ भात गारी विरहा सोहर कजरी झूमर आल्हा ऋतु परिवर्तन आदि लोक सगीत की विधाये हे। लोक गीतो मे प्राय दीपचन्दी कहरवा दादरा तथा खेमटा तालो का प्रचलन हे। लोक सगीत लोक की लय एव ध्वनि ह जो लोक मे गूजती ह।

लोक साहित्य क प्रख्यात एव वयोवृद्ध विद्वान डा कृष्णदव उपाध्याय स वाराणसी मे उनके आवास पर मिलने मे गया। डा साहब से लोक सगीत पर चचा प्रारम्भ हुइ। डा उपाध्याय ने कुमार गन्धव के इस कथन कि शास्त्रीय सगीत का आधार लोक सगीत ही ह का दृष्टान्त दत हुए कहा कि लाक जीवन मे लोक सगीत का बहुत बडा स्थान ह। गावो का उल्लेख करत हुए डा साहब न कहा कि गॉवा मे जहा मनोरजन का कोई साधन नही हे वहॉ लाक सगीत ही लोकरजन करता हे। इसलिए गॉवा म पुराने लोग रामायण गान करते थे और इस गायन की परम्परा थी। गावो मे निश्चित तिथि का किसी मदिर या किसी विशिष्ट व्यक्ति के घर पर रामायण गान का आयाजन किया जाता था। इसमे प्रमुख व्यक्ति रामायण की चोपाई का गायन करता था। शेष लोग उसी चोपाई की पुनरावृत्ति करते थे।

डाक्टर उपाध्याय ने आश्चर्य व्यक्त करत हुए कहा कि भारत के बारहर मारीशस म यह परम्परा आज भी चली आ रही हे ओर इस आयोजन को वहा बठका कहते ह। डाक्टर साहब ने बताया कि सन १९८८ की मारीशस यात्रा के दोरान वे एस आयोजनो म सम्मिलित भी हुए थ। वहा भारतीय परम्परा के अनुसार ढोलक आर झाझ लेकर बजाते हुए रामायण गात ह।

लोक गीतो की समानता पर चर्चा करत हुए डा उपाध्याय न कहा कि भारतीय मानस एक हे आर यही कारण हे कि हर जगह के लोक गीता म समानता पायी जाती ह। डा साहब ने बताया कि विवाह क अवसर उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग तथा बिहार क पश्चिमी भाग मे प्राय गीतो मे समानता पायी जाती हे। डा साहब ने कहा कि बेटी की विदाइ के अवसर पर जो वियोग की भावना उठती हे वो सर्वत्र एक समान हे। हो सकता हे कि शब्दो के हेर फर से तथा स्थानीय बोली परवतन के कारण गीतो के विभिन्न पाठो मे असमानता हो किन्तु भावो मे साम्यता बनी रहती हे।

डा साहब ने कहा कि देश के अन्य अहिन्दी भाषी जेसे गुजरात बगाल पजाब तथा महाराष्ट्र आदि प्रान्तो के विदाई गीतो तथा भाजपुरी भाषी क्षेत्र क विदाइ गीता म भाषा की भिन्नता के बाद भी भावो मे समानता हे।

लोक गीतो म लोक सगीत का पक्ष प्रस्तुत करने के लिए निम्नलिखित दो लोक गीतो की स्वर लिपि प्रस्तुत कर रहा हूॅ। यह स्वर लिपि ओबरा (सोनभद्र) के सगीत–प्रवक्ता तथा प्रख्यात सतूर वादक श्री रवीन्द्र नाथ पाण्डेय द्वारा तेयार की गयी हे।

**१ कजली**

**कइसे खेले जइबू सावन मे कजरिया**
**बदरिया घिरि घिरि आई ननदी**
**तू त चललू अकेली**
**तोहरे सग न सहेली**
**गुण्डा घेर लेइहै तोहरी डगरिया**
**बदरिया घिरि घिरि आई ननदी।**

**२ चैता**

**येही ठैया झूलनी हेराय गइले रामा**
**कहवॉ मै ढूॅढू**
**कोठवा मे ढूढली अटरिया मे ढूॅढली**
**पूछ आई पिया की सेजरिया हो रामा**
**कहवॉ मे ढूढू**

# स्वर लिपि
## कजली, ताल कहरवा
### स्थाई

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | सा | सा | सारे | रे प | प म | म |
| – | – | क | से | खेऽ | लेऽ | ज ई | बू |
| ग | गग | र | सा | र | रे | सा | नी |
| सा | वन | म | क | ज | रि | या | व |
| प | नि | सा | रे | ग | ग | र | सा |
| दरि | या | घ | री | आ | ई | न | न |
| सा | – | | | | | | |
| दी | ऽ | | | | | | |

### अन्तरा

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | ग | म | र | र | ग | ग ग |
| | | तू | त | च | ल | लू | अऽ |
| प | प | प प | प | प | ध | प | म |
| के | ली | तो ह | र | स | ग | ना | स |
| ग | ग | ग | ग | ग | ऽप | म | म |
| हे | ली | गु | न्डा | छे | ऽक | ल | हे |
| ग | ग | रे | सा | रे | रे | सा | नी |
| तो | ह | री | ड | ग | रि | या | ब |
| प | नि | सा | रे | ग | ग | र | सा |
| दरि | या | घे | रि | आ | ई | न | न |
| सा | सा | | | | | | |
| दी | – | | | | | | |

# चैता, ताल दीपचदी
## स्थाई

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धा | धी | न | धा | धा | धी | न | ता | ती | न | धा | धा | धी | न |
| सा | रे | — | ग | — | म | — | ध | प | — | ध | — | <u>नी</u> | — |
| य | ही | ऽ | ठे | ऽ | या | ऽ | झु | ल | ऽ | नी | ऽ | ह | ऽ |
| ध | — | प | म | प | म | ग | ग | म | — | म | प | — | — |
| रा | ऽ | य | ग | ई | ली | ऽ | रा | ऽ | ऽ | मा | ऽ | ऽ | ऽ |
| म | म | — | ध | प | ध | — | म | — | — | ग | — | स | — |
| क | ह | ऽ | वा | ऽ | म | ऽ | ढूँ | ऽ | ऽ | ढूँ | ऽ | ऽ | ऽ |

# चैता, ताल दीपचदी
## अन्तरा

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग | म | — | ध | — | <u>नी</u> | ध | सा | सा | — | सा | — | सा | — |
| को | ठ | ऽ | वा | ऽ | मे | ऽ | ढूँ | ढ | ऽ | ली | ऽ | अ | ऽ |
| नी | नी | — | नी | — | सा | — | ध | मा | — | <u>नी</u> | — | ध | — |
| ट | रि | ऽ | या | ऽ | मे | ऽ | ढू | ढ | ऽ | ली | ऽ | ऽ | ऽ |
| ध | ध | — | ध | — | ध | — | ध | प | — | ध | — | <u>नी</u> | — |
| पू | छ | ऽ | अइ | ऽ | ली | ऽ | से | या | ऽ | क | ऽ | से | ऽ |
| ध | ध | प | म | प | म | ग | ग | म | ग | प | — | — | — |
| ज | रि | ऽ | या | ऽ | हो | ऽ | रा | ऽ | ऽ | मा | ऽ | ऽ | ऽ |
| ग | म | — | ध | प | ध | — | म | — | — | ग | — | सा | — |
| क | ह | ऽ | वा | ऽ | म | ऽ | ढूँ | ऽ | ऽ | ढूँ | ऽ | ऽ | ऽ |

# लोक वाद्य

वदतीति वाद्यम जो बोलता ह वही वाद्य है। वाद्य की ध्वनि से स्वर ओर उसमे छुप शब्द का स्पष्ट बोध होता है। वाद्य सगीत का अविभाज्य अग है। वाद्यो का प्रचलन अति पुरातन है। वाद्यो की व्यापकता तथा हमारे सास्कृतिक जीवन मे उनक अति महत्त्वपूण होने की प्रमाणिकता की ओर पाराणिक कथाएँ इगित करती हे जिनमे भगवान विष्णु शिव आदि दवा के हाथा मे शख डमरू आदि वाद्य यन्त्रो का उल्लेख ह। भगवान कृष्ण का तो नाम ही वशीधर हे। डमरू क बिना ता महादेव शिव की कल्पना ही नही की जा सकती। वाद्यो को हम अपनी धार्मिक आध्यात्मिक तथा सास्कतिक अभिव्यक्तिया का प्रतीक चिन्ह भी कह सकते ह। इसमे तनिक भी सन्देह नही कि वाद्य हमारी अनमाल सास्कृतिक निधि ह।

सगीतज्ञो ने सगीतात्मक ध्वनि एव गति को प्रकट करन वाले उपकरण को ही वाद्य माना ह। महर्षि भरत ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ भरत नाटय म वाद्या का चार भागा म विभक्त किया ह –

**तत चवावनद्ध च घन सुपिरमेव च।**
**चतुविधन्तु विज्ञेयमातोद्य लक्षणन्वितम।। भ ना २८/।**

**अर्थात ये चार प्रकार के वाद्य हे**

**(१) तत (२) अवनद्ध (३) घन (४) सुषिर**

उपरोक्त चारो प्रकार के वाद्यो क लक्षणो का उल्लेख भी महर्षि भरत ने अपने उसी ग्रन्थ मे किया ह –

**तत तन्त्री कृत ज्ञेयभवनद्धतु पोष्करम।**
**घन तालस्तु विज्ञेय सुषिरो वश उच्यते।। भ ना २८/२**
**अर्थात (१) तत वाद्य तन्त्री वाद्य (२) अवनद्ध वाद्य पुष्कर वाद्य**
**(३) घन वाद्य ताल वाद्य (४) सुषिर वाद्य वशी वाद्य है।**

१ तत वाद्य की श्रणी मे वह वाद्य आता हे जा तन्त्री अथवा तारो से बनाया जाता हे जेस सारगी एकतारा आदि।

२ अवनद्ध वाद्य उस वाद्य को कहा जाता ह जो चमडे स मढकर बनाया जाता हे। जेसे ढोल नगाडा आदि।

३ घन वाद्य वह वाद्य हे जो पीटकर अथवा आपस मे रगडकर बजाया जाता हे। जेसे –मजीरा करताल आदि।

४ सुषिर वाद्य के अन्तगत वह वाद्य आता ह जिस मुँह स फूककर बजाया जाता हे। जैस वशी शख आदि।

इनमे से तत एव सुषिर वाद्य यन्त्र प्रधानत स्वर वाद्य तथा अवनद्ध एव घन वाद्य यन्त्र लय वाद्य है।

उपरोक्त चारो प्रकार के वाद्यो का उपयोग लोक सगीत नाट्य एव नृत्य मे होता है सगीत नाट्य नृत्य के आनन्द को चरम अवस्था तक पहुँचाने एव आकर्षण म वृद्धि के लिए लोक गायका कलाकारो द्वारा वाद्यो का प्रयोग किया जाता है।

## भोजपुरी भाषी क्षेत्र के अन्तर्गत प्रचलित लोक वाद्य

विभिन्न प्रकार के लोकगीतो नाटया एव नृत्यो मे भिन्न-भिन्न प्रकार के वाद्या का प्रयोग होता है।

## लोक जीवन मे प्रचलित वाद्यो का सक्षिप्त विवरण
## तत वाद्य के अन्तर्गत आने वाले वाद्य

### सारगी/किगरी

१ सारगी की परिकल्पना रावणास्त्र तथा रावण हस्त वीणा स हुई ह। यह लगभग दो फीट लम्बी होती है। तुम्बे के स्थान पर सारगी म लकडी को खोदकर पेट बनाया जाता है तथा इसे चमडे से मढ दिया जाता है। पेट के बीच मे घुडच लगती ह तथा पेट क नीच से चार तात (बहुत सी सारगियो मे खूँटिया तो चार होती है किन्तु तार तीन ही होता है)। घुडच पर हाते हुए खूटिया पर ऊपर की ओर चली जाती ह। इसको कमान की सहायता से बजाया जाता है। सारगी म तरब की ग्यारह खूँटियॉ सामने मस्तक पर होती है तथा दक्षिण भाग मे तरब की चोबीस खूटियॉ होती ह जिसमे कुछ म पीतल तथा कुछ मे लोह के तार चढे होत है। मस्तक पर जो तरब के तारो की खूटिया होती ह उनके लिए मेरू के पास दा घुडच रहती ह जिन पर हाकर ग्यारह तार नीचे की ओर आते है। सारगी के जा रूप इस समय दिखलाइ दते है उनमे दो मुख्य है – (१) तरब वाली सारगी (२) बिना तरब वाली सारगी (चिकारा)। लोक सगीतकारा क मध्य बिना तरब वाली सारगी अधिक प्रचलित है। भोजपुरी भाषी क्षेत्रो मे साधु सारगी बजात भजन गाते हुए आत रहते ह। सवन (योगी) भी सारगी बजाते एव भजन गाते भिक्षाटन हेतु आते रहत ह। इन साधु सतो द्वारा भी प्राय बिना तरब वाली सारगी का प्रयोग होता है। लोक नाटय नृत्य एव गायन मे सारगी का प्रयोग प्रमुख वाद्य के रूप म होता है। सारगी के ही लोक वाद्य रूप को किगरी या चिकारा कहा जाता है।

### सितार

२ सितार सारगी से बडा होता है तथा इस बजाने के लिए तर्जनी अगुली मे तार की तरह एक छल्ला पहना जाता है जिसे मिजराब कहा जाता ह। मिजराब से तार पर आघात पहुचा कर सितार को बजाया जाता है। गायन के समय लोक कलाकार सितार का प्रयोग करत है।

## चिकारा

३ बिना तरब वाली सारगी का ही एक रूप चिकारा ह। लोक कलाकरो द्वारा प्राय इस वाद्य का प्रयोग किया जाता हे। किगिरिहा जनजाति क लोग इस वाद्य का प्रयोग करते हे तथा इस वाद्य को किगरी कहते हे।

## एकतारा

४ एक तुम्बी मे ११/२ इच गोलाइ का करीब १ – २ फीट लम्बी लकडी का बेट लगा होता हे तथा ऊपर एक खूटी लगी होती है। तुम्बी के नीच से ऊपर होते हुए एक तार को खीचकर खूँटी मे लगा दते हे। एक तारा एक सूर मे बोलता ह। यह लोक प्रिय वाद्य यन्त्र है। सन्त–साधु भी इसका प्रयोग करते हे।

## मुखचग

५ सगीत ग्रन्थो मे इस वाद्य यन्त्र को चगु भी कहा गया हे। यह वाद्य त्रिशूल की आकृति का होता ह। सगीत पारिजात मे इस वाद्य यन्त्र का वर्णन ह। इस वाद्य का लोकनाम मुरचग तथा मोरचग हे। यह वाद्य यत्र बजाते समय मुह से दबाया तो जाता ह पर फूँक कर नही वजाया जाता ह। इस वाद्य यन्त्र म तार का प्रयोग होता हे जा झकार उत्पन्न करता ह। इसके तार का दाय हाथ की तजनी से आघात करक झकृत किया जाता हे।

## अवनद्ध वाद्य के अन्तर्गत आने वाले
## वाद्य ढोल

१ ढोल ढोलक–यह वाद्य सबस अधिक प्रचलित हे। लाक गीतो नृत्यो तथा नाटयो मे इसका सर्वाधिक प्रयोग होता है। मागलिक गीतो का गात समय महिलाये इस वाद्य का प्रयोग करती है। सोहर आल्हा होली चैता आदि गाते समय तो यह वाद्य अनिवाय हो जाता ह।

यह वाद्य लकडी क खाल पर आर दोनो ओर चमडे से मढ कर बनाया जाता हे तथा कसने के लिए दोनो ओर डोर लगी रहती हे। जिसम पीतल या लाहे क गाल छल्ल लगे रहते ह। इन्ही छल्लो को विपरीत दिशाओ मे सरका कर ढोलक को कसते ह। यह वाद्य दानो हाथा की अँगुलिया स बजाया जाता हे।

## नगाडा

२ यह वाद्य लकडी या मिट्टी का नाद जेसा होता हे जिसके मुह पर चमडा मढा होता है तथा पेदे मे रस्सी के लच्छे से कसा जाता ह। इस सिकटी (लकडी की पतली छडी) से चमडे को पीटकर वजाया जाता हे।

भगवान की आरती पूजा मे नगाडा का प्राय प्रयाग किया जाता ह। इस वाद्य यन्त्र के साथ नाइन भी होता ह नगाडे का तज तथा कडकती ध्वनि उत्पन्न करने क लिए भी इसे सका जाता ह इनका प्रयाग नाटकी आदि नाटयो तथा लाकनृत्यो मे किया जाता ह।

## खॅजरी

३  खॅजरी छोटी तथा गोल होती ह। इस लकडी से बनाया जाता ह तथा इसक मुँह को चमड स मढ दिया जाता हे। बाये हाथ मे पकडकर दाहिने हाथ की अगुलिया स बजाया जाता हे। इसकाप्रयोग भिक्षाटन मे निकले भिखारी साधु–सन्त भी करते हे। लोक गायन मे लाक गायका द्वारा इसका प्रयाग किया जाता ह।

## डफला/डफ/डफली

४  यह वाद्य यन्त्र सीधी बारी की थाली की तरह की आकृति का होता ह। केवल आकार का अन्तर रहता है। डफ डफली से बडा होता हे। यह वाद्य एक हाथ से दो हाथ तक व्यास का होता ह इस बजाकर नाचते गाते हे। डफला डफली एव डफ मे एक अन्तर ओर रहता ह। डफला का पतली लकडी की शलाका से बजात हे ओर डफ को हाथ की ऊँगलियो से बजाते ह। कुछ जनजातिया डफला वाद्य यन्त्र का प्रयाग अपने नृत्य एव गायन मे करती ह तथा कुछ भिक्षुक डफला वाद्य यन्त्र का बजात नाचते गाते भिक्षाटन करते ह। लोक कलाकारो द्वारा नृत्य एव गायन के समय डफली डफ एव डफला का प्रयोग किया जाता ह।

## दुक्कडी/दुक्कड

५  इस वाद्य यन्त्र की आकृति छोटे नगाडे की तरह होती ह। इसे ढोल की तरह ऊँगुलिया स ठोककर बजाया जाता हे। इस वाद्य का प्रयाग शहनाइ के साथ होता ह। इस दुक्कड या दुक्कडी दोना कहत ह।

## मानर

६ (१) यह वाद्य नगाडा से बहुत छोटा होता हे लेकिन इसकी बनावट नगाडे की तरह होती ह ओर मुँह चमडे से मढा होता हे तथा पेदे से डोरी लगाकर कसा रहता हे। भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे मानर का बहुत ही महत्व हे। मागलिक उत्सवो मे यह बजाया जाता ह।

(२)  कुछ जनजातिया मादल की ही तरह लकडी की खाल पर चमडा मढकर जो वाद्य यन्त्र बनाती हे उसे भी मानर कहा जाता हे। कही–कही मादल को ही मानर कहा जाता हे।

## चग

७ चग आकर मे डफला से छाटा होता ह तथा यह डफले की तरह लकडी की छडी से न बजाकर यह एक हाथ मे पकड दूसरे हाथ की उँगलियो से बजाया जाता ह। कजली लावनी तथा फाग गाते समय लोक गायक इसका प्रयोग करते हे।

## मादल

८ यह वाद्य ढोल के आकार का ही होता हे लेकिन यह कच्ची मिट्टी से बनाया जाता हे तथा दोनो ओर चमडे से मढ दिया जाता हे। जनजातिया म यह वाद्य बहुत ही प्रचलित हे। करमा शेला आदि नृत्यो मे इस वाद्य का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान हे। बिना मादल के जनजातियो का नृत्य नही होता ह। भोजपुरी भाषी क्षेत्र रावर्टस गज एव दुद्धी तहसील मे रहन वाली जनजातियो क मध्य यह वाद्य अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता हे।

## ताशा

९ ताशा–यह वाद्य नगाडे की तरह हाता ह किन्तु नगाड से छाटा हे। इसे बास की खपाची (पतली छडी जैसी लकडी) से बजाया जाता हे। यह वाद्य नगाडा के साथ बजाया जाता हे। लोक नृत्यो एव लोक गीतो मे इस वाद्य का विषिष्ट स्थान हे।

## डुग्गी

१० नगाडे से छोटी आकृति की नगाडे के साथ जो बवाद्य यन्त्र होता हे उसे डुग्गी कहते हे। यह लकडी की पतली खपाची (शलाका) से पीटकर बजाया जाता हे।

## हुडुक

११ हुडुक डमरू की आकृति का पर डमरू से बडा वाद्य यत्र हे। इसका बीच का भाग पतला गोलाकार तथा दोनो सिरो की ओर चोडा गोलाकार होता हे, यह ढोल की तरह चमडे से मढा होता हे। दोनो सिरो को डोरी से कसा जाता है। यह वाद्य यत्र ढोल या खजरी की तरह बजाया जाता है। पवरिया लोग भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे पुत्र–जन्म के अवसर पर बधाई गीत गाते समय इस वाद्य का प्रयाग करते है। कॅहरउवा नृत्य (गोडऊ नृत्य) का यह प्रमुख वाद्य है। इस वाद्य यन्त्र को हुडुक एव हुडुक्का भी कहा जाता हे।

## डमरू

१२ यह वाद्य दोना ओर से चमड से मढा होता ह तथा हाथ म पकडकर 'हेला–हिलाकर बजाया जाता ह। यह लकडी का होता हे तथा पेट पतला हाता ह। इसक दोना आर दो घुण्डिया लगी रहती ह। जब हाथ हिलाया जाता हे तब ये घुण्डिया चमड पर आघात करती हे जिससे यह बजता हे। लोक जीवन मे यह वाद्य पिख्यात है। बन्दर भालू का खेल दिखलाने वाले तथा मदारी लाग डमरू बजाकर ही लोगो को अपनी ओर आकर्षित करते हे। नागा साधु इसी वाद्य को बजात ह।

## टइया

१३ यह वाद्य गहरी कराही जैसी आकृति का होता ह तथा इसका मुह चमडे से मढा होता ह आर पेदे से डोरी लगाकर कसा रहता ह। इसे बास की पतली सलाकाआ स बजाया जाता ह। भोजपुरी भाषी क्षेत्रे म टइया महत्वपूर्ण वाद्य यन्त्र ह। यह वाद्य यन्त्र मागलिक अवसरो म बजाया जाता हे।

## मृदग/पखावज

१४ यह वाद्य ढोलक की तरह हाता है। इसका बीच का भाग गोलाइ मे माटा तथा दोनो ओर गोलाइ मे कुछ पतला होता हे। इस वाद्य का प्रयोग लाक गीतो एव लाक नृत्या मे होता ह। पचरा गाते समय भी इस वाद्य यन्त्र का प्रयोग होता हे। लाक वादक इस वाद्य यन्त्र का पखावज भी कहते हे।

# घन वाद्य के अन्तर्गत आने वाले वाद्य

## मजीरा

१ मजीरा इस वाद्य यन्त्र का टिपरी या कास्य ताल भी कहा जाता हे। इसका प्रयोग अति प्राचीन हे। कास्य धातु से यह वाद्य यन्त्र बनाया जाना हे। सभवत इसीलिए इसे कास्य ताल की सज्ञा दी गयी ह। यह वाद्य कुमुदिनी के पत्ते की आकृति का हाता है। इसके बीच मे छेद होता हे जिसमे अलग–अलग डोरी डाल कर भीतर से गाठ लगती ह आर ऊपर घुण्डी की तरह मुठिया लगाई जाती हे। दोनो की आपसी टकराहट से ध्वनि निकलती हे। यह वाद्य बहुत ही प्रचलित वाद्य हे। लोक सगीत मे इसका बहुत अधिक प्रयोग होता ह।

## जोडी

२ जोडी–लाहे के बने दो गोल सपाट टुकडो से बनती ह। यह शुद्ध लोक वाद्य यन्त्र हे। हाथ मे इसको रखकर बजाते हे। एक दूसरे के घर्षण से आवाज उत्पन्न होती है।

## झाल

३ यह वाद्य यन्त्र मजीरा की तरह हाता ह किन्तु मजीरा से आकार मे बहुत बडा हाता ह। गायन–वादन मे इसका प्रयोग वहुत ही प्रचलित ह।

## डण्डिया (कोण)

४ इस वाद्य मे लकडी के दो टुकडे हात हे। आपस म दोनो को टक्राकर ध्वनि निकालते हे। यह वाद्य बहुत ही प्राचीन हे। गुप्तकालीन भित्ति चित्रे म यह वाद्य दिखाई पडता हे किन्तु इसका प्रचलन गुप्त काल से पूर्व भी था। लाक नृत्यो मे इसका प्रयोग प्रचलित हे।

## घण्टा/घण्टी

५ अ– घण्टा कास्य या पीतल धातु का हाता ह। यह आठ अगुल ऊँचा होता ह तथा इसके मुह की चोडाई जो गोल होती हे चार अगुल होती ह। भीतर लटकता हुआ एक गाला रहता हे जिसके टक्राने स ध्वनि निकलती है। मन्दिरो मे यह वाद्य यन्त्र लटकाया जाता ह। इसकी आकृति बडी ओर छोटी दोनो प्रकार की होती हे। घण्टी बहुत ही छोटी होती ह। घण्टा एव घण्टी का प्रयोग पूजन आरती मे किया जाता ह।

५ ब– यह वाद्य यन्त्र एकदम गोला आर चिपटा हाता ह इसम ऊपर की ओर एक छद होता हे जिसमे रस्सी लगाई जाती हे। यह टाग कर भी आर हाथ स उठाकर भी लकडी की हथाउी स वजाया जाता ह। मन्दिरा एव विद्यालयो मे इसका प्रयोग होता ह।

## घुँघरू

६ यह छोटी गोलियो की आकृति का हाता हे। यह भीतर से खोखला होता हे तथा नीचे की ओर कटा रहता है। इसके भीतर छोटी मटर के दान जसे लोहे के गोल टुकडे रहते हे जो हिलने से बजते है तथा ऊपर की ओर कोढा लगा रहता हे। घुघरू के गुच्छ माटे धागो मे एक साथ गूथते हे। कई घुघुरूओ को एकसाथ गूथ देने से हल्का सा हिलने पर भी उससे ध्वनि निकलती ह। इसे पेरो मे बाध कर नाचते हे।

## १ करताल

७ यह वाद्य यन्त्र ८–१० इच लम्बा तथा दा इच चाडा हाताहे। यह लकडी के टुकडो से बनाया जाता हे। इसमे दो स्थानो पर पीतल की छोटी–छोटी झाझिया लगायी जाती हे। इसे दोनो हाथो मे पहनकर बजाया जाता हे। दोनो झाझियो को लगाने के बाद अगुलियो तथा अगूठे के लिए स्थान बना होता हे ताकि इसे पहन एव

पकडकर बजाया जाय। यह वाद्य यन्त्र बहुत ही प्रचलित ह। रामायण गाते समय तथा हरिकीतन करत समय इसका प्रयोग होता हे। लोक कलाकार गायन क समय इस बजाते हे।

## २ करताल

करीब ६ इच के लोहे के दो टुकडो को चपटा पाटकर यह वाद्य यन्त्र तेयार किया जाता हे। यह बाच में चौडा तथा दोनो किनारो की ओर क्रमश पतला होता हे। इसे भी लोक वादक करताल ही कहते हे। विरहा एव कजली मे इस वाद्य को हाथ मे लेकर बजाते है।

## झॉझ

८ कही–कही मजीर की आकृति का किन्तु उससे बडा तथा झाल से छोटा वाद्य यन्त्र झाझ कहलाता ह। कही–कही लकडी के टुकडा से बन वाद्य यन्त्र जिसमे पीतल की गोल तथा पतली झाझिया लगी रहती हे। ओर अगुलियो तथा अगूठ मे पहनकर बजाया जाता ह झाझ कहलाता हे। लाक वादको एव लोक गायको मे इसका बहुत ही प्रचलन हाता हे। विरहा गाते समय भी कुछ गायक इसका प्रयोग करते है।

## कसावर

६ यह सीधी बारी की थाली के आकृति का कास्य वाद्य है। इसका आकार थाली से छोटा होता हे तथा ऊपर छेद करके छोटी रस्सी मे लटका देते ह तथा रस्सी का एक हाथ से उठाकर लकडी की पतली छडी के टुकडे से पीटकर इसे बजाते हे। यह वाद्य अनक लाक कलाकारो म बहुत ही प्रचलित हे तथा बहुत से लोक नृत्यो मे इसका प्रयोग होता हे।

## ठिलिया/घडा

१० यह वाद्य यन्त्र मिट्टी का घडा होता हे जिसको हाथ मे लोहे की मुदरी पहन कर उसी से ठोककर ध्वनि पेदा की जाती हे। कुम्हारा द्वारा इसका प्रयाग हाता हे। लाक कलाकर भी इस वाद्य को प्रयाग मे लाते हे।

## छड/ढेडताल

११ यह लोहे का लम्बा छडनुमा वाद्य होता हे जो ऊपर की ओर बकुली की तरह मुडा रहता हे। इसे लोहे के टुकडे से ठोककर ध्वनि उत्पन्न करते है। नटुआ नृत्य का यह प्रमुख वाद्य हे। कई लोक नृत्यो मे इसका प्रयोग होता है। कई लोक कलाकार गायन के समय इस वाद्य को बजाते है।

## घाटी/कसनहटी

१२ यह वाद्य यन्त्र चमडे की पेटी पर बडे आकार के घुघुरूओ को गूथकर बनाया जाता हे। नृत्य के समय इसे कमर मे बाधा जाता हे। कमर को हिला–डुलाकर इसे बजाते हे। नटुआ नृत्य का यह अति आवश्यक वाद्य यन्त्र है। इस वाद्य यन्त्र का दूसरा प्रकार यह ह कि चमडे की पेटी मे घुघरू के स्थान पर छोटी–छोटी घटिया बाध देते है। कई लोक नृत्यो मे लोकनर्तक इसका प्रयोग करते हे।

# सुषिर वाद्य के अन्तर्गत आने वाले वाद्य

## सिगी

१ यह वाद्य यत्र सीग अथवा पीतल का बनता हे। यह घुमावदार होता हे तथा मुह से फूकर बजाया जाता है। इसका बजाने वाला भाग पतला हाता हे तथा पीछे का भाग मोटा होता हे। मागलिक कार्यो मे तथा द्वारचार आदि के समय इसे बजाने की प्रथा थी पर अब इसका प्रचलन कम हो रहा हे।

## शख

२ शख –यह वाद्य यन्त्र एक सामुद्रिक जीव का ढाचा हे। शख का प्रयोग पुरातन हे। महाभारत के युद्ध मे शख के प्रयोग का उल्लेख है। यह देव वाद्य माना जाता ह तथा भगवान विष्णु के हाथ मे भी इस वाद्य के रहने का उल्लेख हे।

शख का समस्त धार्मिक अनुष्ठानो पूजन आदि मे प्रयोग किया जाता हे। मन्दिरो मे आरती पूजन के समय इस वाद्य को बजाया जाता है। लोक जीवन मे इस वाद्य का अति विशिष्ट स्थान है।

## महुअर

३ महुअर को ही महुवरि बीन या नागसर कहा जाता ह। गगाजली क आकार के एक तुम्ब मे छेद कर के उसमे दो बासुरी जैसे बास लगाये जाते ह। इन बासुरियो के ऊपर की ओर नरकट के दो रीड लगाते है। जिसे मोम से चिपकाया जाता है। नीचे के पर्दे को भी मोम से चिपकाया जाता हे। दोनो बासुरी जैसे बासो मे आगे सात छेद तथा एक छेद पीछे होता हे। यह फूक कर ॲगुलियो की सहायता से बजाया जाता हे। भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे सपेरे इसे बजाया करते हे।

## शहनाई/पिपहरी

४ शहनाई को पिपहरी भी कहते है यह भोजपुरी भाषी क्षेत्रो मे प्रसिद्ध वाद्य यन्त्र हे। मागलिक कार्यो मे दरवाजे पर इसे बजाना शुभ माना जाता हे। भोजपुरी भाषी क्षेत्रो के अन्तर्गत बाबा विश्वनाथ मन्दिर के नोबत खाने मे पहले प्रात ही शहनाई बजाने की प्रथा थी। मन्दिरो राज प्रसादो मे सुबह शहनाई बजायी जाती थी।

## वशी

५ वशी बॉस नरकट या पीतल (धातु) की बनाइ जाती ह। यह पतली खाखली तथा गोल होती ह। इसमे एक ओर अनेक छेद बने रहेते हे। हर बास की बशी सर्वोत्तम गानी जाती ह। यह मुह से फूककर बजायी जाती हे। भगवान श्रीकृष्ण वशी बजाया करत थे इसीलिए उन्ह वशीधर कहत ह। लाक जीवन मे वशी प्रचलित ह।

## तुरही

६ तुरही–धातु की खोखली नली स बनाइ जाती हे जिसका एक किनारा चाडे मुह का हाताहे आर दूसरा किनारा धीरे–धीरे पतला होता जाता हैं। प्राचीन कालमे इसका प्रयोग युद्ध वाद्य के रूप मे किया जाता था। गुप्त कालीन कला कृतियो मे तुरही के अनक उदाहरण मिलत ह।

## धुधका

७ यह वाद्य यन्त्र ताबे या लोहे की चादर से बनाया जाता ह। यह घुमावदार होता हे तथा दो तीन टुकडो मे होता हे। बजाते समय टुकडो का जाड लेते ह। यह गोलाकार खाखला वाद्ययन्त्र हे। मुह की ओर पतला गोलाकार होता हे और ऊपर की आर धीरे–धीरे गोलाकर चोडाइ बढती जाती हे। यह मुह स फूक कर बजाया जाता हे। भोजपुरी भाषी अनेकस्थानो पर विवाह क समय यह वाद्य यन्त्र बहुत ही आवश्यक माना जाता ह। लोक कलाकारो मे प्रचलित यह प्रमुख वाद्य यन्त्र ह।

इन वाद्यो के अतिरिक्त हारमानियम आर नाल का भी प्रयाग अब लाक कलाकार कर रहे है। हारमोनियम का प्रचलन तो बहुत पहले से हा रहा ह किन्तु इधर नाल का भी प्रयोग बढ रहा हे। अनेक पूर्व वाद्यो का पचलन कम होता जा रहा हे और उनका स्थान दिन–प्रतिदिन नय वाद्य लेते जा रहे ह।

लोक गीतो की तरह लोक वाद्या को भी कोई बन्धन स्वीकार नही ह। यही कारण हे कि आटा पिसते समय जॉते की ध–र–र ध–र–र की आवाज कपडे धाते समय छप–छप धप–धप की गूज ढेकी चलने से उत्पन्न होती आवाज ये सभी लोक वाद्य का स्थान ग्रहण कर लेती ह आर उनकी ताल पर गीत मुखरित होने लगते हे।

लोक जीवन मे थाली बजाकर शिशु के जन्म पर प्रसन्नता व्यक्त की जाती हे। दीपावली के अवसर पर महिलाए दरिददर खेदते समय सूप पीट–पीट कर बजाती ह।

साधु सन्त चिमटा बजाकर भजन गाते हे। सडसी सडसा आदि लोक जीवन मे वाद्य का स्थान ले लेते हे।

भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे वाद्य का महत्व न केवल सगीत नाटय या नृत्य के लिए है अपितु हमारे मागलिक अनुष्ठानो के लिए भी हे। भोजपुरी भाषी क्षेत्र के अन्तर्गत विवाह के अवसर पर मानर पूजन भी लोकिक विधि विधान के अन्तर्गत है ओर यह परम्परा वाद्य के महत्व की ओर ही सकेत करती है। बलिया जनपद मे विवाह के अवसर पर घुघुका आवश्यक माना जाता हे। मागलिक अवसरो पर शहनाई वादन की भी परम्परा है।

# लोक नाट्य

मानव जीवन सघर्ष से परिपूर्ण ह। मनुष्य पग–पग पर अपने अस्तित्व के लिये जूझता रहता हे। दूसरे शब्दो मे जीवन स्वय मे निरन्तर चलने वाला युद्व ह जिसमे कभी विजय तथा कभी पराजय का मुँह देखना पडता हे। सुख–दु ख आशा–निराशा के झूलने मे झूलता मनुष्य कभी सुखद कल्पनाओ की उडाने भरने लगता तो कभी अवसाद के सागर मे डूबने लगता ह। यही विसगतियॉ मन मे अस्थिरता उत्पन्न करती है तथा जीवन का सत्रास आशका एव भय को उत्पन्न करता ह जिसके कारण वैचारिक अराजकता जन्म लेती है। मन की यही उद्वेलित स्थिति जीवन पथ का अवरोध बनती ह। मन की प्रफुल्लता से ही आशा ओर उत्साह का सचरण तथा आस्था एव विश्वास का जन्म होता ह जिसस जीवन को गति मिलती हे तथा अग्रसर होने का मार्ग प्रशस्त होता है।

मन की प्रफुल्लता का एक मात्र साधन मनोरजन हे। इससे स्पष्ट हे कि मनोरजन जीवन की अनिवार्यता ह। यही कारण हे कि सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा न ऋग्वेद से पाठय सामवेद से गान यजुर्वेद से अभिनय तथा अथर्ववेद से रस लेकर नाटय विधा का सृजन किया ह।

**जग्राह पाठय ऋग्वेदात सामभ्योगीतमेव च।**
**यजुर्वेदादभिन्यान रस माथर्वणादीप।।**

सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा की यह सरचना ही स्वय यह सिद्ध कर दती ह कि लोक रजन के लिये नाटय सर्वोपरि है।

मानव मे अनुकरणीय शक्ति प्राकृतिक ह जिससे वह सीखता ह। हॅसना रोना उछलना कूदना आदि मनोभावो की अभिव्यक्तियो के माध्यम ह। मनुष्य की अनुकरणीय शक्ति का प्रदर्शन तथा मनोभावो की अभिव्यक्ति के माध्यम ही नाटय का रूप लेते ह। इसी प्रवृत्ति ने बहुरूपिया नट भॉड आदि नाटय विधा को जन्म दिया हे।

लोकनाटय मानव की सहज एव स्वाभाविक प्रक्रिया के परिणाम हे। डा श्याम परमार न कहा ह कि–

**लोक नाटय लोकरजन का आडम्बरहीन साधन हे**

लोक नाटय मे जीवन की अनुभूतियो की अभिव्यक्ति होती ह तथा ये नाटय मानव की पीडा प्रसन्नता उत्थान तथा पतन के स्पष्ट चित्र होते हे। धर्म हमारा मूल आधार ह। इसलिय धार्मिक आध्यात्मिक एव पारलोकिक अवधारणाये तथा अतीत गाथाये हमारी सास्कृतिक चेतना की मूल श्रोत ह।

यही कारण है कि लोकनाटय इन्ही परिधियो मे घूमता रहता ह। जीवन के यथार्थ को झुठलाया नही जा सकता। अत लोक नाटयो मे यथार्थ बोध भी परिलक्षित होता हे। लोक नाटय लोक जीवन की सहज एव सरल अभिव्यक्ति के माध्यम है। लोकनाटय म लोकजीवन की अभिव्यक्ति लाकभाषा मे ही होती है तथा आडम्बरहीनता के कारण लोकनाटयो की स्वाभाविकता एव सहजता बनी रहती हे जिसके कारण लोकरजन मे पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

## रामलीला

भोजपुरी भाषी क्षेत्र के अन्तगत रामलीला का अति महत्वपूण स्थान ह। भाजपुरी भाषी क्षेत्र म जगह–जगह पर अनेको रामलीलाएँ होती हे। इन लीलाओ से न कवल लोकरजन हाता ह अपितु लोक कल्याण के दिशा–निर्देश भी मिलते हे। रामलीला क कथानक स सभी परिचित ह जिसके कारण दर्शको मे सहजता बनी रहती हे। दशहरा (विजय दशमी) के अवसर पर लीलाये कइ दिना तक हुआ करती हे। रामनगर (वाराणसी) की रामलीला तो देश स्तर पर प्रसिद्ध हे। वाराणसी चेतगज (वाराणसी) की नक्कटया नाटीइमली का भरत मिलाप बहुत प्रसिद्ध हे।

## धार्मिक एव पौराणिक नाटको का प्रचलन

भोजपुरी भाषी क्षेत्रो मे रामलीला क अतिरिक्त धार्मिक एव पोराणिक नाटको का भी प्रचलन हे। रामलीला के प्रदर्शन के पश्चात अनेक स्थानो पर सत्यवादी हरिश्चन्द्र वीर अभिमन्यु भक्त प्रह्लाद भक्त ध्रुव आदि नाटका का मचन होता ह। दर्शक मुग्ध भाव स दखत ह। धार्मिक आस्थाआ क कारण धार्मिक एव पाराणिक नाटका क प्रति रूचि स्वाभाविक ह। लोक जीवन की धार्मिक आस्थाय इन नाटको के प्रति न केवल रूचि उत्पन्न करती है अपितु दर्शको के मन पर अपनी छाप भी छाड देती ह। दशको का नाटक के पात्रो के साथ भावनात्मक सम्बन्ध जुड जाता हे।

## नौटकी

नोटकी एक नाटय विधा हे। भोजपुरी भाषा क्षेत्र क बडे मेलो मे इसका प्रदर्शन होता है। नोटकी का कथानक धार्मिक पोराणिक ऐतिहासिक तथा सामाजिक हाता हे। इसका मुख्य वाद्य नगाडा ह। ताशा ढोलक आदि वाद्य यत्रो का भी प्रयोग किया जाता हे।

## बहुरूपिया

ये नाना प्रकार क रूप को धारण कर अपना प्रदशन करत है। भोजपुरी भाषी क्षेत्रो मे इनका बहुत प्रचलन है तथा ये प्रदर्शन इनकी आय क साधन होते ह। य कइ दिना तक भिन्न–भिन्न प्रकार का रूप धारण कर दरवाजे पर जाते है ओर अन्तिम दिन जब इन्हे जाना हाता ह ता ये माली या अन्य कोई रूप धारण कर विदाई मॉगते है।

## नटुआ

नटुआ नृत्य एव नाटय दोनो ह। नटुआ मे रसधारी नाच एव नाटक भी किया जाता हे। यूँ तो कई नाटक प्रस्तुत करते हे पर इनका भागमति नाटक एव वेसवा रानी नाटक प्रसिद्ध हे। भागमति नाटक का कथानक यह

हे कि भागमति राजा जयसिह की पुत्री हे तथा होरिल की बहन हे। भागमति से मिर्जा (पठान) विवाह करना चाहता हे लेकिन इसके लिये भागमति तेयार नही होती। मिजा पठान भागमति को बलपूर्वक ले जाना चाहता हे। युद्ध होता हे युद्ध मे भागमति अपन भाई स मदद मॉगती ह। होरिल युद्ध हार जाता हे तथा होरिल को मिर्जा कैद कर लेता हे। भागमति अपने भाइ का मिजा की केद स छुडाती हे। मिजा डोली मे भागमति को ले जाता हे। रास्ते म भागमति सगर (तालाब) म कूद कर डूब जाती हे जिससे उसकी मृत्यु हो जाती हे। होरिल बाबा गोरखनाथ की प्रार्थना तथा मनोती करता ह। बाबा गोरखनाथ होरिल की प्रार्थना एव मनौती पर प्रसन्न होते हे और भागमति को जिन्दा कर देते ह। इस नाटय मे सारगी ढोल ओर जोडी वाद्य यत्र का प्रयोग होता ह। इस नाटक मे मिर्जा का दूत एक पात्र ह ता ह जो विदूषक हाता ह ओर विचित्र वस्त्रो एव मुख मुद्राओ तथा प्रहसन से दर्शको को हॅसाता रहता हे। नटुआ नाटय नृत्य म करीव १० व्यक्ति होत हे।

## भॉड

यह भोजपुरी भाषी क्षत्र का प्राचीन नाटय हे। ये नाटय हास्य व्यग्य तथा कटाक्षपूर्ण होते हे। यह नाटक दर्शको का खूब मनोरजन करते हे। मॉगलिक उत्सवा मे इनको पहले बुलाने का प्रचलन था। अब धीरे धीरे कम हो रहा है। ये कटाक्ष करने मे बहुत माहिर होते हे। ये मच पर प्रदर्शन

**घोडे है बछेडे हे**
**साल साल भर के छेडे हे**

सर–र–र कहते हुए प्रारम्भ करत हे इसको ये घोडा छोडना कहते हे तथा अश्लील मजाक पर उतर आते है। इनके प्रदर्शन की मुख्य बात यह हाती ह कि यदि ये कोई नाटय भी प्रस्तुत करते हे तो बीच–बीच म हास्य–व्यग्य तथा अपने कटाक्ष स दशका का हॅसी स लोट–पोट कर दते ह। कभी–कभी तो इनके कटाक्ष कुछ दर्शको को मर्माहत भी कर देते हे । नगाडा ताशा इनके मुख्य वाद्य यन्त्र हे।

भोजपुरी भाषी क्षत्र के प्रख्यात भॉड स्व मुकुन्दी लाल जी के पुत्र श्री मवालाल की अपनी भॉड मण्डली ह। मेवालाल जी का यह पेतृक गुण तथा कार्य ह। इस नाटय कला की शिक्षा दीक्षा इन्होने अपने स्वर्गीय पिता श्री मुकुन्दीलाल से प्राप्त की। मेवालाल जी के बडे भाइ स्व बच्चो लाल भी इस नाटय कला क प्रसिद्ध कलाकार थे। मेवालाल जी वाराणसी मे रहते ह।

मेवालाल जी से मिलने जब मे उनके आवास (वाराणसी) पर गया तो व कही जाने के लिए तेयार थे। फिर भी वे बैठ गए और बात आरम्भ हुई। जब मने उनसे यह बताने का आग्रह किया कि आप लोग पहले कस अपना प्रदर्शन आरम्भ करते थे तो उन्होने बताया कि –

जब दरवाजे पर बारात लगकर फिर वापस जनवासे मे पहुॅचती थी तब भॉड मण्डली का कार्यक्रम आरम्भ होता था। सबसे पहले घोडे छोडे जाते थे। इस कार्यक्रम मे सात–आठ कलाकार होते थे। उनमे से एक स्टेज पर आकर कहता था –

**'घोडे है बछेडे हैं दिनो मे चार साल, न पूछिए मेरे घोडे का हाल'**

फिर दूसरा आता था और भी धोडे ह कहता हुआ अपन घाड की प्रशसा करता था। एक–एक करके बारी–बारी सातो–आठो कलाकार अपने घोड के बारे मे कुछ न कुछ प्रशसा करते थे ओर घोड़ा छोडत थ।

मेवालाल जी बताते है कि पैजामा कुत्ता कमरबन्द (गमछ की तरह लम्बा कपडा कइ परत करक कमर मे बॉधा जाता हे) सिर पर पगडी यही वषभूषा होती थी।

घोडा छोडने के पश्चात शुरू हाती थी शेरो–शायरी। इसके पश्चात रेलगाडी छाडने का प्रदशन प्रारम्भ होता था। सात–आठ कलाकार एक दूसरे की कमर को पकडे छुक–छुक करते स्टेज पर आते थे। चाय पान वगैरह स्टेशन पर बिकने वाली सामाना को आवाज दकर बेचन का प्रदशन होता था। कुछ देर यह क्रम चलता था फिर गाडी छूटने का सिगनल गार्ड जा जोकर होता था लाल झण्डी दिखाकर देता था ओर छुक–छुक करते रेलगाडी का अभिनय करने वाले कलाकार स्टेज से चले जात थे।

इसके बाद स्टेज पर आता था नृत्य करन वाला कलाकार ओर दुलह का सहरा गाता था। फिर तीन–चार नर्तक बारी–बारी स्टज पर आते थे।

पेशवाज सेहरा गाने वाले का कहत हे। पशवाज लहगा उठाकर मोर पॉखी बनाता था फिर नतक का सराफा मिसरे से होता था। मिसरे म सिर से पेर तक की तारीफ होती थी जिसे सराफा कहते हे।

श्री मेवालाल जी बताते हे कि नाटक भी होता था जसे असल का नकल । फिर थोडा रूक कर मेवालाल जी कहते हे– पर अब कहॉ? अब ता खराब हालत ह। कोइ–काइ आ जाता ह नही तो यह कला समाप्त ही होती जा रही हे।

## बिदेसिया लोकनाट्य

इस नाटक क रचयिता भिखारी ठाकुर थ। भिखारी ठाकुर ने इस नाटक की रचना की तथा स्वय प्रस्तुत करने के लिये अपनी मण्डली बनाई। भोजपुरी भाषी क्षेत्रो म यह नाटक बहुत ही लोकप्रिय और प्रचलित हुआ। इस नाटक का प्रारम्भ मगलाचरण से होता हे। मगलाचरण के बाद पति–पत्नी सवाद प्रारम्भ होता है।

**पति** अहो सुनतारू हमार दोस्त पूरब स आइल बाडऽ बडा रूपिया कमइले बॉडऽ हमरो मन करत बा की तनी पूरब जाइ।

**पत्नी** ना ना। हम पूरब ना न जायि देइब पूरव के पानी बडा कॉच हवय कही लाग जाई।

**पति** अरी का कहततारू हो हमार पानी त यतना तेज हव की जेने जाला सनसनात जाला। अच्छा छोडऽ तनिक हम पेसाब कयि आइ।

**पत्नी** नाही रउआँ भागि जाइब हम कटिया देत बानी ओही मे पेसाब कयि ली।

**पति** हॅ इहे त तूॅ चाहततारू क खटिया धरसु अ कटिया मे पेसाब करस।

इन्ही सब सवादो के बाद पति भाग जाता हे ओर पत्नी पति के विरह मे तडपती हे तथा बटोही से उसका परिचय पूछती है –

**कहवॉ क हउअ तूहू बारे हो बटोहिया**
**कहवॉ करलऽ रोजगार रे बटोहिया**

और इसी प्रकार वार्ता के क्रम म पत्नी अपने पति का सन्दश बटोही से भेजना चाहती ह। बटोही कहता है कि वह कैसे उसके पति को पहचानगा तो पत्नी अपने पति क हुलिया का वर्णन करती ह।

**हमरे सामी जी के लम्बी लम्बी केसिया**
**मोछिया भवरवहु गुजारे रे बटोहिया**
**अखियॉ त हर्वी जेसे अमवॉ के फकिया**
**नकिया सुगनवा के ठोर रे बटोहिया।**

**उपरोक्त पति**–पत्नी सवाद मुझ श्री दीपनरायन चाबे स प्राप्त हुआ। चोबे जी बलिया जनपद क रहने वाले है तथा अवकाश प्राप्त शिक्षक ह।

**पति**–पत्नी के विरह–मिलन का यह नाटय अपनी सहजता तथा लोकभाषा मे होने के कारण लोक मे छा गया और इस पृष्ठभूमि पर जो नाटय परम्परा चली बिदेसिया कहलान लगी।

**बिदेसिया** पति–पत्नी के विरह–मिलन की गाथा हे। यह गीता क माध्यम से हुई वार्तायें अपना गहरा प्रभाव छोडती है। बिदेसिया के गीत कभी भोजपुरी अचल म अपनी लाकप्रियता की शिखर पर थे। बिदसिया गीतो की ध्वनि बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करती थी और व्यक्ति के बढत कदम बिदेसिया गीतो को सुनकर अनायास ठिठक पडते थे। बिदेसिया गीतो म कामलता मधुरता तथा सहजता भरी पडी ह। भाव पक्ष पग पग पर मन को छू जाता हे। कही–कही तो गीता की मार्मिकता अ तर का झकझारन लगती ह। बिदेसिया–गीता का प्रचलन यूँ तो उ प्र के समस्त भोजपुरी भाषी क्षत्रा म हुआ लकिन पूर्वी हिस्से म अधिक प्रभावशाली रहा। गॉवो म बिदेसिया की नाच होगी यह सुनकर ही लोग आत्म–विभार हा उठते थे ओर जहॉ बिदेसिया नाच होन वाली होती थी वहॉ जाने की तैयारियॉ प्रारम्भ कर दते थ। समय क साथ ज्या– ज्यो मनोरजन क आधुनिक साधन बढने लगे ओर पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव बढने लगा लाक विधाओ का प्रचलन त्यो–त्यो घटने लगा लकिन लोकविधाओ का लोकमन से सहज नाता जो जन्मजात हे आज तक लोकविधाओ का लोक मे स्थापित किये हुए है।

इस लोक नाटय मे नाचने वाला घुँघरू परो मे बॉधता ह तथा वस्त्र मे साडी ओर ब्लाउज पहनता हे। इस लोक नाटय का प्रमुख वाद्य नगाडा एव जोडी हे तथा हारमोनियम का भी प्रयोग होता हे।

हारमोनियम का प्रयोग लोक वाद्य के रूप मे प्रचलित हा रहा हे तथा अब अन्य लोक कलाकारो द्वारा नाटय गान एव नृत्य के अवसरो पर हारमोनियम वाद्य यत्र का प्रयाग चल पडा हे। भोजपुरी भाषी जनपदो गोरखपुर बलिया गाजीपुर देवरिया आदि मे यह लोक नाटक बहुत ही प्रचलित एव प्रसिद्ध है।

## एक प्रचलित बिदेसिया-गीत की कुछ पक्तियॉ प्रस्तुत है

### बिदेसिया

बाट बटोहिया रे तुहू मोर भइया हो
हमरा सनेस ले ले जइह रे बिदेसिया।
हमरा सनेसवा रे प्रभु समुझइहे हो
तोरी धनि अलप बयस रे बिदेसिया।
तोहरा बलमुवा के चीन्ह नहि जनिहो रे
कइसे कहबि समुझाइ रे बिदेसिया।
हमरा बलमुवा के टेढी मेढी पगिया हो
जुलफि झरेली टेढी बाल रे बिदेसिया।
हमरा बलमुवा के लाल लाल ॲखिया हो
घुरूमि घुरूमि मारे बान रे बिदेसिया।।
हमरा बलमुवा के घुटी भर धोतिया हो
जइसे चले मीर उमराव रे बिदेसिया।
चिठिया जे लिहलेन मन मुसकउले हो
बॉचे लगले बरहो वियोग रे बिदेसिया।
बाट बटोहिया रे तुहू मोर भइया हो
हमरा सनेस ले ले जाहु रे बिदेसिया।

## जलुआ नाटक

जलुआ भोजपुरी भाषी क्षेत्र का प्रचलित गृहणियो का नाटक है। विवाह के समय जब बारात विवाह के लिये चली जाती है तो रात मे यह नाटक होता ह। यह एक प्रहसन होता है। इस नाटक मे केवल स्त्रियॉ ही भाग लेती हे तथा घर मे ही करती हे। इस नाटक का कोइ पुरूष नही देख पाता केवल छोटे–छोटे बच्चे घर मे रहते हे। वेष परिवर्तन के लिये पात्र के चरित्र के अनुसार रग चूना कालिख आदि घरेलू सामग्री ही उपयोग मे लाई जाती हे। स्त्री ही पुरूष ओर स्त्री दोना पात्रा का अभिनय करती हे। इसम विविध प्रकार का अभिनय होता हे। हास्य नाटक की प्रधानता है। गाजीपुर बलिया आदि मे महिलाऍ चारपाई क पाय का आटा आदि लगा कर पुतले की आकृति बनाती है तथा उसी पुतल का लकर अन्य स्त्रिया स उससे विवाह करने के लिये कहती ह। कुछ अन्य जनपदो मे कपडो का पुतला बनता ह। इस नाटक म प्रहसन चलता ह तथा हास्य का वातावरण बना रहता हे। यह नाटक अपने विविध रूप म भोजपुरी भाषी गॉवो म बहुत प्रचलित था लेकिन धीरे–धीर इसका प्रचलन बन्द हो रहा हे। इस नाटक मे नृत्य–गायन तथा हास्य प्रदशन होता हे।

इस नाटक के पीछे घर मे नई दुल्हन आन की प्रसन्नता उल्लास क साथ–साथ पुरूष सदस्यो के बारात मे चले जाने के कारण घर की सुरक्षा के लिये रात्रि–जागरण की भावना भी छुपी है। यह नाटक पूरी रात चलता रहता है तथा हास्य की अठखेलियॉ गूँजती रहती ह।

इस नाटक के अन्तर्गत तरह–तरह के रूपो मे महिलाएँ प्रदर्शन करती है। इस नाटक की विशेषता यह है कि उसके प्रदर्शन की कोई तैयारी नही होती ओर यह विवाह के अवसर पर तभी होता है जब घर से बारात चली जाती है।

## डोमकच नाटक

डोमकच नाटक महिलाओ का नाटक है। यह नाटक बलिया गाजीपुर तथा आजमगढ मे प्रचलित है। यह नाटक विवाह के अवसर पर जब बारात विवाह के लिए चली जाती ह और घर के पुरूष सदस्य बारात मे चले जाते है तब रात मे गॉव–घर की महिलाएँ मिल–जुल कर करती हे। इस नाटक के स्त्री–पुरूष सभी पात्र महिलाएँ ही होती है। इस नाटक के अन्तर्गत महिलाएँ दरोगा सिपाही बनती है। सिपाहियो की सख्या आठ–दस होती है। रग ओर कालिख की सहायता से य मूछ बनाती ह तथा पुलिस की वर्दी का प्रबन्ध करके पहनती है। सर पर पुलिस की टोपी पहनती हे तथा सिपाही बनी महिलाएँ पुलिस की पगडी बॉधती हे। बारात जाने से बचा कोई व्यक्ति जैसे दूर–दराज से बारात जान के लिए आया मेहमान जो समय पर न पहुँच पाने के कारण बारात मे सम्मिलित न हो सका हो या गॉव अथवा परिवार से सम्बन्धित व्यक्ति जो बारात न गया हो और दालान (मकान के बाहर बने बरामदे मे) मे सोया हो। (भोजपुरी क्षेत्र मे दालान मे सोने की परम्परा ह) उसे महिलाएँ सिपाही और दरोगा के वेष मे मार कर जगाती ह तथा थाने चलने को कहती है। नीद से मार खा कर अचकचा कर उठा व्यक्ति बदहवास हो उठता है ओर नाटक को वास्तविक घटना समझ बैठता है। कुछ दूर ले जाकर उसे छोडती है और फिर खिलखिलाहट से आसमान गूँज उठता हे। ऐसा करने वाली महिलाएँ वही होती है जिनका उस व्यक्ति से पारिवारिक या गॉव की दृष्टि से मजाक करने का रिश्ता बनता है। जेसे भाभी साली सरहज आदि। ये महिलाएँ कालिख या काजल अथवा रग की सहायता से अपना मूँछ बनाती हे। पगडी या टोपी पहनती है तथा अपने प्रहसन के समय पुलिस की वर्दी भी पहनती हे। इनका प्रदर्शन स्वाभाविक होता हे जिसके कारण वास्तविक लगता है। इसी प्रकार के चोकाने वाले अनेक प्रहसन महिलाओ द्वारा किये जाते है। यह नाटक किसी न किसी रूप एव नाम से पूरे भोजपुरी भाषी क्षत्र मे प्रचलित हे। गाजीपुर एव बलिया तथा आजमगढ मे इस नाटक को डोमकच नाटक कहा जाता है।

## कठपुतली

भोजपुरी भाषा क्षेत्र मे कठपुतली का प्रचलन अब बहुत कम हो गया हे। इस कला से सम्बन्धित घराने होते थे जो कठपुतली का खेल दिखाते थे। अब भी कभी–कभी कठपुतली का खेल होता हे। इसमे चारपाई या चोकी खडा करके परदा डाल देते हे और परदे के पीछे से कठपुतली का खेल दिखाने वाला अपनी ऊँगलियो से कठपुतली को नचाता है। पतले धागे मे कठपुतलियॉ बॅधी होती हे। अपनी ऊँगलियो मे धागे को बॉधकर कलाकार उन्हे नचाता है तथा कथानक के अन्तर्गत जो भूमिका कठपुतली को करनी होती है कराता है। कठपुतलियो को कठपुतली का खेल दिखलाने वाला कलाकार स्वय बनाता हे तथा पात्रानुकूल वस्त्र आदि कठपुतली को पहनाता है। पात्रानुकूल वस्त्रो से सजी रहने के कारण कठपुतलियॉ दर्शको को अपनी ओर आकर्षित करती है। जो भी कथानक होता है उसे कठपुलियो द्वारा ही प्रस्तुत कराया जाता हे।

भोजपुरी भाषी अचल मे कठपुतली का खेल बहुत ही प्रचलित था। धीर–धीरे अन्य लोकविधाओ की तरह इस विधा का भी प्रचलन कम होता जा रहा हे।

लोक साहित्य के प्रख्यात एव अधिकारी विद्वान डा के डी उपाध्याय ने एक साक्षात्कार मे मुझसे कहा कि लोक नाटय मानव जीवन के लिए बहुत ही उपयोगी ओर बडा ही आवश्यक ह। डा साहब ने कहा कि महाकवि कालिदास ने नाटक अर्थात लोकनाटय को भिन्न–भिन्न रूचि रखने वाले विभिन्न प्रकृति के मनुष्यो क लिए उनके मनोरजन का एक मात्र साधन माना ह। प्राचीन काल मे नाटका का अभिनय वहुधा हुआ करता था। आधुनिक विद्वानो का यह मत कि नाटक आधुनिक काल की देन ह यह बडी भूल ह।

डा उपाध्याय ने कहा कि सस्कृत के आचार्यो ने नाटको को दस भाग मे विभक्त किया हे। धनन्जय नामक विद्वान ने अपने ग्रन्थ का नाम दस रूपक रखा हे जिसमे नाटको के दसो रूपो का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसी प्रकार उपरूपको को अट्ठारह भागो मे विभक्त किया गया है जिसम भॉड प्रहसन आदि विधा सम्मिलित है। हिन्दी का नाटक शब्द सस्कृत के इसी रूपक का एक प्रकार हे।

लोक नाटयो मे लोकानुभूति होती ह। प्राय लोकनाटयो का सृजन व्यक्ति विशेष की कल्पना से न होकर लोक की कल्पनाओ एव प्रवृत्तियो से होता ह। लोक रग मच के अभिनय मे सकेतो तथा मुद्राओ का विशेष स्थान होता है जिसके कारण बहुत सारी बात बिना कहे ही सकेतो एव मुद्राओ से दशक समझ जाता हे। लोक नाटय का खुला मच होता है तथा साज–सज्जा साधारण ओर सहज होती है।

लोक की भाषा एव भूषा अपनी सहजता का छाप दर्शका पर छोडती हे जिसका सीधा प्रभाव पडता है और लोक नाटय लोक रजन मे पूर्ण सफल होता हे।

लोक नाटयो मे लोक सस्कृति स्पष्ट रूप से झलकती हे तथा लोक अभिव्यक्ति मुखरित होती है।

लोक नाटय अपनी स्वाभाविकता एव लोक परम्पराओ के कारण दर्शको पर अपना गहरा प्रभाव छोडता है। प्राय लोक नाटयो मे प्रहसन का महत्वपूर्ण स्थान रहता हे।

भोजपुरी भाषी क्षेत्र के अन्तर्गत लोक नाटय विधा अपने विविध रूपो मे विद्यमान है।

# लोक नृत्य

लोक जीवन नृत्य मय है। ठुमुकने इठलान मचलन इगित करने झूमने रूठने ओर मुस्कुराने आदि की प्रवृत्तियॉ तथा भाव भगिमाएँ मनुष्य का विधाता ने जन्म क साथ बिरासत मे दी हे और यही प्रवृत्तियॉ ओर भाव भगिमाएँ नृत्य की पृष्ठभूमि हे। मानव भावना प्रधान प्राणी ह। मानव की मस्तिष्क–तरगो मे भावनाएँ उठती रहती है तथा अभिव्यक्ति के लिए मचलती रहती हे ओर उन्हे व्यक्त करने के लिए मनुष्य बेचैन हो उठता हे। प्रागैतिहासिक काल के शिलाखण्डो पर चित्रित एव अकित चित्र इसका साक्ष्य प्रस्तुत कर रहे हे। शिला–खण्डो पर चित्रित एव अकित दृश्यो मे नृत्य की भगिमाएँ मिलती ह। इनको देखकर सहज मे ही अनुमान लग जाता है कि आदिम काल के मानव के ५ स जब भाषा का अभाव रहा होगा तो उसकी भावनाओ को व्यक्त करने के लिए भाषा का स्थान नृत्य ने लिया होगा। अगो की थिरकनो मुद्राओ तथा विभिन्न भगिमाओ से भावनाओ की अभिव्यक्ति ही नृत्य हे।

नर्तक सूक्ष्म से सूक्ष्म अनुभूतियो की अभिव्यक्ति अपने अगो की थिरकनो मुद्राओ तथा भगिमाओ के माध्यम से करता है। यही कारण हे कि मनुष्य के जन्म के साथ ही जन्मी यह प्राकृतिक विधा मनुष्य की श्वासो के पोर–पोर मे रस–बस गई हे।

नृत्य मनुष्य की जन्मजात धरोहर ह। उल्लास उमग ओर प्रसन्नता के क्षण थिरकनो मे ढल जाते हे। लोक जीवन की अनुभूतियॉ लोक नृत्यो मे उभर कर सामने आ जाती हे। जीवन का हर उत्सव नृत्य की थिरकनो से भर उठता है। लोक की थिरकनो को अपनी थिरकनो मे समाहित किये लोक नृत्यकार उल्लास उत्साह और उमग की वर्षा कर दर्शको को सराबोर कर दता है।

भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे अधिकाश नृत्यो का नामकरण जातिया के आधार पर हुआ हे। उदाहरण के लिए गोड जाति के नृत्यो को गोडऊ नाच धोबी जाति के नृत्य को धोबही नाच आदि। विभिन्न जातियो की विभिन्न समस्याएँ है विभिन्न परिस्थितियॉ है तथा भिन्न–भिन्न कार्य व्यापार हे। अत नृत्य की शैली भी अलग–अलग हे किन्तु नृत्य की प्रेरक भावना अलग–अलग नही ह क्योकि सास्कृतिक एव आध्यात्मिक अवधारणाएँ एक हे और यही कारण है कि जाति विशेष के नृत्य होने के बाद भी ये नृत्य किसी जाति के नही है। अपितु लोक–जीवन की थिरकन बनकर थिरक रहे हे। लोकानुभूति इन नृत्यो की अभिव्यक्ति ह जिसके कारण आज लोक जीवन मे व्याप्त हे।

## भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे लोकप्रिय एव प्रचलित नृत्य

### नटुआ नृत्य

नटुआ नृत्य भोजपुरी भाषी क्षेत्र का बहुत ही प्रचलित एव लोकप्रिय नृत्य रहा हे। इस नृत्य के साथ गायन भी चलता हे। इस नृत्य मे दो नृत्य करने वाले होते है। इस नृत्य के मुख्य वाद्य मृदग छढ जोडी कसावर तथा कसनहटी (घॉटी) है। कसनहटी कमर मे पेटी की तरह बॅधी रहती हे तथा कमर हिलाने–डुलाने पर बजती हे।

नाचने वाले घॉघरा ओर चोली पहनते हे। इस नृत्य मे पुरूष ही नाचत है। इस नृत्य का आकषक पात्र **तिवारी** होता है जो अपने प्रदर्शन से दर्शको को हॅसान का काय करता ह। **तिवारी** एक बहुत ही टढी–मेढी बकुली अपने पास लिये रहता है। प्रदर्शन के समय उसे वह दोनो जॉघो के बीच रख लेता हे। जेसे घोडे पर बेठा हा। **तिवारी** की पोशाक देखकर ही दर्शक हॅस पडत हे। इस नृत्य के साथ गायन भी चलता रहता है। यह नृत्य जब होता है तो दर्शक मत्रमुग्ध हो उठता हे। बीच–बीच मे हास्य की वर्षा तिवारी के प्रदर्शनो से होती रहती है। विवाह आदि मॉगलिक अवसरो पर ग्रामीण अचलो मे इस नृत्य की मॉग रहती हे।

नटुआ नृत्य के कलाकार श्री लक्ष्मण सजउर (सोनभद्र) मे रहते हे। उनसे मिलने गया। बातचीत हुई। उन्होने बताया कि नटुआ नृत्य ओर नाटय के समय वाद्यो वस्त्रो तथा पात्रो मे परिवर्तन होता हे। नाटक के समय **तिवारी** की भूमिका नही रहती। बल्कि **तिवारी** का स्थान दूत लेता है। **दूत** का कार्य भी **तिवारी** की तरह विदूषक का होत्ता है जो दर्शको को अपने प्रदशन से हॅसाने का काय करता ह।

वाद्यो मे नाटय के समय ढोलक तथा सारगी का प्रयोग हाता हे आर नृत्य के समय सारगी ओर ढोलक बदल कर उसके स्थान पर मृदग ओर कसावर का प्रयोग किया जाता हे। रसधारी नृत्य नटुआ नाच का प्रमुख नृत्य है। रसधारी नृत्य भगवान श्रीकृष्ण एव राधा की लीला से सबधित होता हे। नृत्य के समय **घॉघरा** ओर **चोली** नर्तक पहनता हे किन्तु नाटय के समय **घॉघरा** ओर **चोली** के स्थान पर **साडी** और **ब्लाउज** का प्रयोग करता है। लक्ष्मण जी ने अपने सहयोगियो के साथ मुझसे बातचीत की तथा नाटय एव नृत्य के वाद्या ओर वस्त्रो को पहन कर दिखाया।

भोजपुरी भाषी जनपदो मे यह नृत्य बहुत ही प्रचलित ह। समाज मे किसी वर्ग के शादी–विवाह के अवसर पर गॉवो मे इस नृत्य का प्रदर्शन होता है आर जिस गॉव मे नटुआ नाच होता हे उसके अगल–बगल के गॉवो के लोग भी नाच देखने के लिये आ जाते हे।

नटुआ नाच मे गाये जाने वाले गीतो की कोमलता मधुरता तथा सहजता जहॉ एक ओर मन को मोह लेती है वही गीतो का दार्शनिक पक्ष अपना प्रभाव छोडता हे ओर दर्शक मत्रमुग्ध होकर झूम उठता हे तथा सोचने को भी विवश होता है।

नटुआ नृत्य के गीतो मे जहॉ भावो की सरल एव सहज अभिव्यक्ति ह वही पर धार्मिक पौराणिक एव सास्कृतिक आस्थाएँ भी व्यक्त हे। नटुआ नृत्य बहुत ही प्राचीन हे। भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे इस नृत्य की लोकप्रियता का अनुमान इसी से लग जाता हे कि गाजीपुर बलिया देवरिया गोरखपुर आदि जनपदो मे लोकप्रिय तथा प्रचलित गोडऊ नाच तथा जलुआ पर नटुआ नाटय की स्पष्ट छाप दृष्टिगोचर होती हे। सभवत अति प्राचीन सस्कृत ग्रन्थो मे उल्लिखित **नट** से ही नटुआ बना हो। नटुआ नृत्य के समय गाये जाने वाले दो गीत प्रस्तुत है –

**सइयॉ हो दिल बउरा गइले मोरा।**
**मलियवि हो एक बाग लगावय**
**फूल फूले बहुतेरा**
**नाही घर तेरा नाही घर मेरा**

**चीरई लेत बसेरा।**
**सइयॉ हो दिल बउरा गइले मोरा।।**
**\ \ **

**अइसे चलऽ मुनिजी जनकपुर होत चलऽ।**
**ओहिरे जनकपुर मे बडे महादेव हो बडे महादेव।**
**ओनहू के दर्शन करत चलऽ**
**अइसे चलऽ मुनिजी जनकपुर होत चलऽ।**

## धोबही/धोबिया नृत्य

धोबिया नृत्य धोबी जाति का नृत्य हे तथा बहुत ही लोकप्रिय एव प्रचलित है। कसावर छड (छड को डेढताल भी कहते हे) पखावज झॉझ इस नृत्य के मुख्य वाद्य यत्र है। नर्तक घॉघरा अधबहियॉ पगडी तथा कसनहटी (चमडे की पेटी जिसमे छोटी–छोटी घण्टियॉ गूँथी होती है जो कमर हिलाने पर बजती है) का नृत्य के समय प्रयोग करता है। विवाह या अन्य मॉगलिक अवसरो तथा कही–कही बहुत अधिक वृद्ध व्यक्ति की मृत्यु मे भी यह नृत्य होता है।

धोबिया नृत्य के देश प्रसिद्ध नतक एव गायक श्री बाबुनन्दन जी से मिलने मै (गाजीपुर–गोरखपुर मार्ग पर गाजीपुर से करीब पच्चीस किलोमीटर दूर) उनके घर मरदह गॉव मे गया। श्री बाबुनन्दन जी मरदह मे ही रहते है।

श्री बाबुनन्दन जी के नृत्य एव गायन का प्रदर्शन तालकटोरा स्टेडियम नई दिल्ली लखनऊ एव देश–प्रदेश के अन्य बडे शहरो मे हो चुका हे। भारत के महामहिम राष्ट्रपति प्रधानमत्री एव अन्य विशिष्टजनो तथा कला मर्मज्ञो ने आपके नृत्य एव गायन को देखा सुना तथा सराहा ह। श्री बाबुनन्दन जी ने बताया कि उन्होने देश के बाहर लन्दन सूरीनाम हालेण्ड तथा अमेरिका मे भी अपने नृत्य एव गायन का कार्यक्रम प्रस्तुत किया है।

श्री बाबुनन्दन जी ने मेरे आग्रह पर धोबिया नृत्य के अन्तर्गत गाये जाने वाले गीतो को नृत्य की भाव भगिमाओ के साथ सुनाया। नृत्य की भाव भगिमाये ओर गीतो की कोमलता एव मधुरता मन को मुग्ध कर लेती है। उनके द्वारा गाये इस नृत्य गीत की सहज भावानुभूत का आभास पति–पत्नी के सवादात्मक निम्न पक्तियो मे परिलक्षित होता है।

**पत्नी** अरे जाही दिन ननद के भइया सिन्धुरवा डलनऽ ताही दिन से नइहर हो गइलै सपना।
**पति** अरे भर गइलिन नदियॉ उमड गइनऽनरवा कैसे धानी तू जइबू नइहरवा।
**पत्नी** अरे सिकिया चीर–चीर नइयॉ बनइबय ताहि के चढि के पियवा जइबय ओहि परवा
**पति** अरे जब तु जइबू नइहरवा के के हो ले के ना केसे जियरा बुझइबो के के हो लेके ना।
**पत्नी** अरे माई तोहरे घरही बहिनिया तोहार घरही आपन जियरा बुझइया भउजिया ले के ना।
**पति** अरे माई मोर अन्हरी बहिनियॉ ससूरही भउजिया हमरी त सुतैय भइया जी के गोदिया भउजिया हमरी ना।

श्री बाबुनन्दन जी से बाते भी हुइ। श्री बाबुनन्दन जी के मन मे आज की स्थिति तथा आधुनिकता के नाम पर प्रचलित हो रहे विवाह–बारात आदि मॉगलिक अवसरो पर सिनेमा आर्केस्ट्रा आदि के प्रचलन से हल्की सी कडुवाहट तो अवश्य है किन्तु वे पूरी तरह से आश्वस्त हे कि एक न एक दिन अवश्य आयेगा जब लोक नाटय गीत तथा नृत्य पुन समाज मे अपना स्थान ले लेगे। वे कहते हे इ कलजुग आय गइल हवय लेकिन एक न एक दिन सब ठीक होइ जाई ।

श्री बाबुनन्दन जी ने उत्साह उमग ओर प्रसन्नता के साथ हमे अपने गीता एव भावनात्मक प्रदर्शन से रस विभोर कर दिया। बाबुनन्दन जी ने ऋतु परिवर्तन सम्बन्धी गीत गाकर सुनाया जिसकी कोमलता तथा मधुरता ने मन को मुग्ध कर दिया।

बाबुनन्दन जी गायन के समय एक हाथ से झॉझ बजाते है तथा दूसरे हाथ की भगिमाओ से श्रोताओ को इगित कर गीत के मार्मिक पक्ष की ओर आकर्षित करते है। भोजपुरी भाषी क्षेत्र के अन्तर्गत धोबिया नृत्य अपनी लोकप्रियता के कारण सभी वर्ग मे सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। इस नृत्य को कही धोबही आर कही धोबिया नाच कहा जाता हे।

## धोबही/धोबी नाच

भोजपुरी भाषी क्षेत्र के कुछ जनपदो मे धोबी नाच की जो विधा हे वह नाटय नृत्य की विधा हे। इस विधा के अन्तर्गत धोबी नाच मे प्रमुख वाद्य मृदग छड कसावर है। नाचने वाला (लडका) साडी ब्लाउज तथा पेटीकोट पहनता है तथ अपने चेहरे का श्रृगार वस्त्र श्रृगार–प्रसाधनो से करता है। इस नृत्य मे दो नाचने वाले होते हे तथा एक गुजरिया होता हे जिसका वस्त्र लहॅगा ओढनी सलवार समीज होता है तथा कमर मे कसनहटी (घुघुरूओ से गूॅथी पेटी) जिसे वे चोरासी कहते हे बॅधी होती हे तथा कमर हिलाने पर बजती हे तथा एक जोकर होता है (उसे वे जोकर ही कहते हे) जो फटा कोट फटी पैण्ट तथा फटी टोपी पहनता है ओर हाथ मे एक टेढी–मेढी बकुली (लकडी की टेढी–मेढी छडी) लिये होता हे तथा चेहरे पर चूना कालिख पोते रहता है। इस पात्र का काम अपने अभिनय से दर्शको को हॅसाना होता हे। बीच–बीच मे जोकर हास्य पूर्ण बाते भी करता है ताकि दर्शक हॅसे। इस प्रकार यह नृत्य दशको को बहुत ही भाता है। इस नृत्य का एक गीत प्रस्तुत है –

**कहे मन्दोदरि रानी धोखा खइलय बनके रानी**
**अरे रजऊ न बचिहय जिनगिया तोहार**
**लका रहल महादेव क**
**दानव मे तु पललऽ**
**पवन से झाडू मेघ से पानी**
**निस दिन तु भरवइलऽ**
**ले रिसियन क खून भरवइला तूॅ**
**ओही घडा के जनकपुर गडवइला तूॅ**
**वही खून से जन्मे सीता**

**तुहइ खबरिया पउलऽ**
**कउ बार जाके धनुष के अजमइल तूँ**
**धनु धनुसा जमुस न खइलेस**
**मुँह मे कारिख लगउला तूँ**
**अरे रजऊ न बची जिनगिया तोहार**
**जेकर सीता नारी वोसे झगडा रचला भारी**
**अरे रजऊ न बची जिनगिया तोहार**

लालजी धोबी नाच के कलाकार ह तथा उनकी नृत्य मण्डली ह। विवाह आदि मॉगलिक अवसरो पर अचल मे दूर–दूर तक इनकी मण्डली नाच गान क लिय जाती हे।

इनकी नृत्य विधा यही हे। लालजी करमा गॉव (जनपद- सानभद्र) मे रहते हे। लालजी द्वारा प्रस्तुत नृत्य नाटय ही हे। धाबी नाच की यह विधा भी बहुत लोकप्रिय आर प्रचलित हे।

## गोडऊ नाच

गोरखपुर देवरिया बलिया आदि जनपदो मे यह नाच बहुत ही प्रचलित हे। इस नृत्य मे गायन के साथ–साथ प्रहसन भी चलता हे। गोडऊ नाच मे ७–८ व्यक्ति रहते हे। इस नृत्य का वाद्य हुडुक झाल तथा छडिया/छड हे। इस नृत्य का एक प्रमुख पात्र हरबोल कहा जाता ह। हरबोल का कार्य प्रहसन है। वह अपने प्रहसन मे जो कुछ कहता ह उस हरबोलाई कहा जाता हे। उसकी सभी हरकत दर्शको को हॅसाने वाली होती हे। हरबोल के हाथ मे एक मोटा फटा हुआ बॉस का करीब ३ फीट का टुकडा होता है जिसे झरगा कहते हे। हरबोल इस झरगे से अपने प्रहसन क अन्तगत नृत्य के अन्य पात्रो को मारता हे जिससे फट–फट की आवाज आती हे। चूँकि झरगा फटा हुआ बॉस होता ह इसलिये चोट नही लगती। नाचने वाला स्त्री भेष मे पुरूष (लडका) होता हे जो नाचते समय घॉघरा चोली तथा आढनी का प्रयाग करता ह तथा नाक मे झुलनी पहनता हे। हरबोल लाल काले पीले रग ऐसे वस्त्रो को पहनता ह जिसे देखते ही दशक खिलखिला कर हॅस पडते है।

हरबोल चूना कालिख आदि अपन चेहरे पर पोत कर अपनी आकृति बनाता है तथा कमर मे कसनहटी (चमडे की पेटी जिसमे छोटी–छोटी घटियॉ लगी रहती ह) बॉधे रहता ह जो उसके कमर हिलान पर बजती हे और वह कमर हिला–हिला कर प्रदर्शन करता हे। इस नृत्य मे श्रृगार तथा भक्ति के गीतो का गायन होता है तथा बीच–बीच मे हरबोल अपने प्रदर्शन से दशका को हॅसाता रहता ह।

गोडऊ नाच की यह विशेषता हे कि यह नाच मशाल (जिसे वे बोतली कहते हे) की रोशनी मे किया जाता है। बोतल मे मिट्टी का तेल तथा कपडा लपट कर पतली लकडी डालकर जलाते हे। इस प्रकार मशाल जलता रहता है ओर नर्तक नृत्य करते रहत ह।

वर्तमान परिवेश इन नर्तको की ऑख से आझल नही होन पाता। इस सन्दर्भ मे अवकाश प्राप्त शिक्षक **श्री दीप नरायन चौबे जी** ने अपने बचपन म दखे गोडऊ नाच का एक सस्मरण सुनाया। **श्री चौबे जी** बलिया जनपद

के अन्तर्गत ग्राम मासुमपुर थाना–सिकन्दराबाद के रहने वाल हे। **श्री चौबे जी** ने बताया कि अपने बाल्यकाल मे वे ददरी मेला गए थे। वहॉ पर गोडऊ नाच हो रहा था। उस वष गगा जी की धार ददरी की ओर मुड गइ थी। ददरी मेला के दक्षिण की ओर बक्सर की सीमा पडती ह तथा उत्तर की ओर भृगु क्षेत्र (बलिया) ह। इसी सन्दर्भ को लेकर नर्तक गीत गा रहे थे –

**तुरही के रहलू मइया बकसर अररिया**
**तुरि देहलू ना बाबा भृगु क मेडरिया**

## करमा नृत्य

सोनभद्र जनपद के अन्तर्गत रावर्टसगज तहसील का पूर्वी–दक्षिणी भाग तथा दुद्धी तहसील भाषा विज्ञान की दृष्टि से भोजपुरी भाषी क्षेत्र है ओर यहॉ की बोली भोजपुरी हे। इस क्षेत्र मे जनजातियॉ रहती है। करमा जनजातियो का नृत्य ही नही उनकी आस्था तथा विश्वास का प्रतीक भी है।

जनजातियॉ करमदेव ओर करमदेवी का अनुष्ठान पूर्वक आराधना करती है। जनजातियो मे विभिन्न प्रकार की जातियॉ है और अलग–अलग तिथियो पर वे करमदेव एव करमादेवी की आराधना करती है लेकिन करमदेव और करमादेवी पर उन सभी की आस्था हे।

करमदेव और करमादेवी का अनुष्ठान पूर्वक आराधना का पर्व जनजातियो का उल्लास पव है। दीपावली के अवसर पर एक निश्चित अनुष्ठान क अन्तर्गत उल्लास पूर्वक नाचते गाते वे जगल जाते है साथ मे ओझा (पुरोहित) भी जाता है। करम (कदम) वृक्ष को घेर कर वे नाचते हे। ओझा (पुरोहित) कुल्हाडी से एक ही बार मे करम (कदम) वृक्ष की एक डाल काटता है। डाल को जमीन पर नही गिरने दिया जाता बल्कि सात क्वॉरी कन्याएँ ऊपर ही ऊपर उस डाल को लपक कर उठा लेती हे फिर वे डाल को लेकर आती है। निर्धारित स्थान पर डाल को गाड कर अनुष्ठान पूर्वक पूजन होता है। इसके बाद प्रारम्भ होता है करमा नृत्य।

करमा नृत्य ये बराबर करते हे तथा हर मॉगलिक अवसर पर करमा नृत्य होता है। यूँ तो जनजातियो के कई नृत्य है। दुद्धी तहसील मे शैला नृत्य भी जो जनजातियो का नृत्य है देखने को मिला किन्तु करमा नृत्य बहुत ही प्रचलित है और भोजपुरी भाषी क्षेत्रो मे इस नृत्य का प्रचलन है। करमा नृत्य का मुख्य वाद्य मादल है। मादल की थाप पर करमा नृत्य होता हे। करमा नृत्य स्त्री आर पुरूष दोनो मिलकर करते है। एक ओर स्त्रियॉ तथा दूसरी ओर पुरूष होते है। यह सामूहिक नृत्य ह तथा इस नृत्य मे एक पात्र ओझा भी होता है।

अधिकॉश करमा गीतो मे भगवान राम ओर भगवान कृष्ण का महिमागान हे। गीतो की भाषा मे भोजपुरी के बहुत शब्द मिलते है।

इस कथन की पुष्टि इस बहुचर्चित करमा गीत की निम्नलिखित पक्तियो से हो जाती है –

**हे करम देवता हो**
**आज चलउ ॲगना पर ठाढ**

**वनवा मे रहली उदास**
**उतना दिन करम बनवा पतेर रहला**
**आज चलउ अँगना मे ठाढ।**

करमा नृत्य गान के साथ होता है तथा दीपावली से प्रारम्भ होकर वर्षा ऋतु छोडकर वर्ष भर चलता हे। मूल रूप से यह नृत्य कर्म की उपासना पर आधारित है।

## चमरहु/चमरही नृत्य

यह भोजपुरी भाषी क्षेत्र का विशेष नृत्य है। यह जाति विशेष का नृत्य हे जो नृत्य के नाम से ही स्पष्ट है किन्तु अपनी लोकप्रियता के कारण पहले विवाह के अवसर पर सभी जातियो के यहॉ इस नृत्य की मॉग होती थी। ये नृत्य करने के लिए अपना पारिश्रमिक लेते थे और उत्सवो मे नृत्य करने के लिए जाते थे। यह नृत्य सामूहिक रूप से चन्द्राकार खडे होकर आगे–पीछे बढ–घट कर तन्मयता के साथ किया जाता है। इस नृत्य का विशेष वाद्य ढोल है लेकिन इनकी ढोल आम ढोलको से काफी बडी होती हे तथा मोटे चमडे से मढी जाती है जिसके कारण इन्हे हाथ से न बजाकर लकडी की सलाकाओ से पीट–पीट कर बजाया जाता है। साथ ही छड वाद्य का भी इस नृत्य मे प्रयोग होता है। पेरो मे घुनघुना कडा भी नृत्य के समय पहनते हे जो घुँघरूओ का कार्य करता है तथा इनमे से एक नर्तक (कसनहटी) चमडे की पेटी जिसमे छोटी–छोटी घण्टियॉ लगी रहती है बॉधता है। यह नृत्य बहुत मोहक तथा लुभावना है किन्तु आधुनिकता के कारण अब इसका प्रचलन बहुत ही कम रह गया है।

## खटिको का नृत्य (खटिकही)

इस नृत्य को कहीं खटिको का नाच कही खटिकही नाच कहा जाता है। भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे यह नृत्य बहुत ही लोकप्रिय है। यह नृत्य विवाह के समय तथा विशेष उत्सवो मे होता हे। इस नृत्य का मुख्य वाद्य नगाडा ताशा तथा कसावर है।

भोजपुरी भाषी ऑचल मे खटिकही नाच की लोकप्रियता इस बात से ही सिद्ध हो जाती है कि जहॉ यह नृत्य होने लगता है भीड लग जाती है और समाज के हर वर्ग के लोग इस नाच को बडी तन्मयता के साथ देखते है। इस नृत्य के साथ गायन नही चलता केवल नर्तक नाचता हे तथा अपने अग प्रदर्शन से ही भावो को व्यक्त करता है। इस नृत्य को देखने से ऐसा लगता है कि यह अपने प्रतिद्वन्दी को चिढा (जिसे लोक बोली मे बिराना कहते है) रहा है चमकाना मटकाना इस नाच की विशेषता होती है। इस नृत्य मे भाव भगिमाओ के माध्यम से ही नर्तक हास्य भी बिखेरता है। नगाडा की थाप पर यह नृत्य बडा ही मोहक हो उठता है।

## फरही या फरी नृत्य

यह नृत्य अहीर जाति का नृत्य है तथा इसका मुख्य वाद्य नगाडा और कसावर है। इस नृत्य मे भी केवल नृत्य ही होता है और नर्तक अपने सारे मनोभावो को नृत्य के माध्यम से व्यक्त करता है। इस नृत्य मे अगो का प्रदर्शन ही मुख्य है। बीच–बीच मे कूदने उछलने का भी दृश्य होता है। जिससे शारीरिक शक्ति का प्रदर्शन परिलक्षित होता है। इस नृत्य मे भी प्रतिद्वन्दी को ललकारने चिढाने जैसे भावो की अभिव्यक्ति होती है।

विवाह आदि मॉगलिक अवसरो पर यह नृत्य होता है। यह नृत्य वाराणसी आजमगढ गाजीपुर जनपदो मे बहुत प्रचलित है। जहॉ–जहॉ अहीर जाति है वहॉ मॉगलिक अवसरो पर नृत्य देखने को मिलता है। नृत्य की भगिमाऍ हास्य और कटाक्ष की ओर इगित करती है जिसे दर्शक बिना कहे ही समझ जाता है। इस नृत्य मे नगाडे की थाप पर जब नर्तक शारीरिक प्रदर्शन करता है तो दर्शक प्रसन्नता से सराबोर हो जाते है। हास्य भगिमाओ मे सौन्दर्य की अभिव्यक्ति परिलक्षित होती है।

## शैला नृत्य

सोनभद्र जनपद के अन्तर्गत दुद्धी तहसील मे जहॉ जनजातियॉ रहती है शैला नृत्य का आयोजन होता है। यह सामूहिक नृत्य है तथा उत्सव के रूप मे इस नृत्य को किया जाता है। इस नृत्य मे भी मुख्य वाद्य मादल होता है। नर्तक अपने पैरो मे कडा (जो अन्दर से खोखला होता है तथा उसमे लोहे का ककड भरा होता है जिससे पैर के हिलने–डुलने से बजता है) पहनते है या घुँघुरू बॉधते है। साफ–सुथरे कपडे पहन कर तथा डण्डो के टुकडे तथा कमर मे मोर पॅख बॉध कर जब शैला नृत्य प्रारम्भ होता है तो दर्शक अपने आप ठिठक कर खडा हो जाता है। इस नृत्य मे नर्तको के हाथो मे डण्डे के टुकडे होते है। एक दूसरे के हाथो के टुकडो से टकरा कर निकली ध्वनि अनोखे सौन्दर्य का सृजन करती है। वादक नर्तको के मध्य मे होते है। गोलाकार अथवा अर्द्धगोलाकार स्थिति मे आगे–पीछे बढ–हट कर होता। यह नृत्य मनमोहक होता है।

नर्तको के आगे–पीछे बढने–हटने मे एक विशेष प्रकार की लयात्मकता का बोध होता है। नर्तक आगे–पीछे बढते–घटते नृत्य करते हुए गॉव मे घूम–घूम कर नृत्य करते है। गॉव के सम्पन्न लोग इस अवसर पर इन्हे नेग के रूप मे कुछ न कुछ देते है। जनजातियो का यह नृत्य बहुत प्रचलित और लोकप्रिय है। इस नृत्य को जनजातियॉ बडे ही उमग और उत्साह के साथ करती है।

## गौनहारिनो का नाच (घोडचढी नाच)

वाराणसी मिर्जापुर सोनभद्र और आसपास के क्षेत्रो मे घोडचढी नृत्य भी यदाकदा होता है। इस नृत्य का अतीत बहुत ही महत्वपूर्ण है। कभी वाराणसी मे लोलार्क कुण्ड के मेले मे गौनहारिने कजली गाने जाती थी। अपनी पुस्तक काशी अतीत की झलकियॉ मे इन गौनहारिनो के सम्बन्ध मे लिखते हुए श्री रामकृष्ण ने कहा है कि चुस्त चुडीदार पैजामा छीट के किनारे पर गोटा टकी कुर्ती हरी लाल काली नीली पीली मखमल की गोखरू टकी ओढनी मॉथे पर झूठे सलमे सितारे के काम की किश्तीनुमा टोपी जिसके नीचे प्लेटदार चोटी

लटकती थी नाक मे बडी–बडी नथ कान मे चॉदी के भारी–भारी झुमके ऑख मे ढेर सा काजल और दॉत मे मिस्सी मिर्जापुरी डफ सारगी की सगत पर अस्सी के जगन्नाथ मन्दिर से सोनारपुरा तक सजी–बजी चोकियो पर गाती हुई लोलार्क छठ मेला की रौनक थी । ये अपना साजो–सामान परिवार साथ लेकर ये घोडो से चलती थी इसलिए इनका नाम घोडचढी ही पड गया। गायन वादन से ही इनके परिवार का पालन–पोषण होता था। ये घोडो पर चढकर अपने साजो–समान के साथ चल दती थी ओर बाग–बगीचो आदि स्थानो पर डेरा डाल देती थी। मॉगलिक अवसरो पर ये दरवाजो पर जाकर गायन–वादन तथा नृत्य करती थी तथा अपना नेग लेती थी। अब भी कही–कही भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे ये नाचती–गाती दिख पडती हे। साजिन्दे इनके साथ ही चलते हे जो अधिकतर इनके परिवार के सदस्य होते हे।

लोक नृत्यो मे जीवन का उल्लास मुखरित होता हे। उपरोक्त लोक नृत्यो के अतिरिक्त भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे और नृत्य भी प्रचलित थे लेकिन बढती हुई आधुनिक सस्कृति के प्रभाव के कारण प्राय नृत्यो का प्रचलन धीरे–धीरे घटता जा रहा ह। गाजीपुर बलिया दवरिया आदि जनपदो मे भर जाति का डग्गा नृत्य बहुत प्रचलित था लेकिन अब कही नही दिखलाई पडता। इस नृत्य का मुख्य वाद्य डफला नगाडा था। मॉगलिक उत्सवो तथा अवकाश के समय राजभर जाति के लोग यह नृत्य किया करते थे।

कोल एव धरकार जाति के लोग जनजातिया की श्रेणी मे आते हे। ये जातियॉ काफी सख्या मे भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे रहती हे। मॉगलिक उत्सवो के समय कोल जाति के लोग कोलदहकी नृत्य करते हे। इस नृत्य के गीतो मे देवी–देवताओ की स्तुति का वर्णन मिलता हे। इस नृत्य का प्रमुख वाद्य यन्त्र ढोल हे। इसी प्रकार धरकार जाति के नृत्य को धरकरही कहते हे। ये डफला एव धुधका बजाकर नाचते है। ये डफला बजाकर नाचते–गाते भोजपुरी भाषी क्षेत्र के शहरो एव कस्बो मे प्राय आ जाते हे और नाचते तथा गाते हुए भिक्षाटन करते है। मुसहर जाति के लोग भी भोजपुरी भाषी क्षेत्र के अन्तर्गत रहते हे। इसके नृत्य को मुसहरी कहा जाता हे। इस नृत्य का प्रमुख वाद्य हुडुक हे।

नट जाति के लोग भी भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे रहते हे तथा इनका मुख्य व्यवसाय ही खेल दिखाना हे। ये दो बॉस विपरीत दिशाओ मे गाडकर उसमे रस्सी बॉध देते हे तथा उस रस्सी पर चलकर खेल दिखाते है। शारीरिक सन्तुलन इनके खेलो की मुख्य विशेषता है। दो बडी गोली लकडियो पर चलना सर्कस के खेलो जैसे–खेल दिखाना इनके प्रदर्शन का मुख्य अग होता है। शरीर को सन्तुलित रखने की इनकी विधा नृत्य का ही अग है। इसलिए इस कला का भी उल्लेख कर रहा हूँ।

घसिया जनजाति मे डोम कच नृत्य प्रचलित है। इसमे पुरूष ओर महिलाएँ दोनो नृत्य करती है। इस नृत्य का मुख्य वाद्य मादल एव डफला हे। ये वृत्त बनाकर नाचते हे। स्त्री–पुरूष दोनो झूम कर नाचते हे। इस नृत्य की मुद्राएँ बडी ही मनोरम होती है। लेकिन भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे इन नृत्यो का प्रचलन जहॉ घसिया जनजाति के लोग है वही तक सीमित है। सोनभद्र जनपद के दक्षिणी भाग एव दुद्वी तहसील मे इस नृत्य का कही–कही प्रचलन है।

प्राय लोक नृत्यो का विभाजन जातियो के आधार पर हुआ हे। अलग–अलग जातियो के नृत्य अलग–अलग है किन्तु समस्त नृत्यो पर यदि हम सूक्ष्म दृष्टि डाले तो प्रत्येक नृत्य मे एक तत्व मिलेगा। आनन्द और आराधना ही इन लोक नृत्यो की पृष्ठभूमि है।

ज्यो–ज्यो आधुनिक सभ्यता का विस्तार बढ रहा हे त्यो–त्यो लोक नृत्यो का प्रचलन कम होता जा रहा है।

इस सन्दर्भ मे मे एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहता हूँ। एक बारात मे मे उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदश की सीमा पर बसे एक स्थान पर गया था जहॉ जनजातियो की अधिकता हे। वहॉ भी मुझे विवाह के अवसर पर शहरी सस्कृति मिली।

आधुनिक बनने की हमारी लालसा हमे कहॉ ले जाकर छोडेगी। यह कहना अभी कठिन हे लेकिन जो आभास मिल रहा हे उससे लगता हे कि कुछ वर्षो बाद हम कही अपनी अतीत की सस्कृति को भूल न जाये।

लोक नृत्य अन्तरमन की प्रवृत्तियो की व्याख्या तथा उल्लास की परिणिति ह। लोक जीवन की आस्था थिरकन बनकर लोक नृत्यो मे थिरकती है।

# मेले एव त्यौहार

मेले एव त्यौहार हमारी सास्कृतिक विरासत है तथा लोक चेतना के केन्द्र हे। ये न केवल दिशा बोध कराते है अपितु अतीत के द्वार पर दस्तक भी देते है। मेले ओर त्योहार हमारी सस्कृति का इतिहास अपने मे समेटे है तथा हमारी भावनात्मक एकता के आधार स्तम्भ हे। मेले एव त्योहारो की आधार शिला लोक–आस्थाएँ विश्वास तथा इतिहास–बोध की जिज्ञासाएँ ही है। भारतीय सस्कृति मे दूसरी सभ्यताओ एव विचारधाराओ को आत्मसात कर लेने की विलक्षण शक्ति हे। यही कारण है कि कितनी ही बाहरी सभ्यताओ का आक्रमण और अतिक्रमण हुआ। विदेशी आक्रान्ताओ ने हमारी सास्कृतिक स्थापनाओ एव मूल्यो को समाप्त करने का हर सम्भव प्रयास किया किन्तु हमारी मूल सास्कृतिक आधार शिला तिल भर भी न खिसकी बल्कि हमारी सस्कृति ने उन तमाम बाहरी सभ्यताओ विचारधाराओ को जो हमे मिटाने आई थी अपनाकर आत्मसात कर लिया और हमारे मेले एव त्योहारो की कडी मे कुछ और मेले एव त्योहार जुड गये।

भारतीय सस्कृति की गगामयी धारा न जाने कितनी ही सभ्यताओ को अपने मे समेटे कल–कल निनाद करती बह रही हे ओर निरन्तर बहती रहेगी।

हमारे मेले एव त्यौहार धार्मिक पौराणिक एव आध्यात्मिक तथा ऐतिहासिक अवधारणाओ से प्रेरित है तथा धार्मिक विश्वासो और आस्थाओ से ही मेले एव त्योहारो के दिन लोकमानस मे उत्साह एव उल्लास भर जाता है। मेले मे जाने की तैयारियॉ प्रारम्भ हो जाती है। रग–बिरगे परिधानो मे झुण्ड के झुण्ड स्त्री–पुरूष–बच्चे सभी निकल पडते है। मुदित एव प्रफुल्लित जनसमुदाय जहॉ एक दूसरे के सम्पर्क सूत्र मे बॉधता है वही अपनी घरेलू आवश्यकताओ की पूर्ति हेतु सामानो का क्रय–विक्रय भी करता है। सजी–सजाई रग–बिरगी अनेको प्रकार की दुकाने आकर्षण का केन्द्र बिन्दु होती है। कही बच्चो के खिलोनो की दुकाने कही महिलाओ की प्रसाधन सामग्री तो कही नाना प्रकार की मिठाइयो नमकीनो की सजी–सॅवरी दुकाने मनोरजन के साधन खेल–तमाशे नौटकी नाच सरकस के करतब बच्चो के लिए झूले घर गृहस्थी के कामो मे आने वाली सामग्रियॉ ये सभी मिलकर एक ऐसे मनमोहक वातावरण की रचना करते हैं कि व्यक्ति अपनी समस्त क्लान्तियो को भूल जाता है। कही देव दर्शन पूजन पूजा वाद्यो की गूँज भजन कीर्तन मण्डलियॉ वातावरण मे सात्विकता का सचार करती है तो कही गायन वादन के स्वर सुख–शन्तिमयी रसधार प्रवाहित करते है।

कितना मोहक होता है यह दृश्य जब व्यक्ति समुदाय बन जाता है। भीड हर ओर भीड प्रफुल्लित मुदित जनमानस। परिचित एक दूसरे से मिलते अभिवादन करते कुशल–क्षेम पूछते। महिलाएँ अपनी बिछुडी सहेलियो से मिलती एक दूसरे को अॅकवारे मे भर कर भेटती तो कही झूलो पर झूलते प्रफुल्लित बच्चो की टोलियॉ अदभुत दृश्य। जैसे सभी एक हो कही अलगाव नही। लोक मानस को एकता के सूत्र मे पिरोते मेलो को हमारी सास्कृतिक चेतना गर्व से अपना मस्तक ऊँचा उठाए निहारती रहती हे।

उत्तर प्रदेश का भोजपुरी भाषी क्षेत्र हमारी सास्कृतिक चेतना का अग्रदूत रहा है। हमारे मेले और त्यौहार सस्कृति के इतिहास और वर्तमान मे अपना प्रमुख स्थान रखते हे। यूँ तो हमारी सस्कृति मे त्यौहारो की न टूटने वाली श्रृखला है किन्तु कुछ प्रमुख मेले एव त्योहारो का यहॉ उल्लेख है।

## बस्ती

## भदेश्वरनाथ का मेला

बस्ती शहर से तीन–चार किलोमीटर की दूरी पर भदेश्वर नाथ का मेला शिवरात्रि के पर्व पर लगता हे। सरयू नदी के तट पर स्थापित भदेश्वरनाथ की बहुत प्रसिद्धि हे। भगवान शिव की यह मूर्ति स्वय प्रकट हुई है। यह मेला करीब ८ दिन चलता है। बहुत दूर–दूर से श्रद्धालु यहॉ भगवान शिव का दर्शन–पूजन करने आते हे।

## दुर्गा जी का मेला

बस्ती मे चैत्र रामनवमी के दिन दक्खिन दरवाजा मुहल्ले के दुगा मन्दिर का बहुत बडा मेला लगता है। यहॉ दोनो नवरात्र मे नो दिन का मेला लगता हे किन्तु चेत्र मास क रामनवमी के मेले मे बहुत भीड होती है तथा मॉ दुर्गा का दर्शन पूजन करने के लिए श्रद्धालुओ का समुदाय उमड पडता हे।

## मगहर का मेला

खलीलाबाद मे मगहर का मेला लगता है। मगहर मे ही सन्त कबीर ने अपना शरीर छोडा था। यहॉ पर सन्त कबीर की समाधि है। चैत्र मास मे यहॉ मेला तथा उर्स लगता है। सन्त कबीर के हिन्दू और मुसलमान दोनो अनुयायी थे। हिन्दुओ का मेला लगता है तथा मुसलमानो का उर्स होता है। यह बहुत ही प्रसिद्ध मेला है तथा पूरी श्रद्धा के साथ हिन्दू ओर मुसलमान दोनो धर्मावलम्बी इस मेले तथा उर्स मे सम्मिलित होते है।

## सिद्धार्थ नगर

## भरत भारी का मेला

सिद्धार्थ नगर जिला के अन्तर्गत डुमरियागज कस्बे से करीब सात किलोमीटर की दूरी पर भरत भारी का स्थल है। यहॉ भरत भारी का मेला लगता है जो पन्द्रह दिन तक चलता है। कहा जाता है कि यहॉ भरत जी आए थे और यही बने तालाब (पोखरा) मे स्नान किये थे। इस तालाब का जल कभी नही सुखता। श्रद्धालु इसी तालाब मे स्नान करते है। यह मेला कार्तिक पूर्णिमा को प्रारम्भ होता हे।

## बॉसी का मेला

सिद्धार्थ नगर जिला के अन्तर्गत बॉसी का मेला बहुत ही प्रसिद्ध है। माघ अमावस्या के दिन यह मेला लगता है तथा एक माह तक चलता है। यह स्थान राप्ती नदी के तट पर है तथा अनेक पोराणिक कथाऍ इस मेले के सम्बन्ध मे प्रचलित है। इस मेले का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है।

## गोरखपुर

## बाबा गोरखनाथ का मेला

गोरखपुर मे महान योगी सन्त बाबा गोरखनाथ का अति प्रसिद्ध मन्दिर है। यहॉ मकर सक्रान्ति के दिन धार्मिक मेला लगता हे। इस मेले की प्रसिद्धि बहुत दूर–दूर तक हे। नेपाल से भी श्रद्धालु यहॉ दर्शन पूजन एव सत्सग के लिए आते है। यहॉ पर खिचडी चढती है। यह मेला देश का प्रसिद्ध मेला हे।

## तरकुलहा देवी का मेला

गोरखपुर से देवरिया जाने वाले मार्ग पर करीब दस मिलोमीटर जाने पर झगहा ब्लाक के तरकुलहा ग्राम मे तरकुलहा देवी का स्थान हे। इस स्थान पर वर्ष के दोनो नवरात्र मे देवी का मेला लगता हे। यह मेला नवरात्र भर चलता हे। यह मेला अति प्रसिद्ध मेला ह।

## बॉसगॉव का मेला

क्वार के नवरात्र मे दुर्गा जी का मेला अष्टमी एव नवमी तिथि को दो दिन लगता हे। यह बहुत प्रसिद्ध मन्दिर है। इस मेले की विशेषता यह है कि यहॉ मॉ दुर्गा जी का नेत्र वश (उनवल स्टेट) के लोग बेल–पत्र पर अपना रक्त लगाकर चढाते है।

## महराजगज

## लेहढा देवी का मेला

फरिन्दा से २५–३० कि मी दूर लेहडा देवी का मन्दिर हे। यहॉ दोनो नवरात्र मे ६ दिन का मेला लगता है। यह मेला बहुत ही प्रसिद्ध मेला है।

## देवरिया

## सोहनाथ का मेला

सोहनाथ थाना–सलेमपुर जिला देवरिया मे भगवान परशुराम का मन्दिर है। वैशाख सुदी तीज के अवसर पर यहॉ मेला लगता है जो करीब एक माह तक चलता हे। कहा जाता हे कि भगवान परशुराम ने उसी स्थान पर आकर तपस्या की थी तथा आततायियो का नाश करने के लिए व्रत लिया था। यहॉ एक तालाब भी है। विश्वास है कि जो इस तालाब मे स्नान करेगा वह दृढ–निश्चयी होकर अपने उद्देश्य को प्राप्त कर लेगा। सोहनाग सलेमपुर से ३ कि मी की दूरी पर हे।

## बाबा दुग्धेश्वरनाथ का मेला

रूद्रपुर मे बाबा दुग्धेश्वरनाथ का मला शिवरात्रि के दिन लगता ह। श्रद्धालु भग्वान दुग्धश्वरनाथ का दर्शन–पूजन मन्दिर मे जाकर करते हे। यह मला तीन दिन तक चलता ह।

## रामनवमी का मेला

मझौली मे मॉ दुर्गा के मन्दिर मे नवरात्र का मेला लगता हे। श्रद्धालु मॉ दुगा का दशन–पूजन करते ह। यह मेला एक सप्ताह तक चलता हे।

## बरहज का मेला

बरहज पवित्र नदी सरयू के तट पर बसा हे। वरहज अनन्त महाप्रभु की तपोस्थली हे। यहॉ कार्तिक पूणिमा अनन्त चतुर्दशी तथा अमावस्या का मेला लगता ह। अनन्त चतुदशी के अवसर पर लगा मेला तीन दिन तक चलता हे।

## पडरौना

पडरोना जिला के अन्तर्गत पिपरा स्थान पर कार्तिक पूर्णिमा के दिन नहान का मेला लगता ह। यह पडरोना जिला का प्रसिद्ध मेला है।

## बासी का मेला

क्वार माह की पूर्णिमा को बासी नदी क तट पर बासी का मेला लगता हे। यह मेला पडराना जनपद का अति प्रसिद्ध मेला है तथा दूर–दूर से श्रद्धालु इस मेले मे आते हे।

## कुलकुला देवी का मेला

पडरोना जनपद मे कसया से चार किलोमीटर पूर्व चेत्र रामवनवमी पर कुलकुला देवी का मला लगता हे। यह मेला पडरौना जनपद का बहुत ही प्रसिद्ध मला ह। यहॉ श्रद्धालुआ की बहुत भीड होती हे। यह मेला नवरात्र मे प्रारम्भ हो जाता है ओर कइ दिन रहता हे। यह मेला बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता हे।

## बलिया

## ददरी का मेला

बलिया को प्राचीन काल से ही भृगु क्षेत्र कहा जाता हे। यह स्थान महर्षि भृगु का तपोस्थल था। महर्षि भृगु के शिष्य दर्दर मुनि थे ओर दर्दर मुनि के नाम पर ही ददरी का मला लगता हे। यह मेला बहुत ही प्रसिद्ध हे।

यहाँ भृगु आश्रम है तथा भृगु मुनि का मदिर है। उस मन्दिर मे दर्दर मुनि की भी मूर्ति है। कार्तिक पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर यह मेला एक माह तक चलता है। कार्तिक पूर्णिमा को बलिया मे स्नान–पूजन के बाद दही–चूडा खाने की प्रथा है। यह मेला विख्यात मेला है। यह मेला पशुओ की खरीद बिक्री के लिए बहुत प्रसिद्ध है।

## सुदृष्टि बाबा का मेला

बलिया मे सुदृष्टि बाबा बहुत ही प्रसिद्ध सन्त हुए हे। इनके सम्बन्ध मे अनेक लोकोक्तियाँ प्रचलित है। ददरी के मेला के बाद ही इन्ही के नाम पर बैरिया मे सुदृष्टि बाबा का मेला लगता है। यह प्रसिद्ध मेला है।

## सिकन्दरपुर का मेला

सिकन्दरपुर को सिकन्दर लोदी ने बसाया था। कहा जाता हे कि सिकन्दर लोदी जब किला बनवा रहा था तो किला बार–बार गिर जाता था तो उसने जलपा एव कलपा नाम की दो कन्याओ की बलि दी थी। वैशाख पूर्णिमा को उन्ही कन्याओ के नाम पर सिकन्दरपुर मे जलपा–कलपा का मेला लगता है। इस मेले मे विशेष रूप से पशु बिकते है तथा यह मेला पन्द्रह दिन तक चलता है।

## असेगा का मेला

सुखपुरा थाना क्षेत्र के अन्तर्गत असेगा मे शिवरात्रि के दिन मेला प्रारम्भ हो जाता है। यहाँ भगवान शिव का मन्दिर है। इस मन्दिर को शोक–हरण मन्दिर कहा जाता हे। शिवरात्रि के दिन भारी सख्या मे श्रद्धालु यहाँ दर्शन–पूजन के लिए आते है। यह मेला एक सप्ताह तक चलता है।

## रसडा का मेला

नाथ सम्प्रदाय का एक भाग मन्दिर रसडा मे है यहाँ पर नाथ बाबा का मेला क्वार दशमी के दिन लगता है। यह मेला प्रसिद्ध मेला है तथा यहाँ दूर–दूर से श्रद्धालु दर्शन–पूजन के लिए आते है।

# गाजीपुर

## कामाक्षा माई का मेला

गाजीपुर जिला के अन्तर्गत गहमर मे कामाक्षा धाम है तथा यहाँ चैत्र नवरात्र मे मेला लगता है। यह मेला गाजीपुर का ही नही अपितु पास पडोस के अन्य जनपदो मे भी प्रसिद्ध है। चैत्र नवरात्र मे इस मेले मे अपार भीड होती है।

कहा जाता है कि मॉ की यह मूर्ति पहले फतेहपुर सीकरी मे स्थापित थी तथा वहॉ उनका पूजन–आराधन होता था। खनवा के ऐतिहासिक युद्ध मे राणासागा की जब पराजय हुई तो उनकी सेना मे भगदड मच गयी। बाबर की फौज ने युद्ध मे राणासागा की फोज तथा उनका साथ देने वाले राजाओ सामन्तो तथा सरदारो का पीछा किया। फतेहपुर सीकरी के राजाधाम सिह जूदेव जो राणासागा का युद्ध मे साथ दे रहे थे उनका भी पीछा किया। राजाधाम सिह अपने राज्य पुरोहित गगेश्वर उपाध्याय तथा दीवान बीर सिह ठाकुर के साथ देवी की मूर्ति भी साथ मे लेकर भाग निकले। उन दिनो गहमर का क्षेत्र घना जगल था। धाम सिह जूदेव और उनके साथी इसी गहमर के जगल मे छुप गये। बाद मे उस पर कब्जा भी कर लिया।

जनश्रुति के अनुसार भगवती ने धामसिह जूदेव को गहमर मे ही अपनी मूर्ति स्थापित करने के लिए स्वप्न दिया तथा स्वप्न मे मूर्ति स्थापित करने के लिए स्थान भी निर्देशित किया। स्वप्न मे निर्देशित स्थान पर धाम सिह जूदेव ने भगवती की मूर्ति स्थापित की तथा उनकी पूजा एव आराधना प्रारम्भ हो गई और तभी से वहॉ पर भगवती की पूजा और आराधना के लिए श्रद्धालुओ का आना–जाना लगा रहता हे। प्रतिवर्ष चैत्र के नवरात्र मे यहॉ पर मेला लगता है जो कई दिन तक चलता है। यहॉ की एक विशेषता यह हे कि मॉ के दरबार मे सीधे नही जाया जाता बल्कि देहरी पर रूककर गाते हुए मन्दिर मे जाने की परम्परा हे।

गाजीपुर जनपद मे यूँ तो कई मेले लगते हे लेकिन यह मेला बहुत ही प्रसिद्ध है यहॉ पर चैत नवरात्र के समय श्रद्धालुओ का ताता लगा रहता है। क्वार नवरात्र मे भी यहॉ श्रद्धालुओ की काफी भीड होती है। गहमर के लोग बाहर रहने पर भी नवरात्र के समय दर्शन के लिए पहुॅचने का प्रयास करते है।

## यमदग्नि आश्रम का मेला

गाजीपुर जनपद के अन्तर्गत जमनियॉ मे गगाजी के तट पर यमदग्नि ऋषि का आश्रम है। कार्तिक पूर्णिमा को यहॉ मेला लगता है। यह मेला बहुत ही प्रसिद्ध है। यहॉ पर परशुराम जी का भव्य मन्दिर है। अक्षय तृतीया को यहॉ मेला लगता है। श्रद्धालु दूर–दूर से आकर यहॉ गगा स्नान कर दर्शन–पूजन करते है।

## मौनी बाबा का मेला

गाजीपुर जिला के अन्तर्गत गगा नदी के तट पर बसे चोचकपुर मे मौनी बाबा का मेला लगता है। यहॉ भगवान शिव का मन्दिर है तथा सन्त मौनी बाबा का आश्रम हे। यहॉ पर मेले के दिन दूर–दूर से साधु–सन्त आते है। यह मेला कार्तिक पूर्णिमा को लगता है तथा एक सप्ताह तक चलता है इस मेले मे काफी चहल–पहल रहती है।

## शेख सम्मन का उर्स

सैदपुर मे शेख सम्मन की मजार है। मार्च–अप्रैल के माह मे यहॉ उर्स का मेला लगता है। इस उर्स की विशेषता यह है कि हिन्दू और मुसलमान दोनो सम्प्रदाय के लोग भारी सख्या मे आते है। यह मेला तीन दिन तक चलता है।

## आजमगढ
## गोविन्द साहब का मेला

आजमगढ फैजाबाद सीमा पर गोविन्द साहब का मेला लगता है। यह मेला बहुत ही प्रसिद्ध मेला है। यहॉ पर खिचडी चढाई जाती है। जन विश्वास है कि प्रसाद का अन्न भण्डार मे रख देने पर भण्डार भरा रहता है। इस मेले मे काफी भीड होती है। यहॉ सन्त गोविन्द साहब की समाधि है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन यह मेला प्रारम्भ होता है। गोविन्द साहब प्रसिद्ध सन्त थे और यही रहते थे। इस मेले मे दूर–दूर से सन्त आते थे। यह मेला एक माह तक चलता है।

## मऊ
## देवलास का मेला

कार्तिक शुक्ल पक्ष सुदी छठ को देवल बाबा का मेला लगता है। देवलास मे महर्षि देवल मुनि का मन्दिर है। मुहम्मदाबाद गोहना से घोसी रोड पर करीब आठ किलोमीटर पर देवलास स्थान है। जनश्रुति है कि महर्षि विश्वामित्र के साथ भगवान राम जब अयोध्या से जा रहे थे तो यही महर्षि देवल के आश्रम पर विश्राम किये थे। यह मेला अति प्राचीन एव ऐतिहासिक है। यह मेला बीस दिन तक लगा रहता है। इस मेले मे दूर–दूर से श्रद्धालु आते है।

## वाराणसी

वाराणसी के बारे मे यह लोकोक्ति बहुत ही प्रचलित है कि सातवार नौ त्यौहार तात्पर्य यह हे कि वाराणसी मेलो और त्यौहारो का स्थल है। वाराणसी मे मेले एव त्योहारो की धूम मची रहती है। उनमे से कुछ प्रसिद्ध और प्रचलित मेले

## रथ-यात्रा का मेला

यह मेला अषाढ द्वितीया से चतुर्थी तक लगता है। रथयात्रा का मेला काशी का प्रसिद्ध मेला हे। इस मेले की पृष्ठभूमि के सम्बन्ध मे कहा जाता है कि पुरी के प्रधान पुजारी पुरी के राजा से रूष्ट होकर काशी चले आए तथा उन्होने प बेनीराम के सहयोग से रथयात्रा प्रारम्भ किया। यह मेला अषाढ द्वितीय से चतुर्थी तक लगता है। इस मेले की विशेषता यह है कि यहॉ स्थानीय कारीगरो ओर शिल्पियो के हाथ की बनी वस्तुओ की दुकाने भारी मात्रा मे लगती है तथा दगल जोडी ओर गदा भॉजने का प्रदर्शन होता हे। भगवान जगन्नाथ जी का रथ अस्सी से श्रद्धालुओ द्वारा यहॉ खीच कर लाया जाता है। काशी का यह मेला बहुत ही प्रसिद्ध है।

## लोलार्क छठ का मेला

लोलार्क छठ सृष्टि महोत्सव है। भदेनी मुहल्ल मे लोलाक कुण्ड ह। पास ही शिवाला मुहल्ले मे हयग्रीव मन्दिर है। मन्दिर के पश्चिम हिगुआ तालाब था। भाद्रपद शुक्ल छठ को लोलार्क कुण्ड मे स्नान करने क बाद हिगुआ तालाब मे स्नान करके लोग हयग्रीव भगवान का दशन पूजन करते थे। अब लोलार्क कुण्ड मे स्नान करने के बाद गगा स्नान कर भगवान जगन्नाथ का दर्शन पूजन करते ह। लोक विश्वास हे कि लोलार्क कुण्ड मे स्नान करने से स्त्रियो को सन्तान उत्पन्न होती हे। भादो छठ के दिन यह मला लगता हे। पहले यहॉ गाने वालो का दल कजली गाते हुए इकट्ठा होता था। लोलार्क छठ की नान खटाइ बहुत पसिद्ध हे। हिगुआ तालाब के निकट ही बाबा कीनाराम का स्थल है। छठ का मेला बहुत ही ख्याति प्राप्त मला हे।

## लक्ष्मी कुण्ड का मेला

भादो अष्टमी से प्रारम्भ होकर यह मेला सोलह दिन तक चलता हे। इन्ही दिनो नगर मे राम लीलाऍ भी प्रारम्भ हो जाती है। लक्ष्मी कुण्ड मे स्नान करके दर्शन--पूजन किया जाता है। यह वाराणसी का बहुत ही प्रसिद्ध मेला है। भादो अष्टमी को ही रामकुण्ड ओर लक्सा त्रिमुहानी पर अपनी सन्तान की कुशलता के लिए महिलाऍ निमूत वाहन अष्टमी मनाती हे। यह मेला सोलह दिन तक चलता ह। इसलिए इसे सोरहिया मेला भी कहा जाता है।

## जागेश्वर नाथ का मेला

हेतमपुर ग्राम मे बाबा जागेश्वर नाथ का मेला महाशिवरात्रि के अवसर पर एक सप्ताह के लिए लगता हे। जनश्रुति के आधार पर कहा जाता है कि एक चरवाहा पत्थर समझ कर वही परास की सोर रस्सी बनाने के लिए कुल्हाडी की मूठ से ठोक पीट रहा था तभी पत्थर पर रक्त दिखलाई पडा। उसने वही कुल्हाडी चला दी। कुल्हाडी लगते ही वहॉ से रक्त की तेज धार वह निकली। वह चरवाहा डर कर भाग खडा हुआ। काशी के राजा को जब यह समाचार मिला तब उन्होने वही शिव मन्दिर बनवाया ओर आराधना प्रारम्भ हो गई। यहॉ भूमि से अपने आप निकला शिवलिग है कही से लाकर स्थापित नही किया गया है।

## लतीफ शाह का मेला

चकिया के पूर्व कर्मनाशा नदी के बॉध के समीप लतीफ शाह की मजार हे। प्रतिवर्ष भादो शुक्ल पचमी को वहॉ उर्स लगता है। हिन्दू, मुसलमान सभी इस उर्स के मेले मे सम्मिलित होते है। यह चकिया का प्राचीन मेला है तथा भारी भीड होती है। **भगवान श्रीकृष्ण की बरही का मेला**– सायकाल वही भीड चकिया लौटती हे ओर चकिया मे भगवान श्रीकृष्ण जी की मूर्ति का रथ निकलता है तथा भगवान कृष्ण की बरही मनाई जाती है। वहॉ पर कजली--बिरहा और कुश्ती का दोर चलता है। भारी भीड होती ह दूर--दूर से दगल मे सम्मिलित होने के लिए कजली बिरहे के अखाडे तथा पहलवान आते हे।

## रामगढ कीनाराम स्थल का मेला

वाराणसी जनपद के अन्तगत चन्दोली तहसील के रामगढ मे बाबा कीनाराम का स्थल है। ललही छठ के अवसर पर यहाँ मेला लगता ह। यह मेला बहुत ही प्रसिद्ध हे।

## भदोही

## चकवा महावीर का मेला

भदोही जनपद के मुख्यालय ज्ञानपुर से करीब ८ किलोमीटर चकवा महावीर का मेला सावन माह के अन्तिम मगलवार को लगता है। यहाँ मन्दिर एव तालाब हे। यह मेला बहुत प्रसिद्ध मेला है तथा दूर–दूर से दर्शनार्थी यहाँ दर्शन पूजन करने आते हे।

## गाजीमियॉ का मेला

यह मेला भदोही का बहुत ही प्रसिद्ध मेला हे। जेठ माह के पहले रविवार को भदोही मे गाजीमियॉ का उर्स लगता है। इस उर्स के मेले मे हिन्दू ओर मुसलमान दोनो सम्मिलित होते है तथा यह मेला तीन दिन तक चलता है।

## धनुष यज्ञ की बारी का मेला

भदोही जनपद के अन्तर्गत मोढ स्टेशन से २ कि मी दूर धनुष यज्ञ की बारी का मेला अगहन पूर्णिमा को लगता है तथा तीन दिन तक चलता ह। इस मेले मे घुडदोड भेडो की कुश्ती आदि होती है तथा नाच–गाने का भी कार्यक्रम होता है। इस मेले मे धनुष यज्ञ भगवान राम की खिचडी तथा विदाई की लीला होती है। भगवान राम की बारात लगती है। बारात मे बाजा–गाजा के साथ सजा–सजाया हाथी भी रहता हे। पहले दिन धनुष यज्ञ की लीला रात्रि मे दूसरे दिन खिचडी करीब ४ बजे दिन तथा विदाई की लीला तीसरे दिन सुबह के समय होती है। इस मेले मे दूर–दूर के कत्थक भी नृत्य के लिए आते हे। यहाँ हनुमान जी का मन्दिर हे। श्रद्धालु मन्दिर मे जाकर दर्शन पूजा करते है। यह भदोही जनपद का अति प्रसिद्ध मेला हे।

## जौनपुर

## त्रिमुहानी का मेला

जौनपुर जिला के अन्तर्गत जलालपुर के निकट सई एव गोमती नदी के सगम पर कार्तिक पूर्णिमा को एक दिन का मेला लगता है। इस मेला को त्रिमुहानी का मेला कहा जाता हे तथा यह जौनपुर जनपद का प्रसिद्ध

मेला है। यहाँ श्रद्धालु कार्तिक पूर्णिमा के दिन सई एव गामती नदी के सगम पर स्नान करने बडी सख्या मे आते है।

## त्रिलोचन महादेव का मेला

वाराणसी जौनपुर रोड पर केराकत तहसील के अन्तर्गत त्रिलोचन महादेव का शिवरात्रि के दिन बहुत बडा मेला लगता है। त्रिलोचन महादेव का प्राचीन भव्य मन्दिर है तथा उन्ही के नाम पर स्थान का नाम भी त्रिलोचन महादेव पडा है।

यह मेला प्राचीन मेला है। शिवरात्रि के दिन भारी सख्या मे श्रद्धालु भगवान शिव का यहाँ आकर दर्शन–पूजन करते हे। यह जौनपुर जनपद का प्रसिद्ध मेला हे।

## शीतला चौकिया का मेला

जौनपुर जक्शन रेलवे स्टेशन से पूर्व की ओर करीब ३ किलोमीटर की दूरी पर गोमती नदी के निकट मॉ शीतला का बहुत ही प्राचीन तथा ऐतिहासिक महत्व का मन्दिर हे। यह स्थान शीतला चौकिया के ही नाम से प्रसिद्ध है। यहॉ पर दोनो नवरात्रो मे ६ दिन का मेला लगता है। इस मेले मे भारी भीड होती हे। दोनो नवरात्रो मे दूर–दूर से यहॉ श्रद्धालु आकर मॉ शीतला का दर्शन–पूजन करते है। इस मेले मे आने वाले बहुत से लोग लडके एव लडकियो के विवाह की भी चर्चा चलाते हे तथा तय करते है। इस मेले की बहुत ही ख्याति एव मान्यता है।

## मीरजापुर (चुनार)
## दुर्गा जी का मेला

यह स्थान चुनार नगर से दो किलोमीटर दूर स्थित है। यह मन्दिर विन्ध्य गिरि–श्रेणियो की मनोहारी प्राकृतिक छटा के मध्य मे है। यहॉ भगवती दुर्गा की स्वय प्रकट प्रतिमा है। हजारो वर्षो से यह स्थान सिद्ध साधको की तपोभूमि है। देश के इक्यावन प्रधान शक्ति पीठो मे यह एक शक्ति पीठ है। दोनो नवरात्रो मे यहा श्रद्धालुओ की भारी भीड होती है तथा सावन के प्रत्येक मगलवार को यहॉ मेला लगता है। यहॉ दूर–दूर से श्रद्धालुओ भक्तो एव साधको तथा दार्शनार्थियो का समुदाय पूजन–दर्शन के लिए आता है।

## शिव शकरी धाम का मेला

चुनार से करीब ८ किलोमीटर दूर इस स्थल पर भगवती पार्वती की मूर्ति स्थापित है। यह प्राचीन स्थल है। दोनो नवरात्रो मे यहॉ दार्शनार्थियो की भीड लगी रहती है। बासन्तिक नवरात्र मे नवमी दशमी एव एकादशी को तीन दिनो का यहॉ मेला लगता है। यह स्थल मीरजापुर–वाराणसी मार्ग पर है। क्षेत्र मे शिव–शकरी धाम की देवी पार्वती की बडी मान्यता है।

# अदलपुरा मे शीतला जी का मेला

वाराणसी चुनार घाट पर करीब ५ किलामीटर दूर यह स्थान चुनार से गगा पार बसा है। यहॉ गगा के तट पर निर्मित विख्यात मॉ शीतला का मन्दिर ह। वष क दानो नवरात्रो मे बहुत बडी सख्या मे श्रद्धालुओ एव दर्शनार्थियो की भीड लगी रहती हे। यहॉ बहुत वडो सख्या मे लोग दर्शन–पूजन हेतु आते हे। यहॉ दोनो नवरात्रो मे प्रतिपदा से एकादशी तक मेला लगता ह।

# हजरत कासिम सुलेमानी की दरगाह

हजरत कासिम सुलेमानी का जन्म सन १५४६ इ मे पेशावर म हुआ था। यह मुगल बादशाह अकबर के समकालीन थे। कुछ लोगो के कहने मे आकर बादशाह अकबर इनके विरूद्ध हो गया था तथा इनकी गतिविधियो को सीमित कर दिया था। अकबर की मृत्यु क पश्चात बादशाह जहॉगीर भी इनसे अप्रसन्न रहा ओर बाबा को सन १६०६ ई मे गिरफ्तार करके चुनार के किले मे भेज दिया। तब तक बाबा की चमत्कारी शक्तियो की प्रसिद्धि हो चुकी थी। जब बाबा की चमत्कारी शक्तिया का पता बादशाह जहॉगीर को चला कि बाबा के नमाज अदा करते समय हथकडियॉ अपने आप खुल जाया करती ह ता उसने बाबा को छोड देन की पेशकश की किन्तु बाबा ने बादशाह जहॉगीर की इस पेशकश को अस्वीकार कर दिया तथा अपन मृत्यु की भविष्यवाणी भी कर दी। चुनार मे बाबा की मृत्यु गगा के किनारे हुइ। वही पर बादशाह जहॉगीर ने बाबा के पुत्र मुहम्मद वासिल को बिना कर के ३० बीघा जमीन दी। इसी स्थान पर वाबा कासिम सुलेमानी का खूबसूरत मकबरा बना हे। बाबा के पुत्र मुहम्मद वासिल का भी यहॉ मकबरा ह। बाबा कासिम सुलेमानी की दरगाह पर प्रत्येक वर्ष दो बार मेला लगता है। यहॉ नवम्बर–दिसम्बर मे उर्स लगता ह। जा तीन दिना तक चलता हे ओर दूसरी बार चेत माह के पहले वृहस्पतिवार से जोडने पर जो पॉचवा वृहस्पतिवार पडता हे उसी वृहस्पतिवार को मेला लगता ह। इसे धोबिया मेला कहा जाता है। बाबा की मजार पर हिन्दू आर मुसलमान दोना काम के लोग जाते हे ओर फूल तथा चादरे चढाते है।

# राम सरोवर का मेला

चुनार नगर से करीब तीन किलोमीटर दूर विन्ध्य पर्वत की श्रृखलाओ के बीच स्थित यह स्थान बहुत ही मनोरम तथा मोहक हे। प्राकृतिक सोन्दर्य से परिपूर्ण इस स्थल पर करीब सो वर्षो से यह मेला लग रहा हे। इस मेले का प्रारम्भ चुनार के ही जमीदार जोशी परिवार द्वारा किया गया। इस मेले मे पशु बिकने के लिए आते हे। फागुन सुदी द्वितीया से प्रारम्भ होकर रगभरी एकादशी तक चलने वाल इस मेले का अतीत ऐश्वर्यशाली रहा हे। इस मेले मे बडी रोनक रहती थी। तथा बड–वडे रइस इस मेले मे आते थे। मोज–मस्ती का आलम छाया रहता था। आज भी यहॉ मनोरजन के लिए नोटकी खल विभिन्न प्रकार क तमाशे होते हे। रगभरी एकादशी क दिन घुडदौड तथा विभिन्न प्रकार के खेलो का आयोजन होता ह। यहॉ रगभरी एकादशी को ही तालाब के किनारे बने मन्दिर मे भगवान शिव का श्रृगार होता हे तथा श्रद्धालु भगवान शिव का दर्शन करते हे। यह मेला बहुत ही प्रसिद्ध है।

## अहरौरा दुर्गा जी का मेला

मीरजापुर जिला के अन्तर्गत अहरोरा मे कृष्ण जन्माष्टमी के तीसरे दिन दशमी को ठाकुर जी के मन्दिर से ठाकुर जी का रथ निकलता हे ओर रात्रि मे दुगा जी के मन्दिर पर पहुँचता ह। वहाँ पूरी रात कजली होती है। कजली के अखाडे पहुँचते हे ओर प्रतियोगिता (कजली दगल) होती हे। दूसरे दिन २ बजे तक मेला लगा रहता है। अपार जन समूह दर्शन–पूजन एव कजली सुनने के लिए उमड पडता हे। करीब ३ बजे दिन ठाकुर जी का रथ बावन भगवान के मन्दिर के पास जाकर रुकता है। वहाँ करीब साय ६ बजे तक कुश्ती (दगल) हाती है। दूर–दूर के बडे–बडे पहलवान आत हे। इसके बाद भगवान का रथ कन्हेयालाल के गोला मे जाकर रुकता है। वहाँ कजली गायन की प्रतियोगिता होती ह। कजली क नामी–गिरामी अखाडे भाग लते ह फिर रथ सहुआइन की कोठी पर पहुँचता है। वहाँ रुक कर तीसरे दिन अपने स्थान पर (मन्दिर) पहुँचता हे। यह अहरोरा का बहुत ही प्रसिद्ध मेला है। यह मेला बहुत लाकप्रिय मला हे।

## सोनभद्र

## गौरीशकर का मेला

सोनभद्र जनपद मे रावर्टसगज से करीब ८ किलोमीटर पश्चिम गौरी शकर मे शिवरात्रि के दिन गोरी शकर का मेला लगता है। यहाँ का मेला अति प्राचीन हे। गोरी–शकर मे भगवान शिव का मन्दिर हे। इस मेले मे भारी भीड होती है। गोरी शकर का मेला बसन्त पचमी को एक दिन तथा शिवरात्रि का मेला एक सप्ताह रहता है। गौरी शकर के मैले मे दूर–दूर से श्रद्धालु आते हे। इस मेले मे तेल ओर गुड से बनी जिलेबी बहुत बिकती हे। शिवरात्रि मे लगने वाले गोरी शकर के मल मे बाहर से खेल तमाश वाले आते हे।

## बरैला का मेला

सोनभद्र जनपद मे रावर्टसगज स करीब २ किलोमीटर पश्चिम बरैला मे भगवान शिव का प्राचीन मदिर हे। यहाँ की मूर्ति बहुत ही प्राचीन हे। बसन्त पचमी तथा शिवरात्रि दोनो पर्वो पर यहाँ एक दिन का मेला लगता हे। बरेला मे महिलाओ की सख्या अधिक हाती हे।

## नलराजा का मेला

रावर्टसगज से पूर्व करीब २५ किलोमीटर दूर नलराजा मे भगवान शिव का मन्दिर है। यहाँ प्रचलित है कि अगर कोई व्यक्ति शिवलिग गर्व के साथ अपने बॉहो मे भरना चाहे तो नही भर सकता और यदि विनम्रता एव श्रद्धा से बॉहो मे भरना चाहे तो भर लेगा। बसन्त पचमी एव शिवरात्रि के अवसरो पर यहाँ मेला लगता है। यह बहुत ही प्रसिद्ध स्थल हे।

## कण्डा कोट का मेला

कण्डा कोट बहुत ही प्रसिद्ध स्थल ह तथा पुरातत्त्व की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। यहॉ भी शिवरात्रि को मेला लगता हे। श्रद्धालु आस्था एव श्रद्धा से पहुँचत हे। यहॉ शिव का मदिर पहाड की ऊँचाई पर बना हुआ है। यह स्थल रावर्टसगज से १०–१५ किलोमीटर दूर ह तथा वहॉ जान के लिये कच्चा रास्ता हे।

## गोठानी का मेला

यह स्थल भी पुरातत्त्व की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हे यहॉ भी शिवरात्रि एव नवरात्र मे श्रद्धालुओ का आगमन होता है। यह स्थल बहुत ही श्रद्धा के साथ देखा जाता हे तथा यहॉ जनजातियॉ बडी सख्या मे पहुँचती है। इस स्थान पर आने–जाने का साधन स्वय ही करना पडता ह। रास्ता कच्चा हे।

## ज्वालामुखी देवी का मेला

सोनभद्र जनपद के अन्तर्गत दुद्धी तहसील मे विद्युत परियोजना क्षेत्र शक्तिनगर मे ज्वालामुखी देवी का विख्यात मदिर है। दोनो नवरात्र मे यहॉ मेला लगता हे। दूर–दूर से भक्त जन आते है और पूजन–आराधना करते है। ज्वालामुखी देवी की बहुत मान्यता हे तथा यहॉ जनजातियॉ भी बडी सख्या मे आती हे। इस मेले मे प्रदेश से सटे मध्य प्रदेश से दर्शनार्थी आते हे।

## मऊ का मेला

सोनभद्र जनपद मे रावर्टसगज नगर से करीब १५ किलोमीटर पूर्वी–दक्षिणी कोने की ओर विजयगढ किले के करीब जगलो से घिरा मऊ गॉव बसा हुआ हे। यहॉ भगवान शिव का मन्दिर हे। यह क्षेत्र पुरातत्व की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। यहॉ अति प्राचीन दव मूर्तियॉ ह। शिवरात्रि के दिन यहॉ मेला लगता है। यह मेला क्षेत्र का बहुत प्रचलित मेला हे।

## अमलामाई का मेला

रावर्टसगज से दक्षिणी पूर्वी कोने की ओर ३०–३५ किलोमीटर दूर जगल के मध्य अमला धाम है। यहॉ दोनो नवरात्र मे मेला लगता है। यह बहुत ही प्रसिद्ध स्थल है। दूर–दूर से श्रद्धालु नवरात्र मे दर्शन एव आराधना के लिए आते है।

## मीराशाह बाबा का उर्स

रावर्टसगज तहसील के अन्तर्गत विजयगढ दुर्ग पर मीरा शाह बाबा की मजार है। यहॉ पर अप्रैल के महीने मे उर्स का मेला लगता है। इस उर्स मे दूर–दूर से भक्तगण आते हे। रात मे कौव्वाली होती हे। यह स्थल पहाड के ऊपर काफी ऊँचाई पर है। स्थानीय लोग इसे मीराशाह बाबा का उर्स कहते है। इस उर्स के मेले मे हिन्दू और मुसलमान दोनो जाते है। अपनी पुस्तक सोन के पानी का रग मे भी श्री देव कुमार मिश्र ने विजयगढ

दुर्ग पर सन्त सैय्यद जैनुल आब्दीन की मजार होने के सम्बन्ध मे उल्लेख किया हे। श्री देव कुमार मिश्र ने लिखा है कि सन्त सेय्यद जैनुल आब्दीन शेरशाह सूरी के समय मे थे और इनकी कृपा से बिना रक्तपात के शेरशाह सूरी ने किले पर कब्जा कर लिया था।

विजयगढ दुर्ग ऐतिहासिक स्थल हे। विजयगढ के ऊपर रामसागर तालाब मे सदैव पानी रहता है। विजयगढ दुर्ग का पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान हे। विजयगढ किले पर पहुँचने के लिए लम्बी चढाइ चढनी पडती है। मुख्य द्वार तथा पीछे खिडकी की ओर से जाने का रास्ता हे।

## राम नवमी

राम नवमी हिन्दुओ का पवित्र एव महत्वपूर्ण पर्व है। चेत्र शुक्ल नवमी को यह पर्व पडता है। चैत्र शुक्ल नवमी को अयोध्या नरेश महाराजा दशरथ एव महारानी कोशिल्या के पुत्र के रूप मे भगवान श्री राम ने जन्म लिया था। भगवान राम को हिन्दू विष्णु का अवतार मानते हे। भगवान राम ने लकाधिपति राक्षसराज रावण का वध किया था। यह पर्व अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है क्योकि इसी दिन राक्षसो का वध कर आसुरी प्रवृत्तियो पर विजय प्राप्त कर लोक मगल के लिये दैवी प्रवृत्तियो के उदय हेतु भगवान श्री राम का अवतार हुआ था।

भगवान श्री राम ने अपने कार्यों से अनेक उदाहरण समाज के सामने प्रस्तुत किये है। महर्षि विश्वामित्र महाराज दशरथ से राक्षसो के उत्पीडन से ऋषियो को बचाने तथा उनकी रक्षा करने के लिये श्री राम को मॉग कर ले गए। भगवान श्री राम के साथ लक्ष्मण जी भी महर्षि विश्वामित्र के साथ गए। रास्ते मे ही जब भगवान राम लक्ष्मण सहित विश्वामित्र जी के साथ जा रहे थे तो ताडका नाम की राक्षसी मिली जिसका भगवान राम ने वध किया।

ऋषियो को राक्षस यज्ञ नही करने देते थे। जब महर्षि विश्वामित्र ने यज्ञ प्रारम्भ किया तभी मारीच नाम का राक्षस यज्ञ विध्वस करने के लिये आ पहुँचा। भगवान राम ने अपने एक ही वाण से मारकर उसे समुद्र के पार फेक दिया फिर सुबाहु नाम का राक्षस आ गया। भगवान राम ने उसका वध कर दिया। इस प्रकार राक्षसो का सहार कर भगवान राम ने ऋषियो की रक्षा की तथा उन्हे अपना यज्ञ पूर्ण करने का अवसर दिया।

विश्वामित्र जी के साथ लक्ष्मण सहित श्री राग जनकपुर गए ओर वहॉ जाकर शिव धनुष तोडा फलस्वरूप श्री राम का विवाह सीता जी से हुआ क्योकि महाराज जनक ने प्रतिज्ञा की थी कि जो शिव धनुष तोडेगा उसी के साथ सीता का विवाह होगा।

अयोध्या लौटने पर महाराज दशरथ ने भगवान श्री राम का राज्याभिषेक करने का निश्चय किया। अभिषेक की जब तैयारी हो रही थी उसी समय महारानी कैकयी ने महाराज दशरथ से श्रीराम को बनवास देने का वर मॉगा। महाराज दशरथ ने महारानी कैकेयी को दो वर मॉगने का वचन दिया था जिसे महारानी कैकेयी ने उसी समय मॉगा। लाख समझाने पर भी वह नही मानी। जब भगवान राम को यह पता चला कि महारानी कैकेयी ने उनके लिये वनवास का वर मॉगा है तभी भगवान राम वन जाने के लिए तैयार हो गए। वन मे भगवान श्री राम के साथ सीता जी तथा लक्ष्मण जी भी गए।

एक दिन सूपर्णखा नाम की राक्षसी जो राक्षसराज रावण की बहन थी अपनी माया से भेष बदल कर आई ओर भगवान राम या लक्ष्मण से विवाह करन के लिए हठ करने लगी। बहुत समझाने पर भी जब वह नही मानी ता लक्ष्मण जी न उसकी नाक काट ली। वह रावण के पास पहुँच कर रोने लगी तथा उसने अपनी दुर्दशा का वर्णन किया जिस पर रावण ने बदला लने की भावना स मारीच को स्वर्ण–मृग बनकर जाने के लिये कहा। मारीच स्वण–मृग बनकर वहॉ गया। उसे देखते ही सीताजी ने भगवान राम से उसका आखेट करने का निवेदन किया। भगवान राम आखेट के लिए जब धनुष–वाण लकर उठे तो स्वर्ण–मृग भागकर दूर चला गया। भगवान राम भी स्वर्ण–मृग के पीछे–पीछे दूर निकल गए। जब भगवान श्री राम ने स्वण–मृग को मारा तभी वह लक्ष्मण–लक्ष्मण कहकर चिल्ला पडा।

लक्ष्मण–लक्ष्मण की आवाज सुनकर सीता जी चिन्तित हा उठी उन्हे लगा कि कही श्री राम सकट मे न हो ओर लक्ष्मण को पुकार रहे हो। उन्होने लक्ष्मण को जाने के लिये कहा। लक्ष्मण जी गोलाई मे रेखा खीच कर सीता जी को उस रेखा से बाहर न आने क लिए कहकर वहॉ से चल दिए। लक्ष्मण जी के बाद रावण साधु का वेष बदल कर भिक्षा मॉगने सीता जी के पास आया। जब सीता जी उसे भिक्षा देने लगी तो उसने रेखा के भीतर से भिक्षा लेने से इन्कार कर दिया ओर कहा कि यदि भिक्षा देनी हे ता रेखा से बाहर निकल कर भिक्षा दे। जब सीताजी भिक्षा देने के लिए रेखा से बाहर निकली ता रावण ने सीता जी का अपहरण कर लिया और उन्हे लेकर लका की ओर चल पडा।

श्रीराम लक्ष्मण सहित जब वापस लौटे तो सीता जी को न पाकर चिन्तित हो उठे तथा सीता जी का पता लगाने चल पडे। उनसे रास्ते मे गिद्धराज जटायू से भेट हुई जा घायलावस्था मे पडे थे। जटायू ने भगवान राम से सीताजी के अपहरण की बात बताई ओर कहा कि सीता जी का बचाने मे ही रावण ने उसे मारकर घायल किया है तथा सीता जी के साथ लका की ओर गया ह।

आगे बढने पर भगवान श्रीराम की भेट सुग्रीव हनुमान जामवन्त आदि से हुई। इसके पश्चात भगवान राम ने सुग्रीव हनुमान आदि की सहायता से लका पर विजय प्राप्त की तथा रावण का वध किया।

बनवास की अवधि तथा राक्षसो के सहार का कार्य पूरा हा चुका था। अत लका का राज्य रावण के भाई विभीषण को देकर भगवान राम सीता जी तथा लक्ष्मण जी के साथ अयाध्या वापस आए।

अयोध्या मे भगवान श्री राम के लोटने पर आनन्द ओर प्रसन्नता की लहर व्याप्त हो गई। अयोध्या वासियो की प्रसन्नता का कोई ठिकाना ही नही था। सभी उल्लास ओर उमग स भर उठे। घर–घर खुशियॉ मनाई जाने लगी।

भगवान राम ने अयोध्या का शासन सम्भाला। उनके राज्य मे प्रजा को किसी प्रकार का दु ख और शोक नही था। हर ओर समृद्धि ही समृद्धि थी। पाप का कही नामोनिशान न था। प्रजा का आनन्द अपनी चरम सीमा पर था। इसीलिए राम राज्य को आदर्श माना जाता हे। सुख आर समृद्धि का पर्याय ही राम–राज्य है। तभी तो महात्मा गॉधी ने राम–राज्य की कल्पना की थी।

हिन्दुओ के लिए रामनवमी का दिन बहुत ही पवित्र हे। यह पर्व भगवान श्रीराम का जन्म दिन होने के कारण

बडी श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। रामनवमी के दिन रामायण का गान तथा कीर्तन भजन होता है। बडी श्रद्धा के साथ लोग भगवान राम की लीला कहते सुनते है।

## रक्षा बन्धन

श्रावणी और रक्षा बन्धन दो पर्व है। एक ही दिन पडने के कारण दोनो को एक त्यौहार मान लिया जाता है। वैदिक धर्म मे स्वाध्याय और वेदो के पठन–पाठन का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान हे। वैदिक काल मे वर्षा ऋतु मे वेद पारायण का बडा महत्व माना गया है इसके लिए विशेष आयोजन किया जाता है। यह पर्व सावन की पूर्णिमा को मनाया जाता है। पहले ऋषि वन स्थलो को वर्षा ऋतु मे छोडकर बस्तियो के निकट आ जाया करते थे तथा चार माह व्यतीत करते हुए धर्मोपदेश तथा ज्ञान चर्चा करते थे। विशेष वेद पारायण का प्रारम्भ श्रावणी पूर्णिमा से होता था। इस प्रारम्भ को उपाक्रम कहा जाता हे। प्राचीन काल मे श्रावणी के दिन से ही बच्चे की शिक्षा प्रारम्भ की जाती थी। ब्राह्मण श्रावणी के दिन नये जनेऊ को धारण करते है। श्रावणी के दिन किसी तालाब नदी या कुॅये के किनारे बैठकर पुरोहित के निर्देशन मे यह उपाक्रम किया जाता है।

श्रावणी के दिन ही रक्षा बन्धन का त्योहार मनाया जाता हे। रक्षा बन्धन के दिन बहन अपने भाई को रक्षा (राखी) बॉधती है तथा पुरोहित अपने यजमानो को राखी बॉधते है।

इस पर्व के प्रचलन के सम्बन्ध मे एक पौराणिक कथा मिलती हे कि एक बार देवो और राक्षसो के युद्ध मे राक्षसो का पलडा भारी पडने लगा। तब इन्द्र बहुत ही चिन्तित हो उठे ओर देवो की जीत के लिए उपाय ढूॅढने लगे। इन्द्र की चिन्ता इन्द्राणी ने दूर की। दूसरे दिन श्रावणी थी। श्रावणी के दिन उन्होने रक्षा (कवच) अभिमन्त्रित कर इन्द्र के हाथ मे बॉधा जिससे देवताओ की विजय हुई। राखी जब बहन बॉधती है तो उसकी मर्यादा की रक्षा का भार भाई पर जाता है। इतिहास मे अनेक उदाहरण हे जिसमे राखी भेजकर भाई बनाया गया है और उसका मूल्य भाई को अपने को सकट मे डालकर भी चुकाना पडा हे। इस सम्बन्ध मे यह ऐतिहासिक घटना प्रचलित है कि महारानी कर्मवती ने हुमायू को राखी भेजी थी जिसका मूल्य हुमायूॅ ने अपने को सकट मे डालकर चुकाया था। राखी का त्यौहार बहन भाई के पवित्र स्नेह बधन का त्यौहार है।

## नाम पचमी

श्रावण शुक्ल पचमी को नाग पचमी का पर्व मनाया जाता हे। नाग पचमी को नाग देवता को दूध ओर लावा चढाया जाता है तथा उस दिन भोजपुरी भाषी क्षेत्र के कई जनपदो के गॉवो मे कढी बारा बरी और चावल बनाने की प्रथा भी है। भगवान शिव के मन्दिरो मे श्रद्धालु दर्शन–पूजन हेतु जाते है। नाग पचमी को दगल (कुश्ती) का जगह–जगह आयोजन किया जाता है और लोग कुश्ती लडते हे। गॉवो मे कुश्ती देखने के लिये जहॉ–जहॉ भी कुश्ती होती है काफी लोग इकट्ठा होते है। नाग पचमी को दगल का प्रचलन पूरे भोजपूरी भाषी क्षेत्र मे हे। नाग पचमी को नाग दर्शन शुभ माना जाता हे। अत सपेरे पेटी मे नाग लिए दर्शन कराते है तथा श्रद्धालु नाग दर्शन कर सपेरो को पैसे देते है।

# कृष्ण जन्माष्टमी

कृष्ण जन्माष्टमी का पव बडी श्रद्धा क साथ भादो माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मनाया जाता हे। स्थान–स्थान पर सामूहिक रूप से एव मन्दिरो म भगवान कृष्ण का जन्मोत्सव श्रद्धा एव आस्था के साथ मनाया जाता हे तथा झाकियॉ सजाइ जाती ह। अनेक घरो मे भी झाकियॉ सजती हे ओर भगवान कृष्ण का जन्मोत्सव मनाया जाता है। इस पव पर श्रद्धालु व्रत भी रखते हे तथा रात्रि मे १२ बजे जब भगवान कृष्ण का जन्म होता हे तो दशन कर प्रसाद खाकर व्रत तोडत हे। मिलिट्री पुलिस लाइनो तथा करागारो मे इस पर्व को मनाने की प्रथा प्रचलित हे। कीर्तन भजन का क्रम चलता हे। जब रात्रि मे १२ बजे भगवान कृष्ण के जन्म का मुहुर्त होता हे तथा पट खुलता है तो भगवान श्रीकृष्ण को झूलन मे झूलते दिखाया जाता है। पट खुलते ही भगवान श्री कृष्ण के जयघोष के साथ आरती प्रारम्भ हो जाती ह। कही–कही पर पट खुलते ही बन्दूक या बारूद की आवाज की जाती हे। आरती गायन के पश्चात दशनाथ श्रद्धालुओ की भीड उमड पडती हे। लोग दर्शन करते प्रसाद लेते और श्रद्धा भाव से भगवान के समक्ष नत मस्तक हाकर लाटते ह। कही–कही जन्माष्टी का कायक्रम कइ दिनो तक चलता रहता हे तथा इस अवसर पर अनक सास्कृतिक कायक्रमा का आयोजन होता हे। यह पर्व भगवान कृष्ण के जन्मोत्सव के रूप मे मनाया जाता हे। पृष्ठभूमि मे यह हे कि –

वसुदेव जी अपनी पत्नी देवकी तथा साले दत्यराज कस क साथ गोकुल जा रहे थे। उसी समय आकाशवाणी हुई कि – हे कस! तू जिस अपनी बहन समझ रहा हे उसका आठवॉ पुत्र तेरा सहार करेगा। यह आकाशवाणी सुनकर देत्यराज कस अपनी बहन को मार देन क लिए तलवार खीच कर उठा तभी वसुदेव ने कहा कि आप इस निर्दोष को न मारे म अपनी सभी सन्तानो को आपको दे दूँगा। उस समय कस ने वसुदेव और देवकी की यह बात स्वीकार करके कि वे अपनी सन्तानो को पेदा होते ही उसे देते रहेगे वसुदेव एव देवकी को बन्दी बनाकर मथुरा के कारागार मे बन्द कर दिया। उसी मथुरा कारागार मे भादो माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ।

भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के समय सभी कारागार के पहरेदार सो गए। जेल के द्वार खुल गये तथा आलोक व्याप्त हो उठा। शख चक्र गदा पदमधारी भगवान श्रीकृष्ण का स्वरूप देखकर वसुदेव व देवकी भगवान के चरणो पर गिर पडे। भगवान श्रीकृष्ण बाल रूप मे आ गए तथा अपने को गोकुल मे नन्द के यहॉ पहुँचाने तथा वहॉ से कन्या लाकर देत्यराज कस को दने के लिए कहा। वसुदव के हाथ से हथकडी खुल कर गिर गई। भादो की बढी जमुना नदी को पार कर जब वसुदव जी नन्द के घर पहुँच तो वहॉ नन्द का दरवाजा खुला मिला। यशोदा जी गहरी निद्रा मे निमग्न मिली तथा उनकी बगल मे सोई हुइ कन्या मिली। वसुदेव जी भगवान श्रीकृष्ण को वही सुलाकर कन्या को उठाकर चले आये। जब वसुदेव जी कारागार मे वापस चले आए तो अपने आप सभी फाटक बन्द हो गए तथा हथकडी लग गइ। कन्या के रोने की आवाज सुनकर पहरेदारो ने कस को खबर दी। कस तुरन्त ही कारागार पहुँचा ओर कन्या को मार डालने के लिए उसने उठा लिया तथा ज्यो ही कस ने कन्या को उठाकर पत्थर पर पटकना चाहा त्यो ही कन्या कस के हाथ स छूट कर आकाश मे उड गई और देवी के रूप मे प्रकट होकर बोली कि – हे कस! तुम्हारा सहार करने वाला गाकुल मे पेदा हो चुका है। यही पर भगवान कृष्ण ने पूतना तथा अकासुर बकासुर जेसे राक्षसो का वध किया। बाद मे भगवान कृष्ण ने क्रूर कस का वध किया। यही जन्माष्टमी पर्व की पृष्ठभूमि हे।

# विजय दशमी

विजय दशमी का पर्व आसुरी प्रवृत्तियो पर देवी प्रवृत्तियो की विजय का पर्व हे। आश्विन शुक्ल पक्ष दशमी को विजय–दशमी का त्यौहार भोजपुरी भाषी क्षेत्रो मे बहुत ही उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस पर्व के अवसर पर जगह–जगह राम लीलाएँ पहले से ही प्रारम्भ हो जाती हे। सामान्य तोर पर आश्विन सुदी प्रथमा को राम लीलाएँ प्रारम्भ होती है लेकिन कुछ स्थानो पर ओर पहले स आरम्भ कर देते हे। बडे शहरो तथा कस्बो मे विभिन्न जगहो की मडलियॉ बुलाई जाती हे। कस्बो ओर शहरो मे प्राय राम लीला कमेटियॉ बनी रहती है जो राम लीलाएँ सम्पादित कराने का कार्य करती ह। ग्रामीण अँचलो म या छोटी जगहो पर स्थानीय लोग मिलकर रामलीला करते है। इन स्थानो पर रामलीला मे भाग लेने वाले सभी पात्र स्थानीय या आस–पास के होते है। जहॉ स्थानीय लोग ही राम लीला करते हे वहॉ राम लीला के पात्रो की पोशाके भी रखते है जो जन सहयोग से खरीदी जाती है। जहॉ भी लीलाएँ होती हे उस देखने के लिये पास पडोस के गॉवो क्षेत्रो के लोग जाते है। कही–कही की लीलाएँ क्षेत्र मे बहुत प्रसिद्ध होती ह वहॉ लीला देखने के लिए भारी भीड होती हे। विजयदशमी के दिन रावण वध की लीला होती है जो दिन मे प्रारम्भ हो जाती हे। यह लीला खुले मेदान मे होती है। रावण वध की लीला के पश्चात् रावण का पुतला जो बडे आकार का बना होता है फूँका जाता है तथा भगवान राम की आरती होती है जिसे श्रद्धा से श्रद्धालु करत है। जहॉ रावण वध की लीला होती हे वहॉ देखने के लिये अपार जन समूह उमड पडता है। रामनगर की रामलीला बहुत ही प्रसिद्ध हे। राम नगर पूर्व काशी नरेश की राजधानी है। यहॉ की लीला एक माह तक होती हे तथा यह लीला पूर्व काशी नरेश ही कराते हे।

विजय दशमी के दिन रग बिरगे वस्त्रो मे बच्चो महिलाओ युवको तथा वृद्धो का समूह उमड पडता हे। गुब्बारो झुनझुनो (बॉस की पतली खमचियो स बने बाजे) को बजाते किलकते हॅसते चलते बच्चो का समूह देखते ही बनता है। हर किसी के चेहरे पर मुस्कान उमग थिरकती रहती है। मिठाइयो की दुकानो का हाल तो बस मत पूछिए सजी–सॅवरी भीड से भरी रहती हे।

हाथ मे शीशे लिए (दर्पण) नाई अपने यजमानो को दिखाता हे। जिसे मुॅह दिखाई कहा जाता हे ओर यजमान उन्हे मुॅह दिखाई मे कुछ न कुछ देता है जिसे त्योहारी कहा जाता हे। विजयदशमी पर नाई द्वारा मुॅह दर्पण मे दिखलाने की प्रथा भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे प्रचलित है। विजय दशमी असत्य पर सत्य की विजय का पर्व है। विजय दशमी का पर्व अत्याचार के विरूद्ध सघर्ष करने की प्रेरणा का दिन हे। विजय दशमी के दिन नीलकण्ठ (पक्षी) का दर्शन बहुत शुभ माना जाता है।

# दीपावली

दीपावली का पर्व कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की अमावस्या को मनाया जाता है। यह दीपो का पर्व है। इस पर्व का आरम्भ धनतेरस (त्रयोदशी) से ही प्रारम्भ हो जाता हे। घरो को सफाई लिपाई पोताई प्रारम्भ होती हे। कस्बो एव शहरो मे बहुत से लोग सफाई लिपाई पोताई का कार्य अपनी सुविधानुसार पहले भी शुरू कर देते है। गॉवो मे कच्चे मकानो की लिपाई–पोताई पीली मिट्टी एव गाबर से होती है। बहुत घरो मे चूना से भी पुताई करते है। बाजारो मे लाई गट्टे लावा (धान का) खिलानो की तरह रग बिरगी चीनी की बनी मिठाइयो पटाखो

मिट्टी से बने विभिन्न प्रकार के खिलौनो तथा लक्ष्मी गणेश की मिट्टी की बनी तरह–तरह की कलात्मक मूर्तियो बर्तनो आभूषणो की दुकानो मे रौनक छा जाती है तथा बाजारो मे काफी चहल–पहल बढ जाती है। बच्चो का उत्साह बहुत बढ जाता हे। भगवान धनवन्तरि कार्तिक के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को ही अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे इसलिए धन तेरस को धनवन्तरि त्रयोदशी भी कहते है। नया धन प्राप्त करने के उद्देश्य से धनतेरस को सोने चॉदी के आभूषण तथा बर्तन खरीदने की प्रथा हे।

धनतेरस के दिन बतनो की दुकानो पर भारी भीड रहती हे। प्राय हिन्दू गृहस्थ इस दिन नया बर्तन खरीदते है। नये कपडो को पहनने की भी प्रथा है।

धनतेरस के दूसरे दिन चतुर्दशी को घर तथा आस–पास के सारे कूडे–करकट को साफ करते है तथा कूडा फेकने के स्थान पर दीप जलाते है। इसको छोटकी दिवाली भी कहा जाता है और दीप को यम का दिया कहते है। इस प्रकार अपने घरो तथा आस–पास से मृत्यु के देवता यम की विदाई होती हे। दूसरे दिन दीपावली मनाई जाती है। सफाई आदि कार्यो से निवृत्त होकर गृहणियॉ घरो के कार्य मे जुटती है और घरो मे पकवान बनते हे। दिन मे महिलाऍ रूई की बत्तियॉ पूरने लगती हे। सॉझ ढलते ही दीपोत्सव प्रारम्भ हो जाता है। देवालयो मे घी के दीये लेकर जाना प्रारम्भ हो जाता है। खलिहानो कुँओ तालाबो के भीटो पर भी दीप जलाकर रखते है। बैलो गायो ओर भेसो को नहला–धुला कर उनके सीगो मे तेल लगाते है। घरो मे दीपो की ज्योति बिखरने लगती है। बच्चो के आनन्द का कोई ठिकाना ही नही रहता। खिलोने मिठाइयॉ लेते और प्रफुल्लित मन से थिरकते रहते हे। लक्ष्मी–गणेश का पूजन प्रारम्भ हो जाता हे। रात की चहल–पहल बढने लगती है। सडको गलियो खोरियो मे पटाखे छूटने लगते है। बच्चो का उत्साह ओर उल्लास देखते ही बनता है। सारा वातावरण दीपो की रोशनी से आलोकित हो उठता है। शहरो–कस्बो मे रगीन बल्बो की झालरे दमकने लगती है। बिजली के दूधिया प्रकाश मे दिन सा लगने लगता हे। प्रकाश हर ओर प्रकाश तम का कलुष न जाने कहॉ मुँह छुपा कर दुबक जाता है।

दीपावली लक्ष्मी के आगमन का पर्व हे। दीपावली की रात ब्रह्म मुहूर्त मे गृहणियो द्वारा सूप पीट–पीट कर बजाते दूर गॉव के बाहर दरिद्दर खेदने की प्रथा हे। दरिद्दर खेदने का अर्थ घर की दरिद्रता को बाहर खदेडना है। दीवाली की रात मे टोटका करने की प्रथा हे। दीपावली की रात तात्रिक अपने मत्रो को भी सिद्ध करते है।

दीपावली के दिन भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे सूरन की सब्जी खाने की प्रथा हे। यह सभी प्रथाऍ हमारे भीतर के अन्धकार दरिद्रता को दूर कर जीवन मे आलोक भरने के लिये है तथा सुखमय स्वस्थ एव सम्पन्न जीवन व्यतीत करने के लिये दिशा निर्देश देती है।

दीपावली के दिन घर का कोई भाग नही छूटता जिसमे दीप न जल रहा हो। यह अन्धकार पर प्रकाश की विजय का पर्व है। दीपावली के दिन कही–कही मिठाइयो की दुकान पर कोडी फेक कर (एक प्रकार का जुआ) दॉव लगाते है और जीतने पर मिठाइयॉ लेते हे। इस जुये मे एक व्यक्ति कौडी फेकता है और लोग कौडी की सख्या बोलकर दॉव लगाते है। कोडी गिरने पर चित्त या पट होती हे। उसी को गिन कर हार जीत का निर्णय होता है। न जाने किन कारणो से दीपावली के दिन जुआ खेलने की प्रथा चल पडी है। यद्यपि धीरे–धीरे यह कम हो रही है पर समाप्त नही हुई है। व्यापारी लक्ष्मी–गणेश की पूजा के साथ–साथ नये बही–खातो की भी

जा करते है। पूजन का कार्य पुरोहित सम्पन्न कराते है। घरा म भी पुरोहित से पूजन कराया जाता ह या घर ा मुखिया स्वय पूजन कर लेता है। दीपावली के दिन लक्ष्मी का आगमन होता ह। अत लक्ष्मी पूजन क बाद ात मे जागने की प्रथा भी भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे है।

दीपावली के बाद अन्न कूट का दिन आता है। अन्नकूट का गावर्धन पूजा होती है। इसके पश्चात क दिन ाया दूज का दिन होता है। भेया दूज भाई–बहन के मिलन का दिन है। इस दिन भाइ बहन क पास जाता ' और बहन उसे मिठाई खिलाती ह तथा भाई उस धन सामग्री उपहार मे देता ह।

भाई बहन के पवित्र प्रेम को यह पर्व आलोकित करता है। इस प्रकार दीपावली अपने साथ कई पव लिए आती है। लावा बताशा मिठाई लाई आदि दीपावली के आवश्यक खाद्य ह। ऑख मे काजल लगाने की भी प्रथा है। दीपावली का पर्व जीवन को प्रकाशित करते हुए नवचेतना जागृत करता है। दीपावली पव के सम्बन्ध म कइ अवधारणाऐं है। ब्रह्म पुराण के अनुसार कार्तिक अमावस्या को अर्धरात्रि मे जगत जननी मॉ लक्ष्मी सदगृहस्थो के घरो मे विचरण करती है इसलिये पूरी शुद्धता एव पवित्रता के साथ पूरी सज–धज के साथ दीप जलाकर दीपावली मनाई जाती हे जिससे मॉ लक्ष्मी प्रसन्न हाकर स्थायी रूप स घर म निवास करे।

## दूसरी मान्यता

भगवान राम–रावण का वध कर लका विजय क पश्चात जब अयाध्या आये तो उनका राज तिलक दीपावली के दिन ही हुआ था ओर अयोध्या वासिया ने उस दिन घी के दीय जलाकर खुशियॉ मनाई थी ओर इसी उपलक्ष्य मे यह पर्व मनाया जाता हे।

## मकर सक्रान्ति

इस पर्व को खिचडी भी कहते हे। इस पर्व का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान हे। गॉवो मे मकर सक्रान्ति की तैयारी पहले से ही प्रारम्भ हो जाती हे। चूडा (चिउडा) कूटने का कार्य प्रारम्भ हो जाता हे। गॉवो मे तिलवा ढूढी आदि बनना प्रारम्भ हो जाता है। आज के दिन स्नान का महत्व बहुत बढ जाता हे।

श्रद्धालु तीर्थ स्थलो पर पवित्र नदियो मे स्नान करने जाते ह। प्रयाग काशी मे गगा स्नान का बहुत महत्व माना जाता है। जो लोग नही जा पाते वे धर पर ही स्नान करत हे। पुरोहित को खिचडी (चावल दाल नमक घी आदि) दक्षिणा भेजी जाती हे। लडकियो की ससुराल मे भी मायके से खिचडी (चिउडा तिलवा वस्त्र दनिक उपयोग के सामान आदि) भेजी जाती हे।

## शिवरात्रि

फाल्गुन कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को महाशिवरात्रि का पर्व मनाया जाता हे। यह हिन्दुओ का बहुत ही महत्वपूर्ण पर्व है। शिवरात्रि के दिन श्रद्धालुओ की भीड शिव मन्दिरो मे दर्शनार्थ भरी रहती है।

शिवरात्रि के दिन भोजपुरी भाषी क्षत्र क अन्तगत अनक स्थानो पर मेला लगता हे। शायद ही भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे काइ जनपद हा जहा शिवरात्रि क दिन कोइ मला न लगता हा।

शिवरात्रि के सम्बन्ध म एक पाराणिक कथा क उल्लख मिलता ह जिसमे शिवरात्रि के दिन अनजाने मे हुए व्रत एव पूजा के फल का वणन ह।

शिवरात्रि के दिन एक बहलिया शिकार करन क लिए बेल के पेड पर चढ कर शिकार की प्रतीक्षा कर रहा था किन्तु काइ पशु नही आया आर वह बिना खाये–पिये पेड पर बेठा रहा तथा बेल की पत्तियॉ तोड–ताड कर गिराता रहा। नीच शिवलिग था अत बल की जा पत्तियॉ वह तोड–ताड कर गिराता था शिवलिग पर पडती रही। इस प्रकार पत्तिया से शिवलिग ढक गया। सयाग से कोई पशु नही आया। परिणाम स्वरूप पूरा दिन प्रतीक्षा मे बीत गया आर रात हा आइ। इस प्रकार अनजान मे बिना खाये–पिये रहने से व्रत भी हो गया ओर बल की पत्तियॉ तोड–तोड कर जो वह नीचे गिराता रहा भगवान शिव को चढती रही। रात मे एक हिरनी निकली वह प्रसन्न हो उठा लेकिन जब उसन हिरनी का मारना चाहा तो हिरनी ने कहा कि वह गभवती हे उसे न मारे। हिरनी न कहा कि वह बच्चे का जन्म देकर आयगी तब वह उस मार। बहलिया का हृदय बदल रहा था वह मान गया। हिरनी चली गइ ओर बहलिया पुन बल पत्र तोड–तोड कर नीचे गिराता समय गुजारता रहा। बेल पत्र भगवान शिव को अर्पित हा रहे थे।

इधर धीरे–धीर बहलिया का हृदय बदल रहा था। रात्रि क तीसर पहर मे हिरनी आइ उसके साथ उसक छोटे–छाटे बच्चे भी थे आर हिरन भी। हिरनी न कहा कि यह हिरन मरे बिना नही रह सकता फिर ये बच्चे केसे रहेगे? अत तुम सभी को अपने वाण स मार डालो।

हिरनी की यह बात सुनकर बहेलिया का मन द्रवित हा उठा। उसे अपने कम से घृणा हो उठी। अनजाने मे हुए व्रत ओर बेल पत्र अर्पण का प्रभाव हुआ। उसन हिरनी का न मारन का निर्णय कर लिया था। जीव दया से भगवान शिव भी बहेलिए पर प्रसन्न हुए। इस अनजान म किय व्रत एव बेलपत्र अर्पण से बहेलिए को शिव की कृपा मिली तथा शिव लोक प्राप्त हुआ इसलिए हिन्दू बडी ही श्रद्धा एव आस्था के साथ शिवरात्रि का पर्व मनाते है।

## होली

होली का त्योहार मनान की प्रथा बहुत ही प्राचीन ह। यह उमग आर उल्लास का त्याहार हे। इसे रगोत्सव भी कहा जाता हे। होली का त्योहार फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा का मनाया जाता ह। इस त्याहार की तेयारी बसन्त पचमी से ही प्रारम्भ हो जाती ह। बसन्त पचमी क दिन तथा कही -कही शिवरात्रि को हालिका स्थापित हाती हे। रेड के पेड या डाल को पुरोहित के निर्देशन म गाड दिया जाता ह फिर उसी दिन होलिका मे लकडी पत्ते आदि लडको द्वारा डालना प्रारम्भ हो जाता हे। कभी–कभी ता बाहर रखी लकडी के आवश्यक सामान चारपाइ चोकी आदि भी लडके उठाकर होलिका म डाल आते ह। हाली बोझने की प्रथा हर जगह ह। वही पर रात मे लुकारी भी भॉजते ह। जलती लुकारी को अपन शरीर क आगे पीछे घुमा कर भॉजते हे। होलिका दहन पुरोहित के धार्मिक अनुष्ठान या निर्देश के बाद हाता ह। गॉव के लोग पहुँच कर जलती होलिका के फेरे लेते हुए घर से अपने साथ लाई सामग्रियॉ उपली (गाइठा) जा आर तीसी क पाधे वरनी जो गोबर से बनाई जाती हे शरीर मे

मली गई उबटन की मैल आदि डालते ह। दूसर दिन प्रात (प्रतिपदा का धूल–वन्दन) धूल उडात ही आरम्भ हो जाती है रगो की बौछारे। गाती बजाती नाचती मस्त टोलियॉ एक दूसरे पर रग डालती निकल पडती ह। घूम–घूम कर रग डाला जाता ह।

घरो मे गुझिया मालपुआ आदि नाना प्रकार क पकवान उस दिन बनते है। एक दूसरे के यहॉ जात रग खेलते और अबीर लगाते तथा गुझिया मालपुआ खात–पीत ह।

होली के दिन ठण्डई ओर भॉग पीने की भी प्रथा है। सारा वातावरण उमग से भरा रहता है। छाटे–बडे गरीब–अमीर का कोई भेदभाव नही रह जाता। जवान–बुड्ढे का कही काइ भेदभाव नही रहता। फागुन क दिनो के लिए यह कहावत प्रचलित है कि फागुन मे बाबा देवर लागे।

आपसी सदभाव का जीता–जागता यह पर्व उस दिन समानता स्नह ओर प्रेम का ऐसा वातावरण उत्पन्न कर देता है कि सारी कलुषता न जाने कहॉ मुँह छुपा लती ह। एक ऐसा माहाल बन्ता ह कि सभी एक रग मे सराबोर हो एकता के सूत्र मे बॅध जाते हे। रग कही–कही दिन भर ता कही–कही दोपहर तक चलता हे। गॉव म लडके लडकियॉ महिलाऍ बूढे कोई भी नही बच पाता। रग के बाद चलता हे अबीर का दोर। एक दूसरे का अबीर लगाकर गले मिलते हे। शहरो ओर कस्बो मे भी यह क्रम चलता हे। शाम ढलने के बाद चोपाल सजने लगती हे। ढोल मजीरा झॉझ जोडी डफ मृदग बजने लगते हे। फाग चैता तथा ठुमरी के गीतो का स्वर गूँजने लगता है। पान सुपारी लवग इलाइची तस्तरियो मे रखी रहती हे। अबीर ओर गुलाल का तो दिन ही होता हे। सारा वातावरण रसमय बना रहता हे।

होली त्योहार मनाने की प्रथा के सम्बध मे एक मत यह भी हे कि नव सम्वत तथा बसन्त ऋतु के आगमन के स्वागत मे यह पर्व मनाया जाता ह लकिन दूसरा मत यह भी हे कि हिरण्यकश्यपु एक बहुत ही अहकारी बलशाली किन्तु क्रूर तथा निरकुश राजा था। उसन तपस्या के बल पर अपरिमित शक्ति प्राप्त कर ली थी। वह भगवान विष्णु के प्रति वेर–भाव रखता था तथा उनका नाम भी नही सुनना चाहता था। प्रह्लाद हिरण्यकश्यपु के पुत्र थे ओर भगवान विष्णु क परम भक्त थ। यह हिरण्यकश्यपु को बर्दाश्त नही था कि उनका पुत्र भगवान विष्णु का भक्त रहे। प्रह्लाद जब हिरण्यकश्यपु क समझाने–बुझाने तथा डराने–धमकाने से नही माने ओर भगवान विष्णु के भक्त बने रहे ता उसन प्रह्लाद को मरवा डालने के कई प्रयास किए किन्तु हर बार भगवान की कृपा प्रह्लाद को बचा लेती थी ओर प्रह्लाद का कुछ भी नही बिगडता था। तब उसने अपनी बहन होलिका से प्रह्लाद को मार डालन क लिए सहायता मॉगी। हालिका का यह वरदान प्राप्त था कि वह आग से नही जलेगी। होलिका प्रह्लाद को लेकर लकडी के बड ढर पर बठ गइ आर लकडी के ढेर मे आग लगा दी गई। लेकिन प्रह्लाद का कुछ नही बिगडा। आग स जलना तो दूर भगवान की कृपा से ऑच तक न लगी और होलिका जल कर राख हो गई। इसलिए धर्म ओर सत्य को विजय के उपलक्ष्य मे यह महान पर्व मनाया जाता हे।

## ईद

ईद का त्योहार मुस्लिम बन्धुओ के लिए अपार प्रसन्नता स्नेह तथा बन्धुत्व का त्योहार है। ईदुल–फित्र को ही ईद कहा जाता है। ईदुल फित्र अरबी भाषा का शब्द हे। इसका अथ प्रसन्नता या खुशी है। ईद की तैयारियॉ

**पहले से ही प्रारम्भ** हो जाती हे। घरो की सफाइ लिपाई–पोताई तथा नये वस्त्रो के सिलवाने का कार्य पहले **ही प्रारम्भ कर दिया** जाता है। यह त्योहार खुशियो की सोगात लेकर आता हे।

ईद का त्योहार एक महीना रोजा रखने के बाद आता हे। इस्लाम मजहब मे नमाज रोजा जकात और हज बहुत आवश्यक माना जाता ह। रमजान के महीने म रोजा (दिन का उपवास) रखना जकात (गरीबो को दान) जरूरी माना जाता हे। रोजा सामूहिक आराधना ह। अत समाप्ति पर मिल–जुल कर एक सामूहिक उत्सव के रूप मे ईद को मनाया जाता हे।

मुहम्मद साहब ने रमजान का पूरा महीना एकान्त मे भूखे–प्यासे रहकर खुदा की इबादत मे बिताया था। इसलिए भी एक माह रोजा रखकर खुदा की इबादत की जाती हे तथा जकात की रकम मुसलमान परिवारो मे निकाली जाती हे जो परोपकार के कार्यो या गरीबो को दान दन मे खच की जाती है। रमजान का महीना खत्म होने पर शव्वाल का महीना आता है ओर इसी शव्वाल महीने की पहली तारीख को ईद का त्याहार आता है। ईद की नमाज ईदगाह पर सामूहिक रूप से पढी जाती है।

ईद के दिन मन प्रफुल्ल हो उठता हे। नय–नये साफ–सुथरे कपडो मे बच्चे बूढे नोजवान सभी इदगाह पर जाकर नमाज अदा करते हे। नमाज अदा करने के बाद ईद का मिलन प्रारम्भ हो जाता हे। एक दूसरे से गले मिलते खुशियो से झूमते घरो को लोटते हे। हर मुस्लिम के घर म सेवई आदि विविध पकवान बनाए जाते है। एक दूसरे के घर जाकर मिलने तथा सेवई आदि खाने क पश्चात प्रसन्न चित्त घर लोटते हे। खुशी के इस त्यौहार पर बडे–छोटे धनी–गरीब का अन्तर समाप्त हो जाता ह। आज के दिन किसी से किसी की कटुता नही रहती है। ईद मेल–मिलाप का महान पर्व है।

ये मेले एव त्योहार हमारी सास्कृतिक परम्परा के ध्वजवाहक तथा अतीत की स्मृतियॉ ह। हर त्योहार हर्षोल्लास लिए आता है। धर्म प्रधान ॲचल हाने के कारण भोजपुरी भाषी क्षेत्र का हर दिन अपनी विशिष्टता लिए आता है। कुछ व्रत भी है जो त्यौहार का रूप ग्रहण कर लेते ह। इनमे से दो व्रतो का उल्लेख कर रहा हूॅ। **जीवित पुत्रिका** (जियुतिया) तथा सूर्य्यषष्ठी (छठ) का व्रत भाजपुरी भाषी ॲचल मे प्रचलित हे। यह दोनो व्रत कठिन है तथा सूर्य्य उपासना के व्रत हे। जीवित पुत्रिका व्रत इतना अधिक प्रचलित हे कि भोजपुरी भाषी क्षेत्र कोई व्यक्ति यदि किसी बडे सकट से बचता हे तो कहा जाता ह कि तोहार माई खडी जियुतिया पूजले होईहै कि बच गइलऽ। इस व्रत मे महिलाएॅ व्रत रखती ह तथा सूय्य दव की उपासना करती हे। यह व्रत पुत्र के कल्याण एव आयु के लिए किया जाता हे। रात्रि मे सामूहिक रूप से निर्धारित स्थान पर महिलाएॅ बैठकर कहानी कहती और सुनती है। भोजपुरी ॲचल मे यह व्रत अपना बहुत ही महत्व रखता है।

**छठ का व्रत** भी सूर्य्य उपासना का कठिन व्रत है। इस व्रत मे महिलाएँ सामूहिक रूप से किसी तालाब नदी या जहॉ पानी का साधन हो एकत्रित होकर अलग–अलग सूर्य्य देव की मूर्ति बनाकर आराधना करती है। यह व्रत बलिया देवरिया गोरखपुर आदि जनपदो मे बहुत ही प्रचलित हे। इस व्रत मे पुआ पूरी ठेकुआ (इसे बनाने के लिए लकडी का सॉचा होता हे) नया सूप दोरी उपलब्ध सभी फल कोहडा सिघाडा भिगोया चना गुड लावा आदि अनेक प्रकार की सामग्री की व्यवस्था पूजन के लिए करनी पडती हे।

**यह दोनो व्रत भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे पर्व की तरह मनाये जाते है।**

**मुहर्रम** शोक का दिन हे। इस्लामी सम्वत के अनुसार मुहर्रम महीने मे ही हजरत इमाम हुसैन अपने साथियो के साथ कर्वला–युद्ध मे शहीद हुए थे। उन्ही की याद मे मुहर्रम मनाया जाता है। हजरत इमाम हुसैन इस्लाम धर्म कै प्रवर्तक पैगम्बर मुहम्मद साहब क नाती थे। यजीद वहॉ का शासक था और बहुत ही अहकारी था। इमाम हुसैन नेक एव सच्चे इन्सान थे तथा मदीना मे रहकर लोगो को नेक सलाह देते तथा सच्चाई के रास्ते पर चलने को प्रेरित करते थे जिसके कारण उनकी लोकप्रियता बहुत ही बढने लगी तथा लोग उन्हे अपना गुरू मानने लगे। हजरत इमाम हुसैन की बढती हुई लोकप्रियता से यजीद की चिन्ता बढने लगी। यजीद अहकारी अत्याचारी तथा निरकुश शासक था। यजीद ने इमाम हुसैन को अपने अधीन करना चाहा किन्तु इमाम हुसैन अत्याचार का सामना करने के लिए कटिबद्ध थे तथा सच्चाई के रास्ते से तनिक भी हटने के लिए तैयार नही थे। अन्त मे कर्बला का युद्ध हुआ। इमाम हुसैन कर्बला की जग मे अपने साथियो के साथ भूखे–प्यासे रहकर यजीद की फौज से युद्ध करते हुये शहीद हुए। उन्ही की याद मे **मुहर्रम** मनाया जाता ह ओर **ताजिया** निकाली जाती है। भोजपुरी क्षेत्र मे कइ स्थानो पर **हिन्दू भी ताजिया निकालते है**। भोजपुग अँचल मे जहॉ भी मुसलमान है मुहग्म का त्यौहार मनाया जाता है।

**बैशाखी** का पर्व भोजपुरी अँचल मे जहॉ भी सिक्ख धर्म को मानने वाले है वहॉ बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। **गुरू गोविन्द सिह जी ने बैशाखी पर्व** के दिन ही आनन्दपुर साहब के विशेष आयोजन मे अपने शिष्यो की परीक्षा लेकर पॉच शिष्यो को चुना था तथा उन्हे पच पियारा कहा था गुरू गोविन्द सिह जी ने सिक्ख धर्म को निखार कर खालसा नाम दिया था। इसलिए बैशाखी पर्व को खालसा दिवस के रूप मे मनाया जाता है। बैशाखी का पर्व बैशाख महीने मे पहले ही दिन पडता है।

भोजपुरी भाषी क्षेत्र मे ईसाई धर्म का मानने वाले भी हे तथा क्रिसमस (बडा दिन) का त्यौहार धूम–धाम से मनाते है। यह त्यौहार **महात्मा ईसा मसीह** के जन्म दिवस के रूप मे २५ दिसम्बर को मनाया जाता है। गिरिजाघरो मे पूजन अर्चन ईसाइयो द्वारा किया जाता है। यह दिन ईसाइयो के लिए उल्लास एव उत्साह का दिन है। एक दूसरे से मिलते है तथा हर ईसाइ के घर मे स्वादिष्ट भोजन बनता है तथा सम्बन्धियो एव मित्रो को भोजन या नाश्ते पर आमन्त्रित भी किया जाता हे।

भोजपुरी भाषी क्षेत्र के मेले एव त्योहारो की श्रृखला मे से कुछ प्रसिद्ध एव प्रचलित मेले एव त्यौहारो का उल्लेख किया गया है। भोजपुरी भाषी क्षेत्र का हर दिन धार्मिक एव आध्यात्मिक अवधारणाओ को अपने मे सजोए है। ये मेले ओर त्योहार लोक जीवन की विरासत हे तथा सास्कृतिक एव सामाजिक एकता के आधार स्तम्भ है तथा इन मेलो तथा त्यौहारो की परम्पराओ ने सबको एक सूत्र मे बॉध रक्खा है। लोक पर्व लोक जीवन की व्याख्या है। हमारी भौतिक परम्पराऍ आध्यात्मिक एव धार्मिक परम्पराओ का अनुसरण करती हे। यह हमारी सस्कृति की विशेषता है जो मेलो एव त्याहारो के रूप मे स्पष्ट उजागर होती है।

हमारा अस्तित्व–बोध हमारी परम्पराऍ तथा हमारी धार्मिक एव आध्यात्मिक तथा ऐतिहासिक अवधारणाऍ हमारे मेलो एव त्यौहारो की पृष्ठभूमि है।

सम्पूर्ण भोजपुरी भाषी क्षेत्र के मेलो मे अदभुत समानता मिलती है। एक जैसा रहन–सहन दुकाने एक जैसी परम्पराऍ कुछ मेलो मे कुछ विशेषताऍ भी मिलती हे। जेसे बासी (बस्ती) के मेले मे खाझा (मिठाई) बक्सा

और घोडो की बहार होती है। सोनभद्र जनपद के मेलो मे गुड मे पागी गई तेल की बनी जिलेबियॉ। गोरखपुर तरकुलहा देवी के स्थल पर चेत्र रामनवमी से लगने वाल मेले मे गर्म मसालो की दुकाने आकर्षण का केन्द्र रहती है। बलिया मे ददरी का मेला पशुओ के मामले मे विख्यात हे। काशी मे लोलार्क छठ के मेले की नान खटाई प्रसिद्ध हे तो क्वार मेले मे रेवडी अपना विशेष स्थान रखती हे।

गोरखपुर जनपद के अन्तर्गत बॉसगॉव मे क्वार के नवरात्र मे अष्टमी एव नवमी को दो दिन का मेला लगता है। यहॉ मॉ दुर्गा का मन्दिर है। बॉसगॉव से करीब दस किलोमीटर पश्चिम (पूर्व) उनवल स्टेट है। इस मेले की विशेषता है कि यहॉ मॉ दुर्गा को बेलपत्र मे अपना रक्त पोछ कर श्रीनेत्र वशीय क्षत्रीय चढाते है। इस सन्दर्भ मे बॉसगॉव के श्रीनेत्र वशी श्री सत्य प्रकाश सिह ने बताया कि अविवाहित अपने मस्तक का रक्त चढाता हे तथा विवाहित व्यक्ति दोनो जग्घो दोनो भुजाओ बॉहो तथा सीने के दोनो ओर एव मस्तक का रक्त बेलपत्र मे लगा कर मॉ दुर्गा को चढाता है। इसे वे अष्टाग (अर्थात आठ अगो का) रक्त चढाना कहते है। उनवल के राजा श्रीनगर गढवाल से आये थे। श्रीनेत्र वशी अधिक सख्या मे बासी (सिद्धार्थ नगर) सतासी (देवरिया) तथा (पूर्व उनवल राज्य) बॉसगॉव आदि स्थानो पर रहते हे। उन्होने बताया कि बहुत पहले परिवार के बडे लडके की बलि दी जाती थी। इसके बाद पशुओ की बलि प्रारम्भ हुई फिर वहॉ एक सन्त आ गए और उन्होने पशु बलि का विरोध किया। इसके पश्चात स्वय का रक्त चढाने की परम्परा प्रारम्भ हुई यह परम्परा आज तक चली आ रही है।

श्रीनेत्र वशीयो मे शिशु को मस्तक का रक्त चढ जाने के बाद ही नया कपडा पहनाया जाता है। जिस शिशु का क्वार माह के नवमी तक जन्म हो जाता हे उसके मस्तक का रक्त देवी को बेलपत्र मे पोछ कर चढाते है और यदि क्वार नवमी के बाद जन्म होता हे तो उसे क्वार मास के नवरात्र आने पर रक्त चढाने के पश्चात ही नये वस्त्र पहनाने की परम्परा हे।

बॉसगॉव जीतने के लिए उनके पूर्वजो ने यह मनोती मानी थी कि बॉसगॉव को जीतने पर वे देवी को अपने परिवार के बडे लडके की बलि देते रहेगे। इसी मनोती को श्रीनेत्र वशी पूरी करने के लिए अपना रक्त देवी पर चढाते है।

श्री सत्यप्रकाश सिह बताते है कि अष्टमी–नवमी को गॉव तथा अगल–बगल के नाई छुरा लेकर खडे रहते है और रक्त चढाने वाले लोगो के अगो को चीरते हे। चीरने से जो रक्त बहता है उसे बेलपत्र मे पोछ–पोछ कर मॉ दुर्गा को चढाते है।

ददरी मेला पर बात चली। श्री दीपनरायन चौबे ग्राम मासुमपुर जिला बलिया के रहने वाले है तथा अवकाश प्राप्त शिक्षक है। बातचीत के दौरान श्री चौबे अतीत की स्मृतियो मे डूब जाते है। वे कहते है– पहले ददरी के मेले मे जाते समय समूह मे पैदल या बैलगाडियो से जाती महिलाओ के गीतो के स्वर मुखरित होकर वातावरण मे गूॅज उठते थे। अब तो जमाना बदल गया हे। यातायात के साधन और समय के परिवर्तन ने वह वातावरण ही बदल दिया है। लोकगीतो का स्थान फिल्मी गाने लेते जा रहे है। श्री चौबे कहते है कि लोकगीतो का सग्रह होना बहुत आवश्यक है।

अभी तो श्रम करने पर लोक गीतो को मूल रूप मे प्राप्त किया जा सकता है। अन्यथा जिस तरह से लोक धुनो एव लोकगीतो का फिल्मीकरण हो रहा है इसे देखते हुए कुछ समय के पश्चात लोक गीतो के मूलरूप मे ही परिवर्तन हो जाने की सम्भावना स्पष्ट होती जा रही हे।

भोजपुरी भाषी ॲचल का हर दिन एक व्रत का दिन हे तथा हमारी धार्मिक एव आध्यात्मिक अवधारणाओ को अपने मे सजोये है।



राम सरोवर (चुनार जनपद मिर्जापुर)



दुर्गा जी के मन्दिर का बाहरी भाग
(यह मन्दिर चुनार नगर से करीब २ किलोमीटर की दूरी पर है)



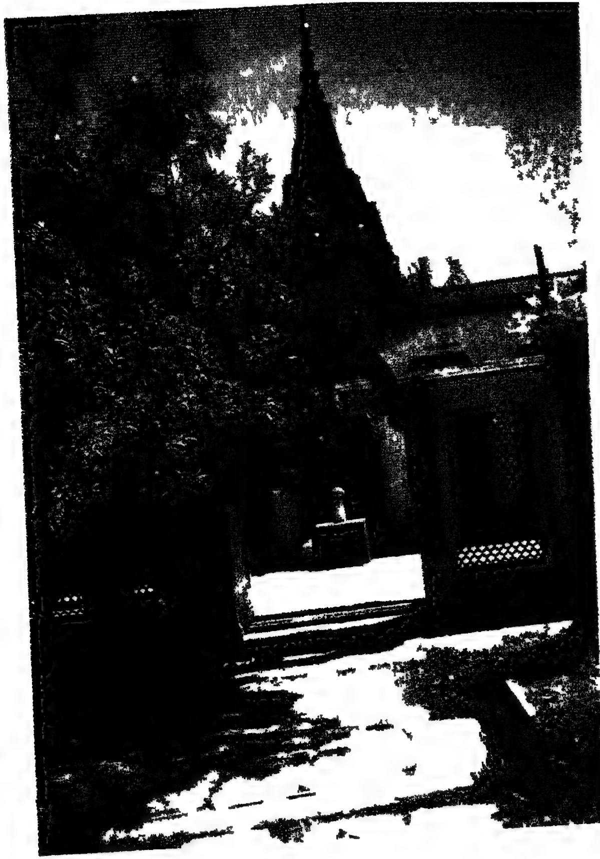
प्रसिद्ध मुस्लिम सत हजरत कासिम सुलेमानी
की दरगाह
(चुनार जनपद मिर्जापुर)



दुर्गा जी का मन्दिर
(रामनगर वाराणसी)



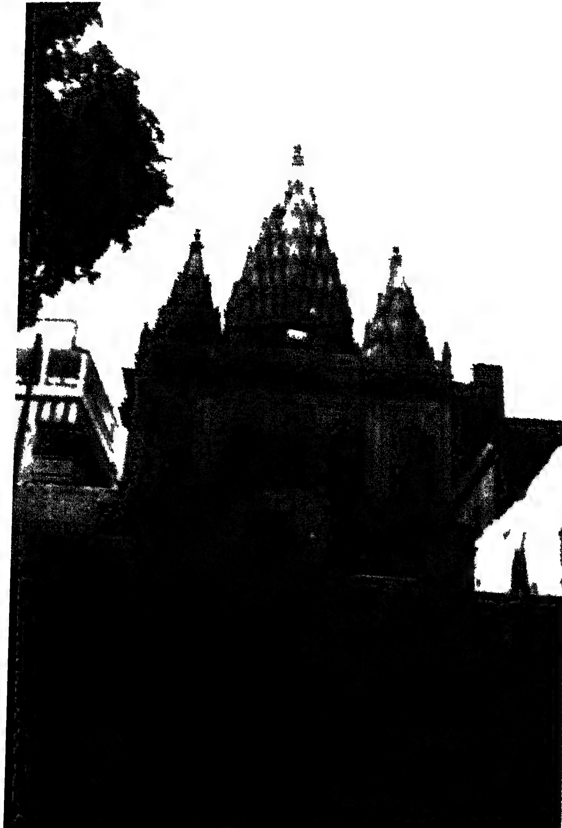
लोरिक पत्थर
(भारकुण्डी जनपद सोनभद्र)



भगवान जगन्नाथ जी
(अस्सी वाराणसी) के मन्दिर का बाहरी भाग



लक्ष्मी कुण्ड (वाराणसी)



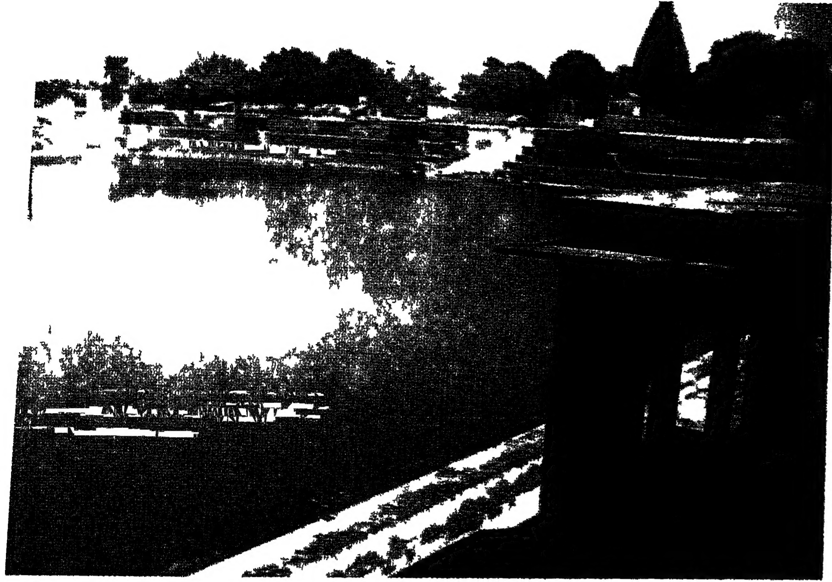
अस्सी–घाट (वाराणसी)



दुर्गा जी का मन्दिर
(अहरौरा जनपद मिर्जापुर)



अयोध्या स्थल जहाँ रामजन्म की लीला होती है
(रामनगर वाराणसी)



सरोवर (रामनगर वाराणसी)
लीला स्थल

राम नगर मे भिन्न–भिन्न
स्थानो पर भिन्न–भिन्न
राम लीलाएँ होती है।
यह चित्र भी लीला स्थल का है





भगवान शिव का मन्दि
(बरैला जनपद सोनभ
बसन्त पचमी एव शिवरा
दिन यहाँ मेला लगता



सोनभद्र जनपद के अन्तर्गत मेले का एक दृश्य



नटुआ नृत्य के कलाकार



नटुआ नाटय के कलाकार



जनेऊ सस्कार का दृश्य



मेले का एक दृश्य

मुद्रक  शिवम आर्ट्स 211 निशातगंज लखनऊ –226 007 दूरभाष (0522) 386 389